रांची, सोमवार
13.01.2025
वर्ष : 10, अंक : 44 पृष्ठ : 12
मूल्य : दो रूपए

बिहान भारत

रांची से प्रकाशित हिन्दी दैनिक
खबरे हमारी, विश्वास आपका

website : www.bihanbharat.org bihanbharat@gmail.com @bihan_bharat Bihan Bharat RNI NO - JHAHIN/2015/73988

संक्षिप्त खबरें

राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने विवेकानंद की जयंती पर किया नमन

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने विवेकानंद की जयंती पर उन्हें शत-शत नमन किया है। राज्यपाल ने सोशल मीडिया एक्स पर रविवार को लिखा है कि सभी देशवासियों को राष्ट्रीय युवा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। साथ ही कहा है कि स्वामी विवेकानंद के आदर्श हमें सिखाते हैं कि हर युवा के भीतर बदलाव लाने की शक्ति है। आइए, इस दिन पर हम अपनी जिम्मेदारियों को समझें और एक समृद्ध, शक्तिशाली और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का संकल्प लें। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया एक्स पर रविवार को लिखा है कि देश की समृद्ध संस्कृति को विश्व पटल पर ले जाने वाले, युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद की जयंती पर शत-शत नमन। आज राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर सभी को बधाई, शुभकामनाएं और जोहार।

राष्ट्रपति ने देशवासियों को दी लोहड़ी, मकर संक्रांति, पोंगल की शुभकामनाएं

नई दिल्ली : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने देशवासियों को लोहड़ी, मकर संक्रांति, पोंगल और माघ बिहु पर्वों की शुभकामनाएं दी हैं। राष्ट्रपति सचिवालय ने रविवार को यहां बताया कि राष्ट्रपति ने देशवासियों के नाम अपने शुभकामना संदेश में कहा है, लोहड़ी, मकर संक्रांति, पोंगल और माघ बिहु पर्वों के शुभ अवसर पर मैं देश और विदेश में रह रहे सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं। उन्होंने कहा, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक ये पर्व अपने साथ उत्साह और उमंग लेकर आते हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग रूप में मनाए जाने वाले ये त्योहार प्रकृति से प्रेम और जुड़ाव का संदेश देते हैं। इन त्योहारों पर लोगों में पवित्र नदियों में स्नान करने और दान-पुण्य करने की भी मान्यता है।

दो दिवसीय यात्रा पर स्पेन जाएंगे विदेश मंत्री

नई दिल्ली। विदेश मंत्री डॉ एस. जयशंकर 13-14 जनवरी को स्पेन के आधिकारिक दौरे पर रहेंगे। विदेश मंत्री के तौर पर यह उनकी पहली स्पेन यात्रा होगी। विदेश मंत्रालय के अनुसार यात्रा के दौरान, विदेश मंत्री स्पेन के नेतृत्व से मिलेंगे और अपने समकक्ष विदेश मंत्री मैनुअल अल्बेरेस के साथ द्विपक्षीय संबंधों और आपसी हितों के क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों के पूरे दायरे पर चर्चा करेंगे।

देश के नौजवानों के साथ मेरा परम मित्र वाला नाता: विकसित भारत युवा नेता संवाद में बोले पीएम मोदी

युवा जोखिम लें और देश में ऐतिहासिक परिवर्तन लाएं

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत के बड़े लक्ष्यों को हासिल करना देश के हर नागरिक का कर्तव्य बताते हुए देश के युवाओं का आह्वान किया है कि वे आराम वाली जिन्दगी से बाहर निकल कर जोखिम लें और खुद के साथ देश को भी सफलता की नई ऊंचाइयों पर ले जाकर कर इतिहास के सबसे बड़े परिवर्तन के उत्प्रेरक एवं लाभार्थी बनें।

श्री मोदी ने राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में रविवार को यहां भारत मंडपम में विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025 को संबोधित करते हुए यह आह्वान किया। उन्होंने देश भर से आये तीन हजार प्रतिभावान युवाओं से संवाद करते हुए उनको अर्थव्यवस्था के बढ़ने के साथ ही पैदा होने वाले कई अवसरों के बारे में प्रोत्साहित किया और कहा कि उनकी पीढ़ी न केवल

देश के इतिहास में सबसे बड़ा परिवर्तन लाएगी, बल्कि वे इसके सबसे बड़े लाभार्थी भी होंगे। प्रधानमंत्री ने युवाओं को सलाह दी कि वे कम्फर्ट जोन से बचें, जोखिम उठाएं और अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलें, जैसा कि यंग लीडर्स डायलॉग के प्रतिभागियों ने प्रदर्शित किया। उन्होंने कहा कि जीवन का यह मंत्र उन्हें सफलता की नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा।

प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में भारत के युवाओं की जीवंत ऊर्जा पर प्रकाश डाला और कहा कि पूरा देश स्वामी विवेकानंद को याद कर रहा है और उन्हें श्रद्धांजलि दे रहा है, जिन्हें देश के युवाओं पर बहुत भरोसा था। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद का मानना था कि उनके शिष्य युवा पीढ़ी से आएंगे, जो शेरों की तरह हर समस्या का समाधान करेंगे। उन्होंने कहा कि उन्हें स्वामी जी और उनकी मान्यताओं पर पूरा भरोसा है, जैसे स्वामी जी को युवाओं पर भरोसा था। उन्होंने आगे कहा कि उन्हें स्वामी जी पर पूरा भरोसा है, खासकर युवाओं के बारे में उनके दृष्टिकोण पर। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि यदि स्वामी विवेकानंद आज हमारे बीच होते, तो 21वीं सदी के युवाओं की जागृत शक्ति और सक्रिय प्रयासों को देखकर उनमें नया आत्मविश्वास भर जाता।

भारत मंडपम में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन के आयोजन को याद करते हुए श्री मोदी ने कहा कि डेढ़ वर्ष पहले जहां विश्व के नेता दुनिया के भविष्य पर चर्चा करने के लिए एक ही स्थान पर थे, जबकि आज वहीं पर भारत के युवा भारत के अगले 25 वर्षों के लिए रोडमैप तैयार कर रहे हैं। कुछ महीने पहले अपने आवास पर युवा एथलीटों से मिलने के बारे में एक किस्सा साझा करते हुए, उन्होंने बताया कि एक एथलीट ने कहा था, दुनिया के लिए, आप प्रधानमंत्री हो सकते हैं, लेकिन हमारे लिए, आप परम मित्र हैं। प्रधानमंत्री ने भारत के युवाओं के साथ अपनी दोस्ती के बंधन पर जोर देते हुए कहा कि दोस्ती की सबसे मजबूत कड़ी विश्वास है। उन्होंने युवाओं पर अपना असीम विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि भारत के युवाओं की क्षमता जल्द ही भारत को एक विकसित राष्ट्र बना देगी। उन्होंने स्वीकार किया कि लक्ष्य महत्वपूर्ण होने के बावजूद असंभव नहीं है, उन्होंने विरोधियों के विचारों को खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि प्रगति के पहिये को चलाने वाले लाखों युवाओं के सामूहिक प्रयासों से राष्ट्र निस्संदेह अपने लक्ष्य तक पहुँच जाएगा।

श्री मोदी ने कहा, ह्लइतिहास हमें सिखाता है और प्रेरित करता है।ह्व उन्होंने कुछ वैश्विक उदाहरणों का उल्लेख करते हुए कहा कि अमेरिका में 1930 के दशक के आर्थिक संकट के दौरान अमेरिकियों ने न्यू डील को चुना और न केवल संकट पर काबू पाया बल्कि अपने विकास को भी गति दी। उन्होंने सिंगापुर का भी उल्लेख किया, जिसने बुनियादी जीवन संकटों का सामना किया, लेकिन अनुशासन और सामूहिक प्रयास के माध्यम से वैश्विक वित्तीय और व्यापार केंद्र में तब्दील हो गया।

रांची में महिला हॉकी लीग का हुआ आगाज, कल्पना सोरेन ने किया ट्रॉफी का किया अनावरण

ओडिशा वॉरियर्स ने 4-0 से जीता मैच

बिभा संवाददाता

रांची: महिला हीरो हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) 2024-25 रविवार को रांची में ओडिशा वॉरियर्स ने दिल्ली एसजी पाइपर्स को 4-0 से हरा दिया। ओडिशा वॉरियर्स के लिए यिब्बी जानसन (16 और 37), बलजीत कौर (42) और फ्रीके मोएस (43) ने स्कोर किया।

महिला हॉकी इंडिया लीग एक शानदार समारोह के साथ शुरू हुई जहां कलाकारों ने झारखंड की संस्कृति का प्रदर्शन किया। झारखंड सरकार की विधान सभा सदस्य और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने चार महिला एचआईएल टीमों के कप्तानों के साथ महिला हॉकी इंडिया लीग ट्रॉफी का अनावरण किया।

पहला क्वार्टर सावधानी भरा रहा क्योंकि पहली बार खेल रही दोनों टीमों को लय में आने में समय लगा। पाइपर्स और वॉरियर्स के पास कुछ आधे मौके थे लेकिन वे फिनिशिंग टच पाने में असफल रहे क्योंकि पहला क्वार्टर गोलरहित समाप्त हुआ।

महिला हॉकी इंडिया लीग का पहला गोल करने का गौरव यिब्बी जानसन को मिला। 16वें मिनट में वॉरियर्स को पेनल्टी कॉर्नर मिला। खेल के सर्वश्रेष्ठ ड्रैग फ्लिकरों में से एक, जेनसन ने कोई गलती नहीं की और गोलकीपर एलोडी पिकार्ड को छकाते हुए अपनी ड्रैग फ्लिक को उड़ा दिया।

पाइपर्स ने 21वें मिनट में अपना पहला पेनल्टी कॉर्नर हासिल किया लेकिन इंजेक्शन सही तरीके से नहीं फंसा। पाइपर्स ने तुरंत एक और पेनल्टी कॉर्नर हासिल करके अच्छा प्रदर्शन किया। दीपिका की ड्रैग फ्लिक को वॉरियर्स डिफेंस ने संभाला।

पांच मिनट बाद वॉरियर्स 3-0 से आगे हो गए। बलजीत कौर ने गोललाइन पर ड्रिबल किया और गेंद नेहा गोयल की ओर खेली। गेंद नेहा की स्टिक से टकराकर वापस बलजीत के पास पहुंची और नेहा ने उसे पिकार्ड के पास पहुंचा दिया। वॉरियर्स अंतिम क्वार्टर में अपनी बढ़त का बचाव करने से संतुष्ट थे क्योंकि पाइपर्स ने सांत्वना लक्ष्य हासिल करने की कोशिश की थी। 49वें मिनट में कप्तान नेहा को पीला कार्ड मिलने के बाद वॉरियर्स के पास पांच मिनट तक 10 खिलाड़ी ही थे। दुर्भाग्यवश, पाइपर्स अपने संख्यात्मक लाभ का लाभ उठाने में असमर्थ रहे।

पाइपर्स ने अंतिम दो मिनटों में कुछ पेनल्टी कॉर्नर जीते लेकिन वॉरियर्स की रक्षापंक्ति ने उनसे प्रभावी ढंग से निपटते हुए 4-0 से व्यापक जीत हासिल की।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में दो महिला सहित पांच नक्सली मुठभेड़ में ढेर

एजेंसी

बीजापुर। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में मद्देड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत बंदेपारा-कोरंजेड नेशनल पार्क एरिया में रविवार सुबह सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में दो महिला नक्सली सहित कुल पांच वदीर्धारी नक्सलियों को जवानों ने ढेर कर दिया है। सर्चिंग में दो महिला नक्सली सहित कुल पांच वदीर्धारी नक्सलियों के शव बरामद हुए हैं। मारे गये नक्सलियों के शव के साथ मुठभेड़ स्थल से एक एसएलआर, एक 12 बोर की बंदूक, दो सिगल शॉट रायफल, एक बीजीएल लांचर, एक देशी गन भरमार व विस्फोटक पदार्थ, नक्सली साहित्य व नक्सल सामाग्री बरामद हुई है।

बस्तर आईजी सुंदरराज पी. ने मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए बताया कि बंदेपारा-कोरंजेड़ के जंगल में सुरक्षा बल और नक्सलियों के बीच रुक रुक कर मुठभेड़ होती रही जो शाम 3-4 बजे तक चली। मुठभेड़ के बाद पर मौके से सर्चिंग के दौरान दो महिला एवं तीन पुरुष कुल पांच वदीर्धारी नक्सलियों के शव बरामद हुआ है। मारे गये नक्सलियों की पहचान की जा रही है। विस्तृत ब्यौरे की प्रतीक्षा है।

पुलिस के अनुसार जिले के नेशनल पार्क के जंगल में नक्सिलयों की उपस्थिति की आसूचना पर सुरक्षा बल की टीम नक्सल विरोधी सर्च अभियान में 11 जनवरी को अभियान पर रवाना हुई थी। सर्चिंग अभियान के दौरान नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के जवानों को अपनी ओर बढ़ता देखकर फायरिंग शुरू कर दी। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में दो महिला एवं तीन पुरुष कुल पांच वदीर्धारी नक्सलियों को ढेर कर उनके शव बरामद कर लिए गये हैं। मारे गये नक्सलियों की पहचान की जा रही है।

शरद पंवार-उद्धव ठाकरे को जनता ने उनकी जगह दिखा दी : शाह

मुंबई। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने रविवार को अहिल्यानगर जिले के शिर्डी में कहा कि महाराष्ट्र की जनता ने शरद पंवार और उद्धव ठाकरे को उनकी जगह दिखा दी है। उन्होंने कहा कि शरद पंवार 1978 से छल-कपट की राजनीति कर रहे थे, उनकी राजनीति को जनता ने 20 फीट गहरे गड्ढे में दफना दिया और 2019 में बालासाहब ठाकरे के विचारों के साथ विश्वासघात करने और धोखाधड़ी की राजनीति करने वाले उद्धव ठाकरे को भी सबक सिखाया है।

महाकुंभ 2025 : प्रयागराज में आज से दिखेगा आध्यात्मिकता और संस्कृति का ऐतिहासिक संगम

एजेंसी

नई दिल्ली: प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक आयोजित होने वाला महाकुंभ एक ऐतिहासिक और अद्वितीय आयोजन होगा, जो न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर और आध्यात्मिकता का उत्सव है, बल्कि यह दुनिया भर से 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करेगा। महाकुंभ का यह पवित्र संगम भारतीय एकता, भक्ति और संस्कृति की अभूतपूर्व मिसाल पेश करेगा। यह आयोजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक अनुभव होगा, जो भारत की समृद्ध आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करेगा।

महाकुंभ का आयोजन गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती के संगम पर होता है, जिसे त्रिवेणी संगम के नाम से जाना जाता है। यह स्थल धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है, और शाही स्नान के दौरान लाखों श्रद्धालु यहाँ अपने पापों को धोने और मुक्ति की प्राप्ति के लिए स्नान करते हैं। ज्योतिषीय रूप से यह आयोजन सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति के दुर्लभ संरेखण पर आधारित होता है, जो भारतीय आस्था और ज्ञान की गहराई को दशार्ता है। इस दौरान करोड़ों लोग आस्था के साथ यहाँ आते हैं, और यह भारत की सांस्कृतिक धारा को पुनः जीवित करता है।

सुरक्षा बलों ने तीर से लैस छह आईईडी किया बरामद

बिभास वादद्दाता

पश्चिमी सिंहभूम। पश्चिमी सिंहभूम (चाईबासा) के टोन्टो थाना क्षेत्र में सुरक्षाबलों ने सर्च अभियान के दौरान तीर से लैस छह आईईडी बरामद किया है। सभी आईईडी को बम निरोधक दस्ता की मदद से मौके पर ही नष्ट कर दिया गया।

एसपी आशुतोष शेखर ने रविवार को बताया कि टोन्टो थाना क्षेत्र के तुम्बाहाका और बगान गुलगुलदा के बीच में जंगली क्षेत्र में सुरक्षा

बलों को लक्षित करने के उद्देश्य से नक्सलियों ने छह तीर में आईईडी लगा रखे थे। आईईडी को बरामद कर सुरक्षा के दृष्टिकोण से उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता के सहायता से नष्ट किया गया। एसपी ने बताया कि प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के खिलाफ 10 दिसंबर, 2023 से लगातार अभियान चलाया जा रहा है। नक्सलियों के सफाये तक अभियान जारी रहेगा।

कांग्रेस ने की युवा उड़ान योजना की घोषणा,

युवाओं को हर महीने 8500 रुपये देने का एलान

एजेंसी

नई दिल्ली : कांग्रेस ने रविवार को युवा उड़ान योजना नाम से दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर अपनी तीसरी गारंटी की घोषणा की और इस योजना के तहत सत्ता में आने पर यहां के बेरोजगार युवक-युवतियों को हर महीने 8500 रुपये देने का एलान किया।

कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव एवं राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने पार्टी के प्रदेश मुख्यालय राजीव भवन में इस योजना की घोषणा करते हुए कहा, आज महान विचारक स्वामी विवेकानंद जी की जयंती है, जो युवाओं के प्रेरणा स्रोत थे। दिल्ली में युवाओं के भविष्य पर प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार का कोई ध्यान

नहीं है। दिल्ली में इतिहास गवाह है कि यहां जब-जब कांग्रेस की सरकार रही है, तब-तब यहां के विकास को पूरे देश में लोग अग्रिम मानते आए हैं। दिल्ली में जिस जिम्मेदारी से हम वादा करेंगे, उसी जिम्मेदारी के साथ उसे पूरा भी करेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि 05 फरवरी को जब दिल्ली के लोग मतदान करेंगे, तो इतिहास को याद करेंगे कि किसने क्या कहा और क्या किया।

उन्होंने कहा कि दिल्ली का विधानसभा चुनाव बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन चुनावों में हमारे कार्यकर्ता और नेता अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। उन्होंने कहा, हमने जनता के बीच जाकर उनकी समस्याएं सुनीं, फिर उन समस्याओं पर विशेषज्ञों से चर्चा करने के बाद अब गारंटी पेश कर रहे हैं। उन्होंने कहा, पूरे देश में युवा परेशान हैं। दिल्ली में भी युवाओं की हालत चिंताजनक है, लेकिन केंद्र और प्रदेश सरकार ने युवाओं पर ध्यान नहीं दिया। आम आदमी पार्टी (आप) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने एक-दूसरे पर सिर्फ आरोप लगाए, खुद के वादे पूरे नहीं किए और जनता को भूल गई, लेकिन कांग्रेस अपनी जिम्मेदारी समझती है। इसलिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ हम गारंटी पेश कर रहे हैं, क्योंकि जनता जानती है कि हम जो कहते हैं, वो कर दिखाते हैं।

उन्होंने कहा, दिल्ली में रहने वाले हमारे युवा और शिक्षित साथियों को संबल देना सरकार का दायित्व है। अगर युवा हतोत्साहित होगा तो ये देश के लिए अच्छी बात नहीं है। इसलिए हमने निर्णय लिया है कि दिल्ली में कांग्रेस सरकार बनने के बाद शिक्षित और बेरोजगार युवाओं को एक साल की अप्रेंटिसशिप और 8,500 रुपए की आर्थिक मदद दी जाएगी। हमारी कोशिश रहेगी कि इस एक साल में युवा अपनी कार्यकुशलता को बढ़ाकर उसी क्षेत्र में आगे बढ़ें, जिसकी उन्होंने प्रशिक्षण लिया है।

उन्होंने कहा, रोजगार का निर्माण करना किसी भी सरकार की पहली प्राथमिकता होनी चाहिए, लेकिन केंद्र और प्रदेश सरकार दोनों ने बेरोजगारों को नजरअंदाज किया। पढ़े-लिखे बच्चों को रोजगार देना चाहिए था, लेकिन मौका मिलने के बाद भी दोनों सरकारें काम नहीं कर पाईं। कांग्रेस ने हमेशा जनता के लिए काम किया। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) के क्षेत्र में कांग्रेस सरकार ने बेहतरीन काम किया, जिसमें मैं खुद मंत्री था। आज दिल्ली में राजनीति सिर्फ आरोप-प्रत्यारोप की रह गई है, लेकिन अब लोग बेहतर विकल्प चाहते हैं। हमें उम्मीद है कि आने वाले चुनावों में जनता कांग्रेस पार्टी को चुनेगी और सरकार बनाएगी।

वहीं प्रदेश कांग्रेस समिति के अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने कहा, मने बहुत सोझ-समझकर युवा उड़ान योजना पेश की है। ये योजना उन शिक्षित युवाओं के लिए है, जो बेरोजगारी की मार झेल रहे हैं। हम युवा उड़ान योजना के जरिए युवाओं को एक दिशा देना चाहते हैं। इस योजना के तहत पंजीकृत शिक्षित बेरोजगार युवाओं को हर महीने 8,500 रुपए मिलेंगे। हमारी सरकार की कोशिश रहेगी कि युवाओं का कौशल विकास भी हो, ताकि कौशल के मुताबिक उन्हें रोजगार मिल सके।

उत्तराखंड में बस खाई में गिरने से पांच की मौत, 17 घायल

एजेंसी

देहरादून: उत्तराखंड के पौड़ी जनपद अंतर्गत, श्रीनगर क्षेत्र में, दहल चौरी के पास रविवार को एक यात्री बस अनियंत्रित होकर गहरी खाई में जा गिरी जिससे अभी तक पांच यात्रियों की मृत्यु हो चुकी है जबकि 17 अन्य घायल हैं।

इस घटना के आठ घायलों को हायर सेंटर श्रीनगर और शेष नौ घायल पौड़ी जिला अस्पताल में एडमिट किये गए है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने हादसे पर शोक व्यक्त किया है।

राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के सेनानायक (कमांडेंट) अर्पण यदुवंशी ने बताया कि आज पौड़ी जनपद के जिला नियंत्रण कक्ष से सूचित किया गया कि दहलचोरी के पास एक बस अनियंत्रित होकर लगभग 100 मीटर खाई में दुर्घटनाग्रस्त हो गयी है। इस पर तत्काल एसडीआरएफ की श्रीनगर व सतपुली पोस्ट से रेस्क्यू

टीमें घटनास्थल के लिए रवाना हुई। घटनास्थल पहुंच कर, रेस्क्यू टीम ने दुर्घटनाग्रस्त गढ़वाल बस ऑपरेटर यूनियन की बस संख्या यूके 12पीबी 0177 में फंसे यात्रियों को निकालने का कार्य शुरू किया। श्री यदुवंशी के अनुसार, बस पौड़ी से दहलचोरी जा रही थी। जिसमें कुल 22 यात्री सवार थे। पौड़ी पुलिस व स्थानीय लोगों द्वारा मौके पर रेस्क्यू ऑपरेशन चलाते हुए कुल 18 घायलों को निकालकर अस्पताल भिजवाया गया, जबकि घटना में चार लोगों की मौके पर ही मृत्यु हो गयी थी। उन्होंने बताया कि अस्पताल में एक अन्य घायल की मृत्यु होने के कारण मृतकों की संख्य पांच हो गई है।

संक्षिप्त खबरें

जेसीआई ने कम्युनिटी प्रोजेक्ट प्रयास के तहत किया कंबल वितरण

रांची(बिभा): जेसीआई रांची ने 12 जनवरी को पिठौरिया चौक के पास स्थित एक गाँव में जरुरतमंद लोगों के बीच कंबल वितरण कर 2025 का अपना पहला कम्युनिटी प्रोजेक्ट ₹प्रयास₹ सफलतापूर्वक पूरा किया। कार्यक्रम के दौरान बढ़ती ठंड को ध्यान में रखते हुए कंबल वितरण के साथ-साथ बच्चों के लिए खिलौने, मिठाइयाँ, चॉकलेट और सभी के लिए खिचड़ी का वितरण किया गया। इस पूरे कार्यक्रम में ढोल-नगाड़ों और उत्साह का माहौल बना रहा, जो सभी के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। जेसीआई रांची के नव-निर्वाचित अध्यक्ष जेसी प्रतीक जैन और उनकी टीम की इस सराहनीय पहल ने कार्यक्रम को सफल बनाया। इस अवसर पर जेसी विक्रम चौधरी, अमित अग्रवाल, केशव बजाज, ऋषभ छापरिया, अनीश जैन, समर्थ बजाज, अक्षत अग्रवाल, सृजन हेतमसरिया, अभिषेक जैन, कौशल अग्रवाल, मयंक चौधरी, अभिनव गर्ग, केतुल भाई पटेल, और अभ्युदय मोदी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन जेसी सौरभ जालान, यश गुप्ता, और रीतेश जैन ने कुशलता से किया।

श्री श्याम मित्र मंडल बैठक संपन्न

रांची(बिभा) : झारखंड राज्य राजधानी राँची की सुप्रसिद्ध धार्मिक व सामाजिक संस्था श्री श्याम मित्र मंडल की साधारण सभा स्थानिय हरमु रोड़ स्थित श्री श्याम मंदिर के मंडल सभागार में संपन्न हुआ. संस्था के अध्यक्ष सुरेश सरावगी ने साधारण सभा में आये हुए समस्त सम्मानित महिला पुरुष सदस्यों का स्वागत किया तदोउपरांत सभा कि कार्यवाही अगले विषय में प्रवेश करते हुए संस्था के महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया ने गत साधारण सभा 30.7.2023 की कार्यवाही पढ़कर सुनाया, जिसे सर्वसम्मति से संपुष्टि किया गया. वित्त वर्ष 2024-25 के अंन्केशक के लिये सर्वसम्मति से पुन्ह संजय अग्रवाल को मंनोनित किया गया. मंडल के चुनाव हेतु साधारण सभा मे उपस्थित कई गनमान्य सदस्यों ने सुझाव व प्रस्ताव दिया, जिसमें मुख्य रूप से चुनाव पदाधिकारी की नियुक्ति एवं तदोउपरांत दिशा निर्देशन में चुनाव संपन्न हो. काफी वाद विवाद के पश्चात संस्था अध्यक्ष सुरेश सरावगी ने ज्यदातर सदस्यों की सुझाव व विचार को सुनते हुए अध्यक्ष के आदेश देते हुए कहा कि मंडल का चुनाव संस्था के संवैधानिक अधिकार के तहत ही होगा ,आज की साधारण सभा समाप्त की घोषणा कर सभा समाप्त किया. आज की आम सभा में मुख्य रूप से अध्यक्ष सुरेश सरावगी महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया पूर्व राज्यसभा सदस्य अजय मारू राजकुमार केडिया उपाध्यक्ष प्रदीप राजगढ़िया उपाध्यक्ष श्रवण ढानढनिया मंत्री श्याम सुंदर शर्मा कोषाध्यक्ष पंकज गाड़ोदिया राजीव रंजन मित्तल स्नेह पोद्दार गोपाल मुरारका अशोक लाडिया अनिल ननोर्ली राजेश कतारुका संजय सराफ मनोज बजाज कविता मित्तल रमा सरावगी अन्नपूर्णा सरावगी मनोज चौधरी ओम प्रकाश छावनीका एवं अनेक सदस्य उपस्थित हुए। यह जानकारी मंडल के मंत्री गौरव अग्रवाल मोनू ने दी।

राकेश सिंह बने विधायक प्रतिनिधि

रांची(बिभा) : काँके विधानसभा क्षेत्र के विधायक सुरेश बैठा ने कांग्रेस पार्टी के समर्पित और कर्मठ कार्यकर्ता राकेश सिंह को आई एवं ई-गवर्ननेंस विभाग के लिए विधायक प्रतिनिधि नियुक्त किया है। यह नियुक्ति उनके 18 वर्षों से कांग्रेस पार्टी के प्रति निष्ठा, सक्रियता और 2024 के झारखंड विधानसभा चुनाव में काँके विधानसभा की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मान्यता देने के लिए की गई है। राकेश सिंह की नियुक्ति पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए झारखण्ड प्रदेश युवा कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष कुमार रोशन ने कहा यह हमारे क्षेत्र के लिए गर्व का क्षण है। मैं विश्वास करता हूँ कि राकेश सिंह जी अपनी नई जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाकर क्षेत्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करेंगे। राकेश सिंह के विधायक प्रतिनिधि बनने पर युवा कार्यकताओं में खुशी की लहर है ।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने का साहित्योदय संकल्प

रांची (बिभा): विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय साहित्य कला संस्कृति न्यास साहित्योदय के बैनर तले ऑनलाइन राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थापक अध्यक्ष पंकज प्रियम ने हिन्दी के विकास हेतु साहित्योदय के कार्यों दशार्ते हुए कहा कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु एक व्यापक अभियान चलाया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन बिंदु प्रसाद रिद्धिमा ने किया जबकि अध्यक्षता सुनीता श्रीवास्तव साबू ने किया। करीब डेढ़ घण्टे तक चले कार्यक्रम में रांची से रश्मि सिंह, पुष्पा पाण्डेय, ऋतुराज वर्षा, नंदिनी प्रणय, सीमा सिन्हा मैत्री, डॉ आकांक्षा चौधरी, डॉ विनय कुमार वर्मा जादूगर, धनबाद से डॉ सुदेश चुघ, छतीसगढ़ से अनिता मंदिलवार, चंडीगढ़ से गणेश दत्त बजाज और जयपुर से डॉ कंचना सक्सेना ने हिन्दी की वर्त्तमान स्थिति पर अपनी कविताओं के माध्यम से गहन चिंतन करते हुए राष्ट्रभाषा बनाने का संकल्प लिया। सभी को हिंदी सेवी सम्मान से सम्मानित किया गया। गौरतलब है कि साहित्योदय पिछले कई वर्षों से हिन्दी के विकास हेतु निरंतर प्रयासरत है और सैकड़ों आयोजन कर चुका है। हिन्दी भाषा बोली के साथ-साथ राष्ट्राचेतना, भारतीय सहित्य, सभ्यता, कला और प्राचीनतम संस्कृति के उत्थान में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। खासकर नवोदित कलमकार और घरेलू महिला रचनाकारों के लिए साहित्योदय किसी वरदान से कम नहीं है। अबतक 3 हजार से अधिक लोगों को वैश्विक मंच प्रदान कर चुका है और पूरे विश्व में हिन्दी साहित्य का प्रसार कर रहा है।

अपने लक्ष्य का निर्धारण तय करें युवा : डॉ अजीत कुमार

विवेकानंद व्यक्ति नहीं पहचान हैं : डॉ अर्चना दुबे

बिभा संवाददाता

रांची : रांची विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना(एन एस एस) इकाई के तत्वावधान में स्वामी विवेकानंद जी की 163 वां जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाते हुए ₹ विकसित भारत के निर्माण में स्वामी विवेकानंद के विचार₹ विषय पर संगोष्ठी एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन आर यू के स्कूल ऑफ मास कम्युनिकेशन विभाग के सभागार में मानविकी संकाय के अध्यक्ष डॉ अर्चना दुबे की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ स्वामी विवेकानंद के चित्र पर अतिथियों एवं एन एस एस के स्वयंसेवकों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर यू के कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा ने अपने संबोधन में कहा कि अपने लक्ष्य का निर्धारण प्रत्येक युवा को निश्चित करनी चाहिए जो स्वामी जी के विचारों में भी परिलक्षित होती है। उन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा एवं गुरु शिष्य परंपरा का उदाहरण देते हुए कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने भाषा, संस्कृति एवं संस्कार अपनाते हुए आगे बढ़े।उन्होंने कहा कि विवेकानंद के विचारों में विकसित भारत की संकल्पना दिखाई पड़ती है एवं प्रत्येक युवा इनके विचारों को आत्मसात करते हुए विकसित भारत के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दें।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में मानविकी संकायाध्यक्ष डॉ अर्चना दुबे ने कहा कि स्वामी जी सिर्फ एक व्यक्ति नही अपितु भारत के लिए वैश्विक पहचान है तथा उनके आध्यात्मिक , वेदांत, कर्मयोग एवं दर्शन को हमेशा स्मरण रखते हुए सभी को विकसित भारत की दिशा में अग्रसर होना चाहिए।

स्वागत भाषण एन एस एस के कार्यक्रम समन्वयक डॉ ब्रजेश कुमार ने दिया।

कार्यक्रम का सफल संचालन एन एस एस का टीम लीडर अतुल कुमार ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन मास कॉम के प्राध्यापक डॉ मनोज कुमार शर्मा ने किया। कार्यक्रम को आर एल एस वाई महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विष्णु चरण महतो , डॉ रणधीर कुमार ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में एन एस एस के टीम लीडर क्रमशः अंकित, कनिष्क, रौनक, रिकेष, क्षणिका, नैंसी, शिवांगी, उदय, अजहर, रिया,नाज, अमित, अदनान, नीरज, अनुष्का, अनिशा, अनुपमा, रानी , हर्षिता , सुमन आदि का उल्लेखनीय योगदान रहा। कार्यक्रम में 16 महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय विभागों से कुल 150 से ज्यादा एन एस एस के स्वयंसेवक उपस्थित रहें।

खिजरी विधायक ने झारखंड आंदोलनकारी स्व. करमू महतो के नाम की पत्थलगड़ी

बिभा संवाददाता

रांची /नामकुम : विश्व युवा दिवस के अवसर पर खिजरी विधायक सह कांग्रेस विधायक दल के उप नेता राजेश कच्छप के कर कमलों से करमु महतो चौक, टाटी सिलवे (बैंक के पास) झारखंड आंदोलनकारी स्व. करमू महतो के नाम की पत्थलगड़ी की गई। उन्होंने कहा कि स्व. करमु महतो झारखंड आंदोलनकारी थे, उनके सम्मान में गत वर्ष इस चौक का नाम रखा गया था और आज झारखंडी परंपरा के अनुसार पत्थलगड़ी की गई। झारखंड आंदोलनकारियों के सम्मान के लिए वे शुरू से प्रयासरत रहे हैं और भविष्य में भी सम्मानित करने का कार्य करते रहेंगे। मौके पर जिला कांग्रेस कमिटी की महासचिव अर्चना मिश्रा, प्रखंड अध्यक्ष विजय टोप्पो, जेएमएम नेता मुकेश महतो, झारखण्ड आंदोलन कारी अमर कुमार महतो चतरा ग्राम प्रधान किस्टो कुजूर, महिलौंग मुखिया संदीप तिर्की, टाटी पूर्वी मुखिया कृष्णा पाहन, आजसू नेता काशीनाथ महतो, जितेंद्र सिंह, अजित महतो, स्टेट रैफरी सरोज नाथ महतो, डा. पंकज मिश्रा, चैतू तिर्की, सहदेव महतो, राम किशुन लोहरा, नीरज प्रमाणिक एवं भारी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

रश्मि प्रकाश बनी राजद की प्रदेश महिला अध्यक्ष

बिभा संवाददाता

रांची। राजद के प्रदेश अध्यक्ष संजय सिंह यादव ने रविवार को पार्टी मुख्यालय रांची में चतरा विधानसभा से राजद प्रत्याशी रही रश्मि प्रकाश को नियुक्ति पत्र देकर प्रदेश महिला अध्यक्ष मनोनीत किया है । इस दौरान राजद महासचिव सह मीडिया प्रभारी कैलाश यादव भी मौजूद थे ।

मौके पर मौजूद प्रदेश राजद महासचिव सह मीडिया प्रभारी कैलाश यादव ने बताया कि रश्मि प्रकाश अत्यंत जनप्रिय युवा नेत्री है। वह झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री सत्यानंद भोक्ता की बहु है । यादव ने बताया कि रश्मि प्रकाश एक होनहार शिक्षित, कर्मठ, संघर्षशील एवं प्रखर वक्ता के रूप में जानी जाती है । इनके कुशल और प्रखर कार्यशैली से प्रभावित होकर राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने विगत विधानसभा चुनाव में इन्हें चतरा विधानसभा का प्रत्याशी बनाया था। जो लोजपा उम्मीदवार जनार्दन पासवान से काफी कम वोटो से पराजित हुई ।

यादव ने बताया कि रश्मि प्रकाश के प्रदेश महिला अध्यक्ष नियुक्त होने पर राजद नेता सरकार में श्रम और उद्योग मंत्री संजय प्रसाद यादव, राजद विधायक दल के नेता सुरेश पासवान, विधायक नरेश सिंह,पूर्व मंत्री सत्यानंद भोक्ता, वरिष्ठ नेता पूर्व प्रदेश अध्यक्ष गौतम सागर राणा सहित प्रदेश के समस्त राजद पदाधिकारियों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दिया है ।

झारखंड के 2,494 सरकारी विद्यालयों में छात्र-छात्राओं की हुई ऑनलाइन मूल्यांकन परीक्षा

आईसीटी योजना अंतर्गत कंप्यूटर विषय पर छात्रों के प्राप्त अधिगम स्तर के मूल्यांकन के लिए आयोजित हो रही है परीक्षा

कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की परीक्षा संपन्न, 16 जनवरी तक करा ले जाएगी कक्षा 7 और कक्षा 8 तक के बच्चो की परीक्षा

राज्य के 1,82,362 छात्र-छात्राओं ने अबतक दी ऑनलाइन मूल्यांकन परीक्षा, परीक्षा में छात्राओं की संख्या छात्रों से अधिक

बिभा संवाददाता

रांची : राज्य में संचालित आईसीटी योजना के अंतर्गत आईसीटी लैब 5,300 सरकारी विद्यालयों में अधिष्ठापित किये गए है। इसके तहत कक्षा 6 से कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों को आईसीटी लैब में आईसीटी प्रशिक्षकों के माध्यम से कंप्यूटर विषय की शिक्षा दी जा रही है। वर्तमान सत्र में सत्र प्रारंभ से दिसंबर, 2024 तक निर्धारित सिलेबस के अनुसार संचालित कक्षाओं में छात्र-छात्राओं का कंप्यूटर विषय पर प्राप्त अधिगम स्तर के मूल्यांकन के लिए ऑनलाइन परीक्षा दिनांक 8 जनवरी, 2025 से शुरू हुई। इस परीक्षा में अबतक कक्षा 9 से कक्षा 12 तक के 1,82,362 छात्र छात्राओं ने भाग लिया है। इनमे 68,834 छात्र और 1,13,528 छात्राएं शामिल है। राज्य के 2,494 माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अबतक यह ऑनलाइन मूल्यांकन परीक्षा संपन्न हो चुकी है। कक्षा 9 में धनबाद में सर्वाधिक 6, 892 छात्र-छात्राओं ने अबतक परीक्षा दी है। कक्षा 10वीं में अबतक सर्वाधिक 5,812 छात्र-छात्राओं ने गिरिडीह में परीक्षा दी है। कक्षा 11वीं और 12वीं में भी गिरिडीह के ही सर्वाधिक 3,646 छात्रों ने ऑनलाइन मूल्यांकन परीक्षा दी है। कक्षा 7 और कक्षा 8 तक के विद्यार्थियों के लिए दिनांक 16 जनवरी, 2025 तक ऑनलाइन मूल्यांकन परीक्षा संपन्न करा ली जाएगी। परीक्षा का परिणाम दिनांक 17 जनवरी, 2025 के बाद प्रकाशित किया जायेगा।

पूछे गए वस्तुनिष्ठ प्रश्न

छात्र छात्राओं के लिए आयोजित ऑनलाइन मूल्यांकन परीक्षा में कुल 30 प्रश्न पूछे गए। इनमे सभी वस्तुनिष्ठ प्रश्न थे। जे-गुरूजी एप के माध्यम से विद्यालयों को प्रश्न उपलब्ध कराया गया था। 10 मिनट के अंतराल में दो बैच में परीक्षा का आयोजन हुआ। परीक्षा का निरंतर अनुश्रवण जिला कार्यक्रम पदाधिकारी के मार्गदर्शन में जिला आईसीटी योजना प्रभारी, जिला समन्वयक के द्वारा किया गया।

किसान मेला, सेवा समर्पण दौड़ सह स्वास्थ्य शिविर संपन्न

देश की प्रगति किसानों एवं युवाशक्ति के हाथों में है : डॉ प्रदीप वर्मा

बिभा संवाददाता

रांची : सेवा भारती,झारखण्ड के तत्वावधान में 15वां किसान मेला,स्वास्थ्य शिविर सह सेवा समर्पण दौड़ की निर्णायक प्रतियोगिता अनगड़ा प्रखंड अंतर्गत जोन्हा के ग्राम गुड़ीडीह स्थित सेवा धाम परिसर में आयोजित किया गया है।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद डॉ प्रदीप वर्मा ने कहा कि देश की प्रगति किसानों एवं युवाशक्ति के हाथों में है। आज स्वामी विवेकानंद की जयंती पर शुभकामनाएं देते हुए प्रदीप वर्मा ने स्वामी जी के संदेश शक्ति ही जीवन है, निर्बलता मृत्यु है को अपने जीवन में उतारने पर जोर दिया। सेवा भारती अपने विभिन्न सेवा आयामों के माध्यम से ग्राम विकास का कार्य कर रही है। सेवा भारती के मार्गदर्शन में कई प्रगतिशील किसान जैविक खेती कर के लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। सुदूर ग्रामीण अंचलों में संस्था द्वारा स्वास्थ्य सेवा दी जाती है। खेलकूद, दौड़, योगासन के क्षेत्र में भी कई प्रतिभाओ को संवारने का कार्य हो रहा है।

सेवा भारती के एक दिवसीय कार्यक्रम के दौरान आयोजित स्वास्थ्य शिविर में नागरमल मोदी सेवा सदन,रिम्स, रांची के विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा 235 जरूरतमंद मरीजों को स्वास्थ्य परामर्श दिया गया एवं आवश्यक दवाएं मुहैया कराई गई।

कृषि मेला में 50 गांवों के किसान अपने उत्कृष्ट फसलों की प्रदर्शनी लगाएं,जहां फसलों में उत्कृष्ट उत्पाद को चयनित कर बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिको ने 50 किसानों को पुरस्कार के लिए चयन किया एवं अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया साथ ही सभी निबंधित किसानों को अंगवस्त्र दे कर सम्मानित किया गया। मौके पर किसान गोष्ठी में बिरसा कृषि विश्व विद्यालय के वरीय वैज्ञानिक डॉ मिलन चक्रवर्ती, डॉ शुभ्रांशु सेनगुप्ता,डॉ आर पी मांझी ने कृषि संबंधित जानकारी किसानों को दी।

अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन समाजसेवी आनंद कोठारी ने दिया जबकि कार्यक्रम का संचालन चंदन मिश्र ने किया। मौके पर कलाकारों द्वारा पारंपरिक सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम भी आयोजित की गई हैं। उक्त कार्यक्रम मे राष्ट्रीय सेवा भारती के गुरुशरण प्रसाद, राधेश्याम अग्रवाल, अखिलेश श्रीवास्तव, उमाशंकर शर्मा,संतोष वर्मा,संजय गोयल, मनोज कुमार,अरुण शुक्ला,नन्दलाल साहू, जैलेंद्र कुमार,लालचंद वेदिया,दिनेश कुमार, सोना राम मुंडा सहित सैकड़ों ग्रामीण व नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

श्रीवैकुंठोत्सव में सहस्त्रनाम अर्चना अनुष्ठान का हुआ समापन

बिभा संवाददाता

रांची : तिरुपति बालाजी मंदिर में वैकुंठोत्सव के उपलक्ष्य पर चार दिवसीय श्रीविष्णु सहस्त्रनाम का सामुहिक अर्चना आज 12 जनवरी रविवार को संपन्न हुआ । यह मुक्तिप्रद वैकुण्ठोत्सव में मंगलकारकों में श्रेष्ठतम तथा अणिमा आदि अष्टसिद्धियों को देनेवाले श्रीविष्णु सहस्त्रनाम अर्चना अनुष्ठान में लोगों ने श्रद्धा - भक्ति और नेम- निष्ठा से सहभागि हुये । श्रीहरि-विष्णु के नामों जो करोड़ों पातको को नष्ट करनेवाले, सभी तीर्थों का फल देने वाले, पाप नाशक और समस्त जपों तथा यज्ञों का फल देने वाले हैं , इसी प्रभाव के जानकार भक्तों ने अपने-अपने नाम और गोत्र से संकल्प कराया। 09 जनवरी से 12 जनवरी तक चारों दिन चार- चार पाली में होनेवाले इस अनुष्ठान को रात्रि आठ बजे नित्याराधन, महाआरती,महाभोग महास्तुति आदि के पश्चात सभी सहभागि यजमान एवं झारखण्ड वासियों के साथ -साथ समग्र भारतियों के योग-क्षेम ,आयु-आरोग्य ,सुख-शान्ति और समृद्धि की कामना करते हुये अर्चकः श्री सत्यनारायण गौतम और श्री नारायण दास जी ने अनुष्ठान में जाने - अनजाने में किसी प्रकार की त्रुटि हुई हो उसके लिए मंत्रों द्वारा क्षमा प्रार्थना किया ।

आज के अनुष्ठान में मुख्य रूप से आनंद प्रकाश अग्रवाल रवि वर्मा संजय अम्बष्ट किरण देवी श्रीमन्न अग्रवाल राजेश सुल्तानिया कृष्ण बिहारी सिंह शशिकांत महतो संजय कुमार ओमप्रकाश गरोदिया अनीश अग्रवाल विनय धरणीधर का कन्हैया लोहिया आशीष अग्रवाल राजेंद्र बंसल के अलावा सैकड़ो लोगों की सहभागी रही।

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में राष्ट्रीय युवा दिवस सह वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन

युवाओं को विवेकानन्द के पदचिह्नों पर चलते हुए आलस्य का त्याग कर उन्नत समाज का निर्माण करना चाहिए : न्यायमूर्ति

बिभा संवाददाता

रांची : युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में राष्ट्रीय युवा दिवस सह वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति राजेश कुमार के रूप में व विशिष्ट अतिथि कुलपति डा० इन्द्रनील मन्ना के रूप में उपस्थित हुए।

वार्षिकोत्सव की शुरूआत मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा गणेश पूजन एवं दीप प्रज्वलन, पुष्पार्चन से हुआ। अतिथियों का स्वागत पौधा, मोमेंटो एवं अंगवस्त्र प्रदान कर किया गया।

विद्यालय का परिचय प्रस्तुत करते हुए शिशु विकास मंदिर समिति के मंत्री अखिलेश्वर नाथ मिश्र ने कहा कि भारतीय जीवन मूल्यों, अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं पर आधारित 1971 में मात्र तीन कमरों से एच० ई० सी० परिसर में विद्यालय प्रारंभ हुआ। 1973 के वसंत पंचमी के दिन कमडे बाबा के कर कमलों से सरस्वती शिशु विद्या मंदिर की नींव रखी गई। 1984 में बिहार बोर्ड की परीक्षा में सभी भैया-बहन प्रथम श्रेणी में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। समय की माँग को देखते हुए 1997 में सी० बी० एस० ई० से मान्यता प्राप्त कर विद्यालय आज शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी स्थान रखता है।

विशिष्ट अतिथि प्रो० (डा०) इन्द्रनील मन्ना ने कहा कि भारत नवयुवकों की आबादी में दुनिया में अग्रणी स्थान रखता है। इस युवा भारत की उर्जा का उपयोग कर हम 2047 तक विकसित भारत का दर्जा पा सकते हैं। उन्होंने विवेकानन्द जी को याद करते हुए कहा कि विवेकानन्द जी ने विश्व को वेदांत, राज योग से परिचय कराया। उन्होंने शिक्षा को 'खोज' आधारित होने पर जोर दिया। चरित्र, सच्चाई एवं राष्ट्रीयता का शिक्षा में समावेश अतिआवश्यक है।

मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति राजेश कुमार ने कहा कि युवाओं में उर्जा अपने उच्चतम स्तर पर होता है। माँ दुर्गा उर्जा की प्रतीक हैं, गणेश विवेक का प्रतीक हैं। युवाओं को विवेकानन्द जी के पदचिह्नों पर चलते हुए आलस्य का त्याग कर उन्नत समाज का निमार्ण करना चाहिए। वार्षिकोत्सव में संस्कारपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। संस्कृतियों के समागम की झलक का आरंभ एकल गीत से हुआ। भारतीय देव संस्कृति को दशार्ता देवी स्तुति, राम भरत मिलाप, भगवान राम जन्मोत्सव एवं महाभारत की सुन्दर प्रस्तुति विद्यालय के भैया-बहनों ने की।

इस अवसर पर शिशु विकास मंदिर समिति के अध्यक्ष शक्तिनाथ लाल दास, संरक्षक पवन मंत्री, उपाध्यक्ष बी० के० जयसवाल, सहमंत्री डॉ० धनेश्वर महतो, कोषाध्यक्ष एस वेंकट रमण डॉ उमा शंकर शर्मा, महावीर सिंह, नागेन्द्र श्रीवास्तव, लाल अशोक नाथ शाहदेव, नर्मदेश्वर मिश्र, अजय बैठा एवं अन्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विद्यालय की उपप्राचार्या मीना कुमारी, प्रभारी शुभश्री तिवारी, नीलिमा कुमारी एवं सभी आचार्य आचार्या एवं कर्मचारियों की महती भूमिका रही।

जिला स्कूल मैदान में पुस्तक मेला 17 से

रांची। झारखंड की शैक्षिक और सांस्कृतिक नगरी रांची के जिला स्कूल मैदान में रविवार को भूमि पूजन के साथ लगने वाले 10 दिवसीय राष्ट्रीय पुस्तक मेला की तैयारियां जोरशोर से शुरू हो गई हैं। यहां 17 से 26 जनवरी तक पुस्तक मेले का आयोजन किया जायेगा। यहां एक ही छत के नीचे हर आयु वर्ग के पाठकों के लिए हिन्दी, अंग्रेजी की पुस्तकें उपलब्ध होंगी। समय इंडिया, नई दिल्ली किताबों को पाठकों से जोड़ने की मुहिम के तहत यह पुस्तक मेला लेकर आया है। पुस्तकों से रूबरू होने की समयावधि प्रातः 11 बजे से रात 7.30 बजे तक की होगी। यह जानकारी समय इंडिया के प्रबंध न्यासी चन्द्र भूषण ने रविवार को यहां दी। भूमि पूजन कार्यक्रम में भूषण के अतिरिक्त मंडप निर्माण करने वाली संस्था के कर्मचारी और प्रतिनिधि के साथ स्थानीय लेखक जेबी पाण्डेय, संध्या पाण्डेय एवं संस्कृतिकर्मी उपस्थित थे।

खेद व्यक्त

श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा प्रथम वार्षिक उत्सव का आयोजन शीर्षक से 12 जनवरी 2025 को बिहान भारत में प्रकाशित खबर में भूल वश तकनीकी कारण से गलत शब्द छप गया है, इसके लिए हमें खेद है। पाठक इसे अन्यथा न लें ।

विवेकानंद के विचार भारत ही नहीं, पूरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत : राज्यपाल

बिभा संवाददाता

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने रविवार को कहा कि स्वामी विवेकानंद का जीवन और उनके विचार केवल भारत ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

राज्यपाल युगपुरुष स्वामी विवेकानंद की जयंती पर रामकृष्ण मिशन आश्रम के तत्वावधान में आयोजित 54वें वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने रामकृष्ण मिशन आश्रम की ओर से स्कूली विद्यार्थियों एवं कॉलेज छात्रों के लिए आयोजित क्विज, निबंध आदि प्रतियोगिताओं की सराहना की और सभी प्रतिभागियों को बधाई दी। साथ ही स्वामी विवेकानंद के आदर्श मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है का उल्लेख करते हुए मिशन के शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक कल्याण के कार्यों की सराहना की।

राज्यपाल न स्वामी विवेकानंद के

उद्धरण उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए का उल्लेख करते हुए युवाओं को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और आत्म-निर्धारित बनने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद महिला सशक्तिकरण के प्रबल पक्षधर थे और उन्होंने समाज के उत्थान में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया।

राज्यपाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में संचालित 'आत्मनिर्भर भारत', 'स्टार्टअप इंडिया' और 'स्किल इंडिया' जैसे पहलों का उल्लेख करते हुए कहा कि ये युवाओं को सशक्त और प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने शिक्षण संस्थानों से स्वामी विवेकानंद के आदर्शों को शिक्षा के माध्यम से प्रसारित करने का आान किया ताकि युवा समाज के प्रति जिम्मेदार और समर्पित नागरिक बन सकें।

राज्यपाल ने समारोह में विजयी प्रतिभागियों को सम्मानित किया तथा प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी और रामकृष्ण मिशन को इस सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं और बधाई दी।

स्वामी विवेकानंद का जीवन आत्मविश्वास, अनुशासन और परिश्रम का प्रतीक : संतोष कुमार

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने रविवार को कहा कि स्वामी विवेकानंद का जीवन आत्मविश्वास, अनुशासन और परिश्रम का प्रतीक है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के विचारों को युवाओं के लिए प्रेरणा का अटूट स्रोत बताया। राज्यपाल स्वामी विवेकानंद की जयंती पर राष्ट्रीय युवा विकास संघ के तत्वावधान में कांके के चारी हुजीर स्कूल मैदान में आयोजित 'भव्य युवा महोत्सव' को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के वाक्य ₹उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए₹ का उल्लेख करते हुए युवाओं को अपनी क्षमताओं को पहचानने और अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा दी। साथ ही झारखंड के युवाओं की सराहना करते हुए कहा कि वे अपने साहस, परिश्रम और प्रतिभा के लिए जाने जाते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में राज्य और देश का मान बढ़ा रहे हैं। राज्यपाल ने स्वामी विवेकानंद की शिक्षाओं का अनुसरण करते हुए समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इस 'भव्य युवा महोत्सव' के सफल आयोजन के लिए आयोजकों को शुभकामनाएं दीं और आशा व्यक्त की कि यह महोत्सव राज्य के युवाओं के जीवन में नई प्रेरणा और ऊर्जा का संचार करेगा। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे स्वामी विवेकानंद के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करें और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

संक्षिप्त खबरें

अब घूस मांगने, दुर्व्यवहार करने पर ट्रैफिक पुलिस की पोल खोलें! ट्रैफिक एसपी के नंबर पर करें शिकायत

रांची(बिभा) : ट्रैफिक एसपी कैलाश करमाली ने एक व्हाट्सएप नंबर जारी किया है। जिसकी मदद से लोग ट्रैफिक पुलिस के खिलाफ किसी भी तरह की शिकायत दर्ज करा सकें। अगर किसी ट्रैफिक पुलिसकर्मी के द्वारा दुर्व्यवहार किया जाता है या पैसे की मांग की जाती है तो आम नागरिक इस नंबर पर अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं। **नीचे दिए नंबर पर करें शिकायत :** अगर किसी पुलिसकर्मी द्वारा बदसुलूकी की जाती है तो उसकी फोटो भी खींचकर भेजी जा सकती है। यह व्हाट्सएप नंबर 8987790601 है जिस पर लोग अपनी शिकायतें भेज सकते हैं। इस कदम से रांची में ट्रैफिक पुलिस के कार्यों में पारदर्शिता बढ़ने की उम्मीद है। आम लोगों को अपनी शिकायतें जल्दी और आसानी से दर्ज कराने का एक नया प्लेटफॉर्म मिल गया है।

स्वामी विवेकानंद का जीवन एक आदर्श : स्वामी अंतरानंद महाराज

रांची(बिभा)। सामाजिक संस्था श्रीरामकृष्ण सेवा संघ ने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर रविवार को राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया। इस अवसर पर राजधानी के मेकॉन गोलंबर स्थित स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया। मौके पर श्री रामकृष्ण मिशन आश्रम, मोरहाबादी के स्वामी अंतरानंद जी महाराज ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का जीवन एक आदर्श के रूप में स्थापित है। उनका जीवन विशेष कर युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने धर्म अध्यात्म के प्रति पूरे विश्व के लोगों को जागरूक किया। इस अवसर पर श्रीरामकृष्ण सेवा संघ के सहायक सचिव तुषार कांति शीट, तन्मय मुखर्जी, श्रावंती शीट सहित अन्य मौजूद थे।

एबीवीपी ने विवेकानंद की जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया

रांची(बिभा)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एवीबीपी) ने स्वामी विवेकानंद की जयंती को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाते हुए महानगर के विभिन्न शैक्षणिक परिसरों में रविवार को कई प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया। राम लखन सिंह महाविद्यालय में राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर एबीवीपी ने वर्तमान परिदृश्य में विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता विषय पर संगोष्ठी एवं विकसित भारत में युवाओं की भूमिका विषय पर इंस्टीट्यूट आफ लीगल स्टडीज में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य रूप से महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विष्णुचरण महतो, प्राध्यापक भारत कुमार, प्राध्यापक विजय कुमार, प्रदेश सह मंत्री ऋतुराज सहदेव उपस्थित रहे। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विष्णुचरण महतो ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने युवावस्था में ही विश्व पटल पर भारत का परचम लहराया था। उन्होंने युवावस्था का संपूर्ण कल मातृभूमि के लिए समर्पित किया था। उनका मानना था कि किसी भी राष्ट्र के वर्तमान से भविष्य निर्माण में सबसे ज्यादा योगदान उस राष्ट्र के युवाओं का होता है। स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं आज भी पूरी तरह से प्रासंगिक हैं। उनकी शिक्षाओं को अगर हम जीवन में उतार लें तो राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव से काम करने की ऊर्जा सभी युवाओं को मिलेगी। एबीवीपी रांची महानगर इकाई की ओर से युवा दिवस के पूर्व संध्या पर दीपोत्सव एवं युवा दिवस के अवसर पर बड़ा तालाब स्थित प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं रांची महानगर कार्यालय में संगोष्ठी कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट की बैठक संपन्न, सड़क, नालियां बनवाने एवं स्ट्रीट लाइट लगाने की मांग

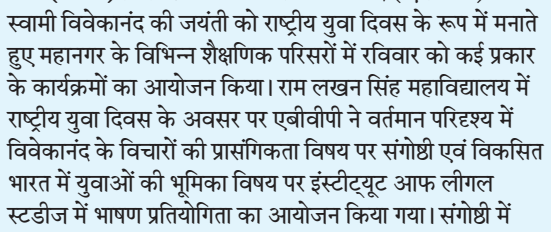

रांची(बिभा) : श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट कार्यकारिणी सदस्यों की एक बैठक ट्रस्ट के अध्यक्ष डूंगरमल अग्रवाल की अध्यक्षता मे श्री कृष्ण प्रणामी मंगल राधिका सदानंद सेवा धाम, पुंदाग संपन्न हुई। बैठक में झारखंड के सबसे बड़ा श्री राधा- कृष्ण मंदिर की की गई भव्य शुभारंभ की विस्तृत समीक्षा की गई। तथा भावी कार्यो एवं कार्यक्रमों की रूपरेखा तय किया गया। बैठक मे निर्णय लिया गया कि श्री राधा कृष्ण मंदिर में दर्शन करने हेतु प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंच रहे। सड़क एवं नालियां नहीं होने के कारण श्रद्धालुओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ है। प्रशासनिक अधिकारियों, सांसद एवं विधायक से सड़क, नालियां, अति शीघ्र बनवाने एवं स्ट्रीट लाइट लगाने की मांग की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि सेवा धाम मे प्रत्येक रविवार को अन्नपूर्णा सेवा निरंतर जारी रहेगा। तथा मंदिर को सुचारू रूप से चलाने हेतु समुचित व्यवस्था के संबंध में भी पूरी विस्तृत चर्चा की गई। आज श्री राधा-कृष्ण मंदिर मे भारी भीड़ उमड़ी 25000 से भी अधिक श्रद्धालुओं ने आज मंदिर मे भगवान श्री राधा- कृष्ण का दर्शन करने पहुंचे हैं। उक्त जानकारी देते हुए ट्रस्ट के प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय सर्राफ ने बताया कि बैठक में-ट्रस्ट के उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, निर्मल जालान, विजय अग्रवाल, नवल अग्रवाल, सज्जन पाड़िया, पूरणमल सर्राफ, चिरंजी लाल खंडेलवाल, निर्मल छावनिका, संजय सर्राफ, सुनील पोद्दार, पप्पू जालान, सुरेश चौधरी, शिव भगवान अग्रवाल, सुरेश भगत, प्रभास गोयल, अमित पोद्दार, विष्णु सोनी, सुरेश जिंदल, मनीष सोनी, विद्या देवी अग्रवाल, अंजू अग्रवाल, संतोष देवी, सहित अन्य कई सदस्य उपस्थित थे।

राष्ट्र के प्रति समर्पण, अनुशासन और सेवा भावना के प्रतीक हैं पूर्व सैनिक : राज्यपाल

बिभा संवाददाता

रांची। राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने रविवार को कहा कि पूर्व सैनिक राष्ट्र के प्रति समर्पण, अनुशासन और सेवा भावना के प्रतीक हैं। उनका योगदान समाज एवं राष्ट्र के लिए अनुकरणीय है। राज्यपाल रांची के गुरुनानक स्कूल सभागार में अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद की ओर से आयोजित 'पूर्व सैनिक महासम्मेलन के समापन पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारे देश के पूर्व सैनिक सीमाओं की रक्षा के प्रहरी रहे हैं और आज भी वे समाज के प्रेरणास्रोत और गौरव हैं। उनका अनुशासन, साहस और समर्पण हमारे लिए मार्गदर्शक है। उन्होंने अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद को बधाई देते हुए कहा कि इसने इन वीर योद्धाओं को समाज और राष्ट्र की सेवा के लिए संगठित किया है।

राज्यपाल ने कहा कि सैनिकों का योगदान केवल युद्धक्षेत्र तक सीमित नहीं है। वर्ष 1965, 1971 और कारगिल युद्ध जैसी ऐतिहासिक घटनाओं के साथ-

साथ प्राकृतिक आपदाओं में सहायता और दूरदराज क्षेत्रों में सामाजिक उत्थान में उनकी भूमिका अद्वितीय है। उनकी सेवाएं हर क्षेत्र में प्रेरणा और शक्ति का प्रतीक हैं। राज्यपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जरिये ₹वन रैंक, वन पेंशन₹ जैसी ऐतिहासिक योजनाओं के कार्यान्वयन न केवल पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों को वित्तीय स्थिरता प्रदान करती है, बल्कि सरकार की प्रतिबद्धता और संवेदनशीलता को भी दशार्ती है।

राज्यपाल ने कहा कि पूर्व सैनिकों के अनुशासन और नेतृत्व कौशल शिक्षा, ग्रामीण विकास, आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में कार्य समाज को समृद्ध कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि पूर्व सैनिकों के बच्चों की शिक्षा, परिवार की सुरक्षा और रोजगार के सम्मानजनक अवसर सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता है। राज्यपाल ने कहा कि पूर्व सैनिक केवल अतीत के रक्षक नहीं हैं, वे हमारे वर्तमान और भविष्य के निमार्ता भी हैं। उनके सम्मान और गरिमा की रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है, जो राष्ट्र के प्रति सच्ची सेवा का प्रमाण है।

राज्यपाल ने झारखंड में संगठन की प्रगति की प्रशंसा करते हुए कहा कि जमशेदपुर से शुरू हुई यह यात्रा राज्य के 11 जिलों में विस्तारित हो चुकी है। यह संगठन न केवल पूर्व सैनिकों के अधिकारों की रक्षा कर रहा है, बल्कि समाज के वंचित वर्गों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता के क्षेत्र में भी सक्रिय योगदान दे रहा है। सैनिकों की वीरता के पीछे उनके परिवारों के अद्वितीय समर्थन की सराहना करते हुए राज्यपाल ने कहा कि उनके त्याग और धैर्य से पूरा समाज प्रेरणा लेता है। सैनिक परिवार कल्याण न्यास, जिसने शहीदों के परिवारों और आश्रितों की देखभाल का दायित्व उठाया है, सराहनीय है। राज्यपाल ने पूर्व सैनिकों और उनके परिवार के सदस्यों से कहा कि उनका संघर्ष और समर्पण व्यर्थ नहीं जाएगा। पूरा देश उनके साथ खड़ा है और उनके उत्थान के लिए वे सदैव तत्पर रहेंगे।

पूर्व राज्यपाल रघुवर दास से मिला वैश्य मोर्चा का प्रतिनिधि मंडल, दी बधाई

बिभा संवाददाता

रांची : झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सह ओड़िशा के पूर्व राज्यपाल, झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा द्वारा शान-ए-वैश्य से सम्मानित रघुवर दास से रांची के धुर्वा स्थित आवास में वैश्य मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष महेश्वर साहु के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल मिला और पुनः सक्रिय राजनीति में आने पर उन्हें बधाई दी और नववर्ष की शुभकामनाएं भी दी. इस अवसर पर वैश्य मोर्चा के वरीय उपाध्यक्ष अश्विनी कुमार साहु एवं केंद्रीय महासचिव दिलीप कुमार ने शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया, वहीं रांची महानगर अध्यक्ष कपिल प्रसाद साहु एवं केंद्रीय सदस्य संजय साहु ने बुके देकर सम्मानित किया. प्रतिनिधि मंडल में वरीय उपाध्यक्ष संजीव चौधरी एवं महिला मोर्चा कार्यकारी अध्यक्ष दीपारानी कुंज शामिल थीं.

माले ने स्व सुखदेव प्रसाद को दी श्रद्धांजलि

रांची : भाकपा माले राज्य कार्यालय में स्व सुखदेव प्रसाद की चौथी पुण्यतिथि मनायी गयी. इस दौरान पार्टी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्मृति सभा की. इस मौके पर माले राज्य सचिव मनोज भक्त ने कहा कि सुखदेव प्रसाद ने झारखंड के विभिन्न जिलों में मजदूर यूनियनों के गठन और श्रमिक अधिकारों की रक्षा के लिए अपनी पूरी जिंदगी समर्पित कर दी. संघर्ष तेज करने का संकल्पस्मृति दिवस पर उनके विचारों को याद करते हुए उपस्थित सभी लोगों ने एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की.

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सहित अन्य नेताओं ने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर किया नमन

बिभा संवाददाता

रांची। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी सहित अन्य नेताओं ने स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उन्हें नमन किया है।

मरांडी ने रविवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा है कि महान युगद्रष्टा और युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उन्हें सादर नमन। साथ ही राष्ट्रीय युवा दिवस की आप सभी को शुभकामनाएं।

पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने युग प्रवर्तक, हिंदू, हिंदुत्व और हिंदुस्तान को दुनिया में प्रतिष्ठित करने वाले, आध्यात्मिक गुरू और युवाओं से प्रेरणापुंज स्वामी विवेकानंद की जयंती पर कोटिशः प्रणाम किया है। उन्होंने सभी को राष्ट्रीय युवा दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी है। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने भी सोशल मीडिया पर स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उन्हें नमन किया है। उन्होंने कहा है कि युवाओं के प्रेरणास्रोत एवं महान विचारक स्वामी विवेकानंद की जयंती पर उन्हें शत-शत नमन। उन्होंने कहा कि आज राष्ट्रीय युवा दिवस पर युवाओं को स्वामी विवेकानंद के आदर्शों और सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए अपनी प्रतिभा एवं ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग कर देश तथा समाज की प्रगति में योगदान देने का संकल्प लेना चाहिए।

पंचायत सचिवालय में रहे पंचायत सचिव : कांग्रेस

बिभा संवाददाता

रांची। राजीव गांधी पंचायती राज संगठन की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक कांग्रेस भवन रांची में रविवार को हुई जिसमें झारखंड प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने कहा कि 73 और 74वा संविधान संशोधन के माध्यम से पंचायत राज और नगर निकाय व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा मिला जिसमें तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी जी की महित भूमिका रही उन्होंने आरजीपीआरएस के सभी सदस्यों को जमीनी स्तर पर कार्य करने पर बधाई दिया । वही झारखंड प्रदेश कांग्रेस के सह प्रभारी श्रीवेला प्रसाद

ने भी नगर निकाय चुनाव हेतु कार्यकताओं को कमर कस लेने को कहा और इस हेतु कुछ टास्क भी सुझाए, इसके बाद राजीव गांधी पंचायती राज संगठन के प्रदेश अध्यक्ष सुनीत शर्मा ने कहा कि हम जल्द ही पंचायती राज मंत्री से मिलकर पंचायत सचिवालयों में ही रहे पंचायत सचिव इस ओर सरकार का ध्यान दिलाएंगे जिससे की राज्य के सभी पंचायत सचिव को मिल रहे मकान किराया भत्ता की बचत होगी इसके अलावा विभिन्न जिलों में बैठकों की तिथि निर्धारित किया गया और चर्चा में यह बात भी हुई कि झारखंड पंचायती राज नियमावली 2001 में संशोधन के कुछ सुझावों से भी सरकार को अवगत कराया जाएगा जिससे त्रिस्तरीय पंचायत राज व्यवस्था की जनप्रतिनिधियों को ज्यादा लाभ मिल सके। डॉ प्रदीप कुमार बालमुचू ने कहा कि यह संगठन कांग्रेस की नींव है जो अपने दायित्वों को बखूभी निभा रही हैं। बैठक में सतीश पॉल मुजनी, रियाजुल अंसारी, डॉ अमित झा, जॉनसन मिंज, अंजनी रंजन, ज्ञान सिंह दोरायबुरू, रितेश तामसोय, समीर सुंडी, त्रिभुवन, फणीश्वर नाथ नीलेश, देवलाल कुमार, संतोष राय, पवन कुमार, विवेक विशाल, योगेंद्र यादव, कंचन देवी, अमृतेश कुमार, आनंद कुमार और अन्य उपस्थित हुए।

महिला उद्यमिता उपसमिति की बैठक संपन्न, 20 जनवरी को कार्यशाला का आयोजन

बिभा संवाददाता

रांची : फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के महिला उद्यमिता उप समिति की बैठक चैम्बर भवन में संपन्न हुई। बैठक में व्यापार क्षेत्र से जुड़े विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। व्यापार में चुनौतियां और समाधान पर प्रकाश डालते हुए उप समिति की चेयरपर्सन डा. आस्था किरण ने बताया कि व्यापारिक क्षेत्र में प्रतिदिन नई-नई चुनौतियां आती हैं। इनसे निपटने के लिए प्रभावी कॉनफ्लिक्ट रेजॉल्यूशन स्ट्रेटेजी अपनाना जरूरी है। इसके साथ ही, व्यापार को बढ़ाने के लिए पर्सनैलिटी डेवलपमेंट और नेगोशिएशन

स्किल्स की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इन्हीं विषयों को ध्यान में रखते हुए 20 जनवरी 2025 को फेडरशन ऑफ झारखंड द्वारा एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। कार्यशाला में विशेषज्ञों की भागीदारी स्वरूप प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. ख्याति मुंजाल और वंदना साहू उपस्थित रहेंगी, जो इन विषयों पर चर्चा और मार्गदर्शन प्रदान करेंगी। कार्यशाला का आयोजन चैंबर भवन में दोपहर 3 बजे से शाम 5 बजे तक किया जाएगा। साथ ही उन्होंने इस इस कार्यक्रम में व्यापारी समुदाय को शामिल होने की अपील की।

बैठक में चैम्बर अध्यक्ष परेश गट्टानी ने बताया कि आगामी ट्रेड फेयर में महिला उद्यमियों के लिए स्टाल लगाने हेतु कुछ विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराई जायेंगी, जिससे उनके व्यवसाय को बढ़ावा मिल सके। एमएसएमई रजिस्ट्रेशन करवाने हेतु हेल्प डेस्क बनाये जाएँगे. चैम्बर महासचिव आदित्य मल्होत्रा ने उप समिति द्वारा आयोजित किये जानेवाले कार्यशाला की प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसे प्रयास आज की व्यवसायिक जरूरत है। यह न केवल कॉनफ्लिक्ट रेजॉल्यूशन पर केंद्रित होगी, बल्कि व्यक्तित्व विकास में भी मददगार साबित होगी। यह बैठक महिला उद्यमियों के लिए नए अवसरों और मार्गदर्शन का स्रोत साबित होगी। कार्यशाला में अधिक से अधिक व्यापारी वर्ग की भागीदारी अपेक्षित है।

बैठक में चैम्बर अध्यक्ष परेश गट्टानी, महासचिव आदित्य मल्होत्रा, सह सचिव विकास विजयवर्गीय, नवजोत अलंग, कोषाध्यक्ष रोहित अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य रोहित पोद्दार, महिला उद्यमिता उप समिति की चेयरपर्सन आस्था किरण, सदस्य संदीप नागपाल , रंजीत रंजन , संतोष सिन्हा , अर्चना श्रीवस्तव, कोमल , शालिनी अखौरी , नेहा , अंजलि समेत समिति के अन्य सदस्य उपस्थित रहे ।

हिंदपीढ़ी इलाके से लापता दो सगी बहनों के अपहरण की आशंका

रांची। शहर के हिंदपीढ़ी इलाके से दो सगी बहनों के लापता होने के मामले में पुलिस लगातार तकनीकी शाखा के सहयोग से सुराग लगाने का प्रयास कर रही है। जानकारी के अनुसार, दोनों बहनें रांची के कांटाटोली चौक के मंगल टावर के पास आधार कार्ड को सुधरवाने गई थी। इस दौरान दोनों का मोबाईल फोन ऑफ हो गया। इसके बाद पीड़ित परिवार ने थाने में शनिवार रात शिकायत दर्ज कराई है। पीड़ित परिजनों ने आशंका जताई है कि ऑटो में बैठने के दौरान मोबाइल छीन कर दोनों का अपहरण कर लिया गया है। युवतियों की पहचान रहनुमा प्रवीण (20) और अमरीना असगर (18) के रूप में हुई है। थाना प्रभारी ने रविवार को बताया कि पुलिस मामले की जांच-पड़ताल कर रही है। पुलिस को दोनों के मोबाईल फोन का लास्ट लोकेशन रांची के ओरमांझी इलाके में मिला है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज को खंगाल रही है।

तिलकुट बाजार हुआ गुलजार, अभी से खरीदारी करने में जुटे लोग

बिभा संवाददाता

बोकारो। तिलकुट की सोंधी महक से पूरा शहर महकने लगा है। ऐसे में बोकारो शहरी क्षेत्र के बाजारों में तिलकुट की दुकानें सज गई हैं. सड़क किनारे कई तिलकुट की दुकानें खुल गई हैं. यहां जोर- शोर से तिलकुट तैयार किया जा रहा है. तिलकुट की सोंधी खुशबूलोगों को दूर से ही आकर्षित कर रही है. शहर के चास, सेक्टर 4 एवं दूंदीबाज़ार चौक सहित कई जगहों पर निर्माण हो रहा है. खरीददारों की भीड़ बढ़ने लगी है।

दुंडीबाद के दुकानदार ने बताया की लोगो की मांग को देखते हुए गुड़ चीनी के अलग अलग तरह के तिलकुट का निर्माण पुरे जोर पर है.

सोंधी महक से गुलजार हो जाता है शहर: वैसे तो यहां सालों भर तिलकुट की ब्रिकी होती है, लेकिन सर्द मौसम आते ही इसकी मांग बढ़ जाती है। जनवरी माह में तिलकुट की मांग बढ़ते ही धम-धम की आवाज और सोंधी महक से शहर गुलजार हो जाता है। यह किसी फैक्ट्री या किसी अन्य मशीनों की आवाज नहीं होती है, बल्कि हाथ से तिलकुट कुटने की आवाज होती है

कैसे बनता है तिलकुट

तिलकुट बनाने में मुख्य रुप से तिल एवं चीनी का प्रयोग किया जाता है। हालांकि अन्य मिठाइयों की अपेक्षा इसे बनाने में ज्यादा मेहनत लगती है। इस कार्य में अधिक मजदूरी लगने की वजह से दुकानदार दिन रात लगे हुए है।

संक्षिप्त खबरें

सेक्टर 12 में डॉ आरके झा एलेवन ने जीता प्रदर्शनी क्रिकेट मैच

बोकारो/बिभा संवाददाता। सेक्टर 12ई स्थित खालसा क्रिकेट मैदान में बोकारो प्रेस एलेवन व डॉक्टर आरके झा एलेवन के बीच क्रिकेट मैच का आयोजन हुआ। मैच से पहले पत्रकारो ने दिवंगत पत्रकार दीपेंद्र प्रभंजन को एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। इसके बाद प्रेस एलेवन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। मैदान पर लक्ष्मी नारायण व शुभम ने शानदार ओपनिंग साझेदारी करते हुए 35 रन जोड़े। टीम की ओर से राम मूर्ति प्रसाद, राजेश राज, अभय कुमार व सत्यपॉल ने अच्छी बल्लेबाजी कर टीम का स्कोर 84 रन किया। जिसके बाद डॉ आरके झा की टीम बल्लेबाजी करने उतरी। टीम के सभी खिलाड़ियों ने मिलकर अंतिम ओवर में मैच को जीताया। जिसमें डॉ राहुल झा व रोहित झा की बेहतर बल्लेबाजी शामिल रही। डॉ एलेवन की टीम ने 11.3 ओवर में 85क रन बनाकर जीत दर्ज की। मौके पर कृष्णा चौधरी, सुनिल महतो, विश्वजीत झा, योगो पूर्ति, राहुल बसु, कौशल कुमार, रवि वर्मा, धर्मनाथ, विशद यादव, रोहित झा, रोहन झा, कन्हैया झा, अकिंत कुमार, अमित यादव, चिकू कुमार, अभिज्ञान रजक, संतोष कुमार आदि शामिल रहे।

सिटी पार्क में 1984 बैच के विद्यार्थियों का मिलन समारोह आयोजित

बोकारो/बिभा संवाददाता। सिटी पार्क वनभोज स्थल में रविवार को बोकारो इस्पात उच्च विद्यालय सेक्टर वन के 1984 बैच के पूर्ववर्ती छात्रों का पारिवारिक वार्षिक मिलन सह वनभोज कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पूर्ववर्ती छात्र छात्राओं ने एक दूसरे से मिल कर बचपन की यादें ताजा की और जम कर मस्ती की। कुछ साथी लगभग चालीस वर्षों बाद मिलकर भावुक हुए वहीं कई मित्र सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में जिम्मेदार पदों पर होते हुए भी समारोह में उपस्थित को प्राथमिकता दी। मित्रों ने कहा कि ऐसा आयोजन होते रहना चाहिए क्योंकि मित्र ही हैं जो तनाव भरी जीवन में नई उर्जा का संचार कर सकते हैं। ईस अवसर पर राजकृषण राज, वसिष्ठ कुमार, टीबी मंडल, नलिनी कांत, रखाल,भारत भूषण, रमण, दीपक, अंजली, रीता, संजय, अजय, विजय, आदित्य, राजीव, संजय सिंह, सुरेश, निताई, प्रदिप, विकास, सोनी आदि उपस्थित थे।

योगीडीह आश्रम में स्वामी विवेकानंद जी की 162 वीं जन्मजयंती मनाई गई

बोकारो/बिभा संवाददाता। चंदनकियारी प्रखण्ड पंचायत देव ग्राम के योगीडीह स्थित श्री श्री रामकृष्ण विवेकानंद सेवा आश्रम योगीडीह में स्वामी विवेकानंद जी का 162 वीं जयंती मनाई गई। स्वामी जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रदा सुमन की गई। इ आश्रम संचालन सेवादारसह सह कोषाध्यक्ष मीडिया कुमार मुखर्जी ने कहा स्वामी जी ने कहा था कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति आधार युवा वर्ग ही है। ये उनका आत्म विश्वास था। विवेकानंद जी युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत थे और रहेगें। महापुरुष एकबार ही जन्म लेते हैं। उनकी बताई गयी भगतो को अमल कर युवाओं अपने क्षमताओं को पहचाने तथा राष्ट्र निर्माण में लगायें। इस अवसर पर आश्रम में पुजा पाठ व होम का आयोजन कर प्रसाद का वितरण किया गया। मौके पर आश्रम कमिटी के पदाधिकारी, सदस्यों व ग्रामीण उपस्थित थे।

शहीद निर्मल महतो की मुर्ति अनावरण 16 जनवरी को तैयारी युद्ध स्तर पर

बोकारो/बिभा संवाददाता। चास प्रखण्ड के शहीद निर्मल महतो चौक आलकुशा में रविवार को शहीद निर्मल महतो की मुर्ति स्थापित कर अनावरण कि तैयारी युद्ध स्तर पर है. वहीं समिति के अध्यक्ष ज्योति लाल महतो ने कहा कि 16 जनवरी 2025 सुबह 11:00 बजे को शहीद निर्मल महतो की आदमकद मुर्ति की अनावरण होगी.जिसमें सभी चिंतनशील, बुद्धिजीवी, महिला, पुरुष, समाजसेवी एंव सभी राजनीतिक दलों के नेताओं को अनावरण कार्यक्रम में शामिल होने की अपील किये. मौके पर पुर्व प्रत्याशी जगन्नाथ रजवार, मिथिलेश कुमार महतो, छोटेलाल महतो, इस्लाम अंसारी, पटल महतो, दुर्गा चरण महतो, रोहित रजक, रवि महतो, मुर्शीद अंसारी, प्रकाश महतो, विष्णु महतो, लालधारी महतो, राजु महतो, अजय कुमार महतो, अशोक कुमार महतो, मोईन अंसारी, निमाई कुमार महतो आदि शामिल थे।

मानसिक बीमार व्यक्ति का शव तालाब में मिला, जांच में जुटी पुलिस

बोकारो/बिभा संवाददाता। बोकारो जिला के पेटरवार थाना क्षेत्र अंतर्गत पिछरी के हथिया पाथर निवासी करीब 55 वर्षीय व्यक्ति 6 जनवरी से घर से लापता व्यक्ति का शव तालाब में तैरते हुए मिला। बालीडीह थाना पुलिस ने गोडाबाली दक्षिणी के तालाब से शव को किया बरामद। घटना बोकारो के बालीडीह थाना क्षेत्र का। जांच में जुटी पुलिस। घटना के बारे में बताया जा रहा है की बालीडीह थाना पुलिस को सूचना मिली की बालीडीह थाना क्षेत्र के विशुनपुर गांव के तालाब में एक शव तैर रहा है। ग्रामीणों द्वारा पुलिस को दी गई सूचना पर मौके पर पुलिस पहुंची जहां शव को तालाब से बाहर निकाला गया।

बैशाली मैदान में श्रीमद भागवत कथा सप्ताह के छठे दिन रुक्मिणी विवाह व सुदामा चरित्र कथा का वर्णन

बिभा संवाददाता

बोकारो। बैशाली मैदान में धर्म जन जागरण समिति के द्वारा आयोजित 8 दिवसीय श्रीमद भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ के षष्ठम दिवस का सुभारंभ आदरणीया श्वेता सिंह, विधायक बोकारो कृष्णा राय, कौशल राय, इंदुशेखर मिश्रा, राजन उपाध्याय ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर कथा का सुभारंभ किया। आज के कथा में आचार्य वशिष्ठ देशमुख महाराज जी ने रुक्मणि विवाह विवाह व सुदामा चरित्र कथा की चर्चा की।महाराज जी ने कहा कि आठ दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के छठे दिन कथावाचक बशिष्ठ देशमुख जी महाराज ने उधव चरित्र, महारासलीला व रुक्मिणी विवाह का वर्णन किया। कथावाचक ने कहा कि गोपियों ने भगवान श्रीकृष्ण से उन्हें पति रूप में पाने की इच्छा प्रकट की। भगवान श्रीकृष्ण ने गोपियों की इस कामना को पूरी करने का वचन दिया। अपने वचन को पूरा करने के लिए भगवान ने महारास का आयोजन किया। इसके लिए शरद पूर्णिमा की रात को यमुना तट पर गोपियों को मिलने के लिए कहा गया। सभी गोपियां सज-धजकर नियत समय पर यमुना तट पर पहुंच गईं। कृष्ण की बांसुरी की धुन सुनकर सभी गोपियां अपनी सुध-बुध खोकर कृष्ण के पास पहुंच गईं। उन सभी गोपियों के मन में कृष्ण के नजदीक जाने, उनसे प्रेम करने का भाव तो जागा, लेकिन यह पूरी तरह वासना रहित था। इसके बाद भगवान ने रास आरंभ किया। माना जाता है कि वृंदावन स्थित निधिवन ही वह स्थान है, जहां श्रीकृष्ण ने महारास रचाया था। यहां भगवान ने एक अद्भुत लीला दिखाई थी, जितनी गोपियां उतने ही श्रीकृष्ण के प्रतिरूप प्रकट हो गए। सभी गोपियों को उनका कृष्ण मिल गया और दिव्य नृत्य व प्रेमानंद शुरू हुआ। रुक्मिणी विवाह का वर्णन करते हुऐ कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने सभी राजाओं को हराकर विदर्भ की राजकुमारी रुक्मिणी को द्वारका में लाकर उनका विधिपूर्वक पाणिग्रहण किया। मौके पर आयोजक मंडली की ओर से आकर्षक वेश-भूषा में श्रीकृष्ण व रुक्मिणी विवाह की झांकी प्रस्तुत कर यजमान योगेन्द्र कुमार चौधरी व शालिनी कुमारी ने विवाह संस्कार की रस्मों को पूरा किया । कथा के साथ-साथ भजन संगीत भी प्रस्तुत किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य यजमान योगेन्द्र कुमार चौधरी व शालिनी कुमारी के अलावे आयोजन समिति के सदस्यों के रूप में सत्यम भारती, रवि शंकर, योगेंद्र कुमार, गौरांग चंद्र पातर, मनीष कुमार पाण्डेय, कुलदीप कुमार, रामनरेश प्रसाद, गणेश अग्रवाल सुजीत कुमार, गगन दास, अशोक महली, मनोज कुमार, गणेश महतो, नरेश कंधवे, अनमोल, बीरेंद्र कुमार, अमित गिरी, आशीष कुमार, जयंत दत्ता, विजय कुमार, यशराज, रवि राज, दिलीप कुमार महतो, हरे राम, विकाश कुमार सुमित कुमार सहित कई लोग मौजूद रहे।

बोकारो कवियों की भुमि है, इस्पात से साथ साहित्यकारों का भी होता निर्माण: पीएन सिंह

बिभा संवाददाता

बोकारो। इस्पांताचल स्वेदशी मेला में ग्रंथ सृजन संस्थान के तत्वधान में काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व धनबाद सांसद पशुपतिनाथ सिंह ने कहा कि बोकारो कवियों की भूमि है। यहां इस्पात तो बनता ही है लेकिन इसके साथ साहित्यकार, रचनाकार और कवियों का भी निमार्ण होता है। पूर्व सांसद ने सभी प्रतिभागियों को स्मृतिचिन्ह भी वितरित की। ग्रंथ सृजन संस्थान के संस्थापक रजत नाथ ने कहा कि कला और साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है। मन की भावनाओं को जब आप शब्दवली में बांध देते हैं तो वो काव्य बन जाता है। सेक्टर चार, मजदूर मैदान में आयोजित काव्य गोष्ठी में बोकारो, हजारीबाग, धनबाद सहित एक दर्जन से भी ज्यादा कवि-कवियत्रियों ने अपनी रचना का पाठ किया और दर्शकों को बांधा रखा। इस अवसर पर विवके सिंह, केंद्रिय फाईनांस मंत्री निर्मला सीतारमण के पूर्व ओएसडी, बेहतर झारखंड के संयोजक और समाजसेवी ने क्रोध और द्वंद, गीता कुमारी गुस्ताख ने आओ चलकर ढ़ढें गाँव में पीपल की छांव , लव कुमार ने आजकल, रजत नाथ ने कभी दुखों का पहाड़ है, कभी आँसूओं का सैलाब है, मनसा कृष्णा ने सागर से भी गहरा, ज्योति वर्मा ने आती थी याद लेकिन मजबूर दिल न माना, अमृता शर्मा ने शर्माईन सा वैलेंटीन, सुप्रिया सरस ने थोड़ी से बदतमीजी मुझे भी सिखाई होती,धनबाद की चंदनी वर्मा ने मन जिताए मन हराए, मन ही कराए प्रीत, जादूगर सरोज राय ने जिस पार्टी मे मैं जाता हूँ, जैना मोड़ की सुजाता कुमारी ने खोरठा काव्य हमनी के झारखंड, कल्पना केसर ने प्रेम का एहसास काव्य पाठ किया।

संकल्प सृजन के तत्वावधान में युवा संगोष्ठी का हुआ आयोजन

बिभा संवाददाता

बोकारो। भारत के युग पुरुष स्वामी विवेकानंद जी की 162वीं जयंती व युवा दिवस के अवसर संकल्प सृजन के तत्वावधान में युवा संगोष्ठी का आयोजन क्रिसेंट पब्लिक स्कूल, सेक्टर 6, बोकारो के सभागार में संपन्न किया गया।

शहर के विभिन्न विद्यालय व महाविद्यालयों से आमंत्रित शिक्षार्थियों ने स्वामी विवेकानंद जी के सपनों का भारत व आज के युवाओं का योगदान को रेखांकित करते हुए अपना अपना मंतव्य प्रकट किया। साथ ही यह संदेश दिया कि हमारे युग पुरुष स्वामी विवेकानंद जी ने भारत के लिए जो स्वप्न देखे, उनकी कल्पना और उनके प्रयास भारत माता को परम वैभव पर स्थापित कराने हेतु सदैव गतिशील रहे, उस भारतवर्ष का नव निर्माण में हम युवाओं का क्या योगदान हो सकता है। सर्वप्रथम भारत माता व स्वामीविवेकानंद के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उद्बोधन प्रतियोगिता कनिष्ठ वर्ग से आयुष प्रसाद, प्रथम (एस एस भी एम) द्वितीय त्रिसा भारद्वाज, श्री अय्यप्पा पब्लिक स्कूल, तृतीय आशुतोष कुमार, क्रिसेंट पब्लिक स्कूल एवं वरिष्ठ वर्ग से साक्षी कुमारी प्रथम, आँचल कुमारी द्वितीय, तृतीय अंकिता कुमारी मिथिला एकेडमी सहित 45 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, कलम व श्रीमद्भागवतगीता से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान मृत्युंजय सहाय प्राचार्य जैन पब्लिक स्कूल ने बच्चों को संबोधित करते हुए उनका उत्साहवर्द्धन भी किया।

अधिवक्ता संघ का वनभोज सह मिलन समारोह का आयोजन

बिभा संवाददाता

बोकारो। बोकारो जिला के अधिवक्ता संघ के सदस्यों के साथ रविवार को वन भोज सह मिलन समारोह आयोजित बालीडीह डैम के पास किया गया। मालूम हो कि प्रत्येक वर्ष जनवरी के दूसरे रविवार को बोकारो के अधिवक्ताओं द्वारा पिकनिकनसः अधिवक्ता मिलन का आयोजन किया जाता है। वन भोज सह मिलन समारोह में वरीय अधिवक्ता हरि प्रकाश सिंह ने कहा कि इस मिलन समारोह से सभी को संदेश देना चाहते है कि हम सब एक है और सभी के सुख दुख में साथ है। इंडियन एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स के नेशनल कौंसिल मेंबर अधिवक्ता रणजीत गिरि ने कहा कि यह मिलन समारोह आयोजित करने का एक ही उद्देश्य है कि हम सभी लोग अधिवक्ता हित के लड़ाई में एक साथ है। उन्होंने राज्य सरकर से झारखंड में अधिवक्ता प्रोटेक्शन एक्ट जल्द लागू करने की मांग की। इसके लिए झारखंड के सभी अधिवक्ता आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। वरीय अधिवक्ता लालटू चरण महतो ने सभी आए हुए अधिवक्ताओं का गर्म जोशी से स्वागत किया और कहा कि सभी काले कोर्ट वाले एक है, यदि कोई हमे बांटने का प्रयास करेगा तो उसे मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

अपराधकर्मी मृतक राहुल तुरी का किया गया पोस्टमार्टम

रामगढ़। रामगढ़ एवं हजारीबाग पुलिस के द्वारा चलाये जाने रहे अभियान के क्रम में कुज्जू ओपी अंतर्गत ग्राम - मुरपा स्थित मांझी टोला के सुनसान जंगल में तीन अपराधकर्मियों द्वारा पुलिस टीम पर फायरिंग किया गया। इस पर पुलिस टीम द्वारा आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की गई, जिसमें एक अपराधकर्मी मारा गया। मृत अपराधकर्मी की पहचान कराने पर उसका नाम राहुल तुरी उर्फ आलोक जी बताया गया। अजय कुमार, पुलिस अधीक्षक, रामगढ़ के द्वारा मृत अपराधकर्मी राहुल तुरी उर्फ आलोक जी के शव का पोस्टमार्टम मजिस्ट्रेट एवं मेडिकल बोर्ड का गठन कर वीडियोग्राफी कर सदर अस्पताल, रामगढ़ में मृत अपराधकर्मी राहुल तुरी का पोस्टमार्टम किया गया।

युवा अपने कर्तव्य का पालन करते हुए आगे बढ़े : प्राचार्या

बिभा संवाददाता

बोकारो। डीएवी पब्लिक स्कूल सेक्टर -6 बोकारो द्वारा नावाडीह गाँव में वैदिक चेतना जागृति के तहत स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर वैदिक चेतना हवन -यज्ञ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हवन यज्ञ कार्यक्रम में विद्यालय की प्राचार्या अनुराधा सिंह, आर्य समाज के प्रचारक चेतन परमार, जितेंद्र कुमार, विद्यालय के संस्कृत शिक्षक बालशेखर झा, अभिभावक भरत कुमार, गोराई जी ने भाग लिया। इस अवसर पर विद्यालय की प्राचार्या अनुराधा सिंह ने कहा कि आज के युवा पीढ़ी को विवेकानंद के जीवन से सीख लेने की आवश्यकता है। उन्होंने ऐसे युवा की कल्पना की जिसमें ऊर्जा और जोश भरा हो। उन्होंने युवाओं के लिए कहा था उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए। वे युवाओं में आशा और उम्मीद देखते थे। उनके लिए युवा पीढ़ी सदा से परिवर्तन की अग्रदूत रहे। उन्होंने कहा था- "युवाओं में लोहे जैसी मांसपेशियां और फौलादी नसें हैं।

सहकार भारती स्थापना दिवस: गंगा क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड की वार्षिक आम सभा का आयोजन

बिभा संवाददाता

बोकारो। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर सैक्टर 2,ए में सहकार भारती का स्थापना दिवस सह गंगा क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड का वार्षिक आम सभा का आयोजन किया गया! कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि विश्व हिंदू परिषद के निवर्तमान अंतराष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ जगन्नाथ शाही, विशिष्ट अतिथि बोकारो के पूर्व विधायक बिरंची नारायण, सुख लाल वैद्य राष्ट्रीय स्तर पर औषधि वनस्पतियों के ज्ञाता, गंगा क्रेडिट कोऑपरेटिव के सीईओ प्रोफेसर पी एल बरनवाल, गंगा क्रेडिट कोऑपरेटिव के अध्यक्ष डॉ भगवान पाठक, रणविजय कॉलेज के निवर्तमान प्राचार्य डॉक्टर सत्यदेव तिवारी, वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश कुमार रॉय के द्वारा संयुक्त रूप से सहकार भारती के संस्थापक लक्ष्मण राव इनामदार और भारत माता की छवि पर पुष्पार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि जगन्नाथ शाही ने कहा कि सहकारिता ही हमारी पुरातन संस्कृति है, इसी को अपना कर हम स्वावलंबी एवं वैभवशाली राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि सहकारिता एक स्वस्फुर्त, स्वनियंत्रित, लोकतंत्रामक, सर्वोदयी एवं सर्वोपकरि दर्शन है, जिसके माध्यम से समाज के दलित, वंचित, पिछड़ा, महिला इत्यादि सभी वर्गों एवं समुदायों का सामाजिक एवं आर्थिक विकास संभव है। विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक बिरंची नारायण ने भी सहकार भारती एवं उसके प्रकल्प इकाई गंगा क्रेडिट कोऑपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड द्वारा सहकारिता के क्षेत्र में किये जा रहे कार्य की सरहाना करते हुए कहा कि बोकारो में सहकार भारती के द्वारा किये जा रहे कार्यों से सैकड़ों लोगों को स्वावलमबी बनाने का जो पुनीत कार्य किया जा रहा है इसके लिए सभी कार्यकर्ताओं के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ एवं मेरी जहाँ भी अवश्यकता होगी मैं सदैव सहयोग करूँगा।

सर्व सेवा संघ की राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक में देश के मुद्दों पर चर्चा

बिभा संवाददाता

बोकारो। राष्ट्रीय सर्व सेवा संघ के कार्यकारी समिति की बैठक गोपुरी वर्धा महाराष्ट्र में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदित्य पटनायक की अध्यक्षता में शनिवार को संपन्न हुई। दिवंगत सर्वोदय कार्यकर्ताओं के प्रति श्रद्धांजलि के उपरांत महामंत्री आनंद किशोर द्वारा पठानकोट बैठक के निर्णय और कार्य संपादन संबंधी प्रतिवेदन प्रस्तुति के उपरांत पूर्व समिति के न्यासी प्रो रामजी सिंह, मधुसूदन तथा सोमनाथ रोड़े के सेवानिवृत्ति के उपरांत तीन नए न्यासी नारायण भाई, गीतांजलि पटनायक, तथा रमाकांत नाथ का चयन किया गया सर्व सेवा संघ के पदाधिकारी एवं समिति के संयोजकों में प्रोफेसर प्रसाद गोलना पल्ली को अंतरराष्ट्रीय संवाद एवं संपर्क समिति, सुखपाल सिंह को किसान सेल, कैलाश चंद्र शाह को लीगल सेल ,धर्मेंद्र राजपूत को भूदान ग्रामदान समिति, गीतांजलि पटनायक को वित्त संग्रह, विजय भाई को शांति सेना समिति तथा राष्ट्रीय संगठन के मंत्री ,शिव विजय सिंह को प्रकाशन, इंदुमती साहू को महिला संगठन, बसंत राव केदार को खादी समिति, टिकेंद्र जीत सिंह को नाथ ईस्ट सर्वोदय संगठन तथा विनोद स्वरूप को युवा समिति का संयोजक नामित किया गया। विभिन्न राज्यों में भूदान समिति की स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए इस संबंध में विस्तृत प्रतिवेदन तैयार करने के लिए धर्मेंद्र जी, विश्वनाथ आजाद, कैलाश चंद्र साहू और राम अवतार गुप्ता को जिम्मेदारी दी गई। झारखंड भूदान समिति का गठन के लिए सरकार को प्रतिवेदन संघ के अध्यक्ष आदित्य पटनायक झारखंड के मुख्यमंत्री प्रतिवेदन देंगे ।बिहार में भी भूदान यज्ञ समिति का गठन करने हेतु सरकार से निवेदन करने का निर्णय लिया गया। किसानों के विभिन्न सवाल पर 47 दिनों से किसान नेता डिन्नबाल जी आमरण अनशन पर बैठे हैं उनकी स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती जा रही है, इसके लिए सर्व सेवा संघ का एक प्रतिनिधिमंडल धरना स्थल पर जाएगा जो सम्मानजनक समझौता किसानों से अभिलंब करने की मांग करेगा। संघ के बनारस परिसर पर सर्व सेवा संघ का वैधानिक अधिकार है। प्रबंध न्यासी महादेव विद्रोही जो सर्व सेवा संघ के संपूर्ण संपत्ति के संरक्षक होते हैं वैद्य दस्तावेज और तरीकों का इस्तेमाल करके आवश्यक पहल करेंगे। कार्य समिति ने सरकार से अभिलंब सर्व सेवा संघ की जमीन को वापस करने और ध्वस्त किए गए स्ट्रक्चर को बनाने का अनुरोध करेगा। देश में बढ़ते नफरती माहौल पर चिंता व्यक्त करते हुए प्रेम पूर्ण माहौल बनाने के लिए कार्यक्रम निर्धारित किए गए। नफरत के खिलाफ खड़ा होना गांधी विनोबा के कार्यकर्ताओं का पहला कर्तव्य है। 30 जनवरी गांधी शहादत दिवस पर संपूर्ण देश में जगह-जगह उपवास का कार्यक्रम वाराणसी के मुद्दे पर रखा जाएगा। गांधी पर आक्रमण समता और न्याय पर आक्रमण है इस संबंध में एक फ़ोल्डर बनाया जाएगा। सर्व सेवा संघ दिल्ली में संसद तक मार्च आयोजित करेगी जिसके द्वारा हम सरकार के सामने भूदान तथा अन्य सवालों का प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे। देश में चल रहे विभिन्न आंदोलन तथा सत्याग्रह को समर्थन देने की रणनीति पर भी विचार किया गया। गंगा मुक्ति आंदोलन के मुद्दों का समर्थन किया गया तथा बिहार में किसानों के सवाल पर सीतामढ़ी तथा पश्चिम विहार के आंदोलन तथा उड़ीसा में चल रहे नशा मुक्ति आंदोलन को समर्थन देने का निर्णय लिया गया। उड़ीसा में लगातार किसान आत्महत्या बढ़ रही है इस पर चिंता व्यक्त किया गया।

गीता के पांचवें अध्याय के पाठ की प्रतियोगिता सफलता पूर्वक संपन्न

बिभा संवाददाता

बोकारो। चिन्मय मिशन बोकारो द्वारा चिन्मय विद्यालय के तेजोमयानंद सभागार में आयोजित नगर स्तरीय गीता गायन प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्घाटन अध्यक्ष विश्वरूप मुखोपाध्याय, मिशन सचिव हरिहर राउत,विद्यालय सचिव महेश त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष आर एन मलिक एवं उप प्राचार्य नरमेंन्द्र कुमार ने दीप प्रज्ज्वलित कर प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। ज्ञातव्य हो कि चास बोकारो के विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने बहुत ही उत्साह से गीता गायन प्रतियोगिता में भाग लिया । कार्यक्रम को सुचारू रूप से आयोजन में चिन्मय मिशन बोकारो के सदस्य , विद्यालय के शिक्षकों एवं अन्य लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रमुख रूप से चिन्मय मिशन के सचिव हरिहर राउत, कैलाश जी, आशीष ठाकुर, अनिल कुमार, वकीलकांत मिश्रा, पंकज कुमार मिश्रा, निखिल चंद्र मिश्रा, रजनीश चौधरी एवं अन्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संजीव मिश्रा ने किया। प्रतियोगिता के निर्णायक के भूमिका में सोमा तिवारी, नेहा कुमारी , ज्योति कुमारी, रोली प्रियदर्शी, सविता प्रमाणिक, गीतांजलि, नरेंद्र कुमार राय एवं उदित पांडे ने अहम भूमिका निभाई।

पेशा लागू कर ग्राम सभा को मजबूत करना आवश्यक : रघुवर

बिभा संवाददाता

खूँटी। ओड़िशा के राज्यपाल के पद से इस्तीफा देने के बाद पुनः झारखंड की सक्रिय राजनीति में भाजपा की सदस्यता ग्रहण करने वाले प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास रविवार को राँची से जमशेदपुर जाने के क्रम में बुंडू में कार्यकर्ताओं से मिलकर कुशलक्षेम जाना। बुंडू आगमन के दौरान पूर्व मुख्यमंत्री सह भाजपा नेता रघुवर दास का बुंडू में पार्टी कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया। इसके बाद रघुवर दास ने बुंडू स्थित सूर्य मंदिर में मत्था टेका। रघुवर दास ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता पार्टी का मजबूत स्तंभ होता है। वही हम सभी का प्रयास रहेगा की 2029 में भाजपा चुनाव जीतेगी और सरकार बनेगी ऐसा हमारा प्रयास रहेगा। उन्होंने कहा कि कोई भी पार्टी जब सरकार में आती है और जनता उसे चुनकर भेजती है। वहीं राजनीतिक पार्टियाँ कुछ घोषणाएँ करते हैं और मेनिफेस्टो में वादे करते हैं। उन घोषणाओं और वादों में हेमंत सरकार ने कई ऐसी घोषणाएँ हैं उसे पूरा नहीं किया है। उसे जनता की हित में उन वादों को पूरा करें नहीं तो 2029 में भाजपा के कार्यकर्ता सबक सिखाएगी और राज्य की जनता गद्दी से उतार फेंकेगी। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार पेशा कानून को लागू करे इसलिए जनजातीय समुदाय के लोगों ने उन्हें मतदान कर सत्तासीन किया है। लेकिन पाँच वर्ष दो माह सरकार बने हो गये पेशा कानून को लागू नहीं किया गया। जो इस पेशा कानून का राज्य में लागू नहीं किया जाना जनता के हित और विकास में बाधक है। उन्होंने कहा कि सरकार से मांग करता हूं कि पेसा कानून को राज्य में लागू करें और ग्राम सभा को मजबूत करने का काम करे। क्योंकि गांव मजबूत होगा तभी समाज मजबूत होगा और देश मजबूत होगा। मौके पर भाजपा महेंद्र नाथ शाहदेव सहित अनेक भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

माँ मनसा मंदिर का उद्घाटन के साथ किया जाएगा प्राण-प्रतिष्ठा अनुष्ठान

खूँटी/बिभा संवाददाता। प्रखंड क्षेत्र में बिरहू गाँव में सर्पों की देवी माँ मनसा के मंदिर का निर्माण किया गया है। इस नवनिर्मित मंदिर का उद्घाटन व भगवती माँ मनसा देवी का प्राण-प्रतिष्ठा किया जाना है। जिसमें बिरहू गाँव के आयोजन समिति की अगुवाई में दो दिवसीय अनुष्ठान आगामी 14 जनवरी से 15 जनवरी 2025 तक आयोजित है। जिसमें पहला दिन मंगलवार को प्रातः 7 बजे कलश यात्रा तत्पश्चात् मण्डप पूजा अपराह्न 2 बजे से नगर भ्रमण किया जाएगा। अनुष्ठान के दूसरे दिन बुधवार को प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव, यज्ञ पूजा अपराह्न 1 बजे पूर्णाहुति हवन, यज्ञ विसर्जन, प्रसाद वितरण एवं संध्या 07 बजे से महाभण्डारा का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम की जानकारी गाँव के महावीर कुमार ने दी।

स्वामी विवेकानंद जयंती पर डीपीएस में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन

लोहरदगा/बिभा संवाददाता। जिले के कुडू प्रखंड के चंदलासो स्थित डिवाइन पब्लिक (डीपीएस) स्कूल में स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर कक्षा 9 एवं 10 के विद्यार्थियों के बीच नेहरू युवा केंद्र, लोहरदगा के द्वारा निबंध प्रतियोगिता कराईं गई। इस प्रतियोगिता में कुल 29 बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में कुल 6 बच्चे विजयी हुए। जिसमे प्रथम स्थान - साक्षी कुमारी, द्वितीय स्थान - युवराज सिंह, तृतीय स्थान - अफीफा, चतुर्थ स्थान - अनामिका, पंचम स्थान - हिमांशु एवं छठा स्थान - हेमंत कुमार को मिला। सभी विजेताओं को संस्थान की ओर से पुरस्कृत किया गया साथ ही प्रतियोगिता में शामिल सभी 29 बच्चों को सांत्वना पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर विद्यालय के डायरेक्टर ज्ञान गंगा सिंह ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि स्वामी जी के जैसा व्यक्तित्व सभी के अंदर होना चाहिए, साथ ही बच्चों द्वारा उनकी जीवन पर आधरित निबन्ध जो बच्चों द्वारा लिखी गई सराहना की। प्रतियोगिता के दौरान विद्यालय की शिक्षिका रेशमी, सुनीता B, सुनीता A, विद्या, चांदनी, पिंकी, सुलेखा, मनीषा, असरीता, भावना, शमीमा, सुषमा, शिक्षक अजित कुमार, नेहरू युवा केंद की संचालिका लखीया कुमारी, मुकेश कुमार उपस्थित रहे।

मकर संक्रांति को लेकर तिलकुट का बाजार सजा, लोग खरीदारी करने पहुँचने लगे बाजार

लोहरदगा/बिभा संवाददाता। शहर के बाजार में मकर संक्रांति को लेकर तिलकुट का बाजार सज गया है। बाजार में तिलकुट, तिल लड्डू, बादाम चट्ट, तिल पापड़ी, गुड़ बादाम, लाई, अनरसा, ड्राइफ्रूट्स तिलकुट, रेवड़ी, खोवा तिलकुट, गुड़ व चूड़ा की बिक्री होने लगी है। त्यौहार की तैयारी को लेकर लोगों में उत्साह है और लोग त्यौहार मनाने के लिए खरीदारी करने लगे हैं। कलेश्वरी देवी ने बताया कि मंगलवार को मकर संक्रांति का पर्व है। इसलिए आज बाजार में तिलकुट खरीदने के लिए पहुँचे हैं। आज कुछ खरीदारी किए हैं और फिर घर में भी पर्व के लिए अनरसा, लड्डुआ आदि बनाना है। हम लोग धूमधाम से त्यौहार मनाते हैं, इसलिए त्यौहार को लेकर काफी उत्साह है। राधिका देवी ने बताया कि मारवाड़ी समाज में तिल दान करने के साथ-साथ बर्तन दान वगैरह भी दान करते हैं। आज तिलकुट, तिल लड्डू , गुड़ आदि खरीदे हैं। कल पूरी तैयारी घर में ही करनी है। जैसे जैसे मकर संक्रांति पर्व निकट आते जा रहा है वैसे वैसे बाजार व मुहल्लों में भी तिल गुड़ की सुंगध मिलने लगी है। वहीं त्यौहार का बाजार पूरी तरह से गया है। जहाँ चार सौ से लेकर आठ सौ रुपए तक का तिलकुट मिलने लगा है।

सड़क दुर्घटना में दो दिनों में चार मौत, सड़क सुरक्षा प्रबंधक जनजागरण करने निकले

लोहरदगा/बिभा संवाददाता। जिले में हो रही सड़क दुर्घटना बढ़ते जा रही है जिसका कारण तेजगति वाहन परिचालन होता है। वहीं खूँटी में दो दिनों में सड़क दुर्घटना से चार लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं जिला परिवहन विभाग सड़क दुर्घटना से बचाव के लिए जनजागरण करने लगी है ताकि लोग इस सड़क दुर्घटना से बचें। वहीं इसके लिए जनजागरण अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही , विभाग आर्थिक दण्ड के लिए चालान काटकर राजस्व भी बढ़ाने में लगी है। इस दौरान एक दिन में विभाग ने पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर वाहन जाँच अभियान चलाया और 14 लोगों पर ई-चालान काटकर 52 हजार रुपए दण्ड लगाया है। साथ ही, हेलमेट पहनकर वाहन परिचालन करने के लिए लोगों को निर्देशित किया गया। मौके पर, सड़क सुरक्षा प्रबंधक निशांत केरकेट्टा ने बताया कि भारत सरकार की योजना अनुसार ठ खूँटी में सड़क सुरक्षा सप्ताह मनाया जा रहा है। जिसमें लोगों को सुरक्षित वाहन परिचालन के प्रति जागरूक किया जा रहा है। क्योंकि देखा जाता है कि आये दिन सड़क दुर्घटना होती है और जान-माल की गति हो रही है। इससे न केवल घायल या मृत्यु हो रही है बल्कि ऐसी दुर्घटना से देशको भी क्षति पहुंचाता है। सड़क दुर्घटना से बचाव अति आवश्यक है। खूंटी के हेडक्वार्टर डीएसपी अखिल नितेश कुजूर ने बताया कि खूँटी में वाहन परिचालन को लेकर जागरूकता की कमी महसूस हो रही है। इसीलिए जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है हेलमेट तो बहुत छोटी सी चीज है इसके अलावे ओवर स्पीड से लोग वाहन चलाते हैं। जिस कारण सड़क दुर्घटना होती है।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर बांधडीह में लगे लोटा बुरु मेला में लोगों की उमड़ी भीड़

बिभा संवाददाता

सिल्ली। हर बर्ष की तरह इस बर्ष भी राष्ट्रीय युवा दिवस व मकर संक्राति के शुभ अवसर पर बांधडीह टुंगरीटांड बनधार की ओर से लोटा बुरु मेला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मेला कमिटी की ओर से स्कूली बच्चों का कला, खेल खुद प्रतियोगिता, मैराथन दौड़, टुसु प्रतियोगिता तथा पातानाच का आयोजन किया गया था। मुख्य अतिथि विधायक अमित महतो ने प्रतियोगिता में चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। विधायक ने कहा महान व्यक्तित्व जो न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं जिन्हें पूरी दुनिया स्वामी विवेकानंद के नाम से जानती है और आज के दिन भव्य आयोजन के लिए तमाम लोटा बांधडीह टुंगरीटांड एंव बनधार की ग्रामवासी को नव बर्ष की शुभकामनाएं देता हुँ। विधायक ने कहा हमारा हमेशा से प्रयास रहा है की क्षेत्र का विकास शांति और बिना किसी भेदभाव का हो, ग्रामीण एकजुट होकर क्षेत्र का विकास के लिए योजना बनाएं। वही इस आयोजन को सफल बनाने में मेला कमिटी के अध्यक्ष विरेन महतो सचिव मुकेश महतो कोषाध्यक्ष विजय महतो रामपदो महतो हरे कृष्ण महतो लोटा पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि रवींद्रनाथ मुंडा मनोज महतो आदि का सराहनीय योगदान रहा।

सोनाहातू पुलिस ने दो एकड़ में लगे पोस्ते की खेती को नष्ट किया

सोनाहातू। रांची के एसएसपी और ग्रामीण एसपी के निर्देशानुसार बुंडू डीएसपी द्वारा गठित टीम में सोनाहातू थाना प्रभारी चंदन कुमार के नेतृत्व में रविवार को थाना क्षेत्र के हेसाडीह पंचायत अंतर्गत बांधडीह गांव के जंगल के बीच दो एकड़ में लगे पोस्ते के पौधे को नष्ट किया। थाना प्रभारी चंदन कुमार ने कहा कि अवैध खेती और मादक पदार्थों के व्यापार में संलिप्त पाए जाने वालों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। किसी भी संदिग्ध गतिविधि में शामिल लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। जिसने पोस्ते की खेती किया है पहचान किया गया है। जल्द करवाई होगी।

बाघवार के बच्चों ने हुंडरू जलप्रपात की खूबसूरती का लिया आनंद

बिभा संवाददाता

चान्हो। प्रखंड स्थित बघवार एकेडमी ने रांची से लगभग 40 किमी दूर चान्हो में स्थित एक प्रतिष्ठित 10+2 स्कूल है, ने अपनी सीनियर कक्षाओं (कक्षा 9 से 12) के छात्रों के लिए झारखंड के सबसे सुंदर पर्यटन स्थलों में से एक, हुंडरू जलप्रपात, की एक यादगार शैक्षणिक यात्रा का आयोजन किया। यात्रा सुबह 10:00 बजे स्कूल परिसर से शुरू हुई, जिसमें 83 छात्र और लगभग 30 शिक्षण व गैर-शिक्षण स्टाफ शामिल थे। प्रस्थान से पहले, स्कूल के निदेशक अशोक बाघवार ने छात्रों को अनुशासन संबंधी निर्देश दिए और उन्हें एक सुरक्षित और आनंदमय यात्रा के लिए शुभकामनाएं दीं।

हुंडरू जलप्रपात, जो स्कूल से लगभग ढाई घंटे की दूरी पर है, तक का सफर उत्साह से भरा था। छात्रों और शिक्षकों ने रास्ते में गाने गाए, नृत्य किया और यात्रा का पूरा आनंद लिया। गंतव्य पर पहुंचने के बाद, समूह को बेहतर समन्वय और सुरक्षा के लिए 10-10 छात्रों की टीमों में विभाजित किया गया, जिसमें प्रत्येक टीम के साथ 2 शिक्षक मौजूद थे।

हुंडरू जलप्रपात स्वर्णरेखा नदी पर निर्मित है, जो 320 फीट की ऊंचाई से गिरता है और इसे झारखंड के सबसे ऊँचे जलप्रपातों में से एक माना जाता है। इसके आधार पर एक पूल है, जो एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल के रूप में जाना जाता है। जलप्रपात के आधार तक पहुंचने के लिए 750 सीढ़ियां उतरनी पड़ती हैं, जो रोमांचक और चुनौतीपूर्ण अनुभव था।

सभी छात्रों और शिक्षकों ने प्रकृति की अद्भुत खूबसूरती का आनंद लिया और ढाई घंटे तक वहां समय बिताया। हालांकि, 750 सीढ़ियां चढ़कर ऊपर लौटना थका देने वाला था, फिर भी सभी का उत्साह और जोश बरकरार रहा।

इस दौरान, स्कूल के रसोइयों ने सभी के लिए स्वादिष्ट भोजन तैयार किया, जिसे बच्चों और स्टाफ ने बड़े चाव से खाया। दिन का समापन एक और मनोरंजक बस यात्रा के साथ हुआ, जिसमें गाने, नृत्य और हंसी-खुशी का माहौल बना रहा। शाम 5:30 बजे वापसी यात्रा शुरू हुई, और रात 9:00 बजे समूह स्कूल पहुंचा। इसके बाद सभी छात्रों को स्कूल बसों के माध्यम से उनके घरों तक सुरक्षित पहुंचाया गया। इस यात्रा को सफल बनाने में शिक्षण और गैर-शिक्षण स्टाफ का समर्पण और निदेशक अशोक बाघवार तथा प्रधानाचार्य अरुण बाघवार का मार्गदर्शन अहम रहा। हर साल सीबीएसई पाठ्यक्रम के तहत और अभिभावकों के अनुरोध पर ऐसी शैक्षणिक यात्राओं का आयोजन किया जाता है, जो छात्रों के मन और आत्मा को तरोताजा करने के साथ-साथ उन्हें प्रकृति से जोड़ने का मौका देती हैं। इस साल की हुंडरू जलप्रपात यात्रा सभी के लिए एक अविस्मरणीय और समृद्ध अनुभव साबित हुई।

हज़ारीबाग जिले में नुक्कड़ नाटक का हुआ आयोजन

हजारीबाग। हज़ारीबाग जिले में सडक सुरक्षा माह 2025 बड़े ही उत्साह से मनाया जा रहा है तथा 01 जनवारी से प्रत्येक दिन अलग अलग तरह के जागरूकता बढ़ाने सम्बन्धी कार्यक्रम चलाया जा रहा है इसी के तहत आज जिला परिवहन कार्यालय सडक सुरक्षा कोषांग हज़ारीबाग के द्वारा शाहर् के विभन्न स्थानों मे सडक सुरक्षा जागरूकता बढ़ाने हेतु नुक्कड़ नाटक का आयोजन कराया जा रहा है। ऐसा हि नुक्कड़ नाटक सरकारी बस स्टैंड और डिस्ट्रिक्ट मोड़ पुराना समाहरणालय गेट के सामने आयोजित की गयी है।

दिव्यांग तीरंदाज झोंगो पाहन ने राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में रजत पदक किया अपने नाम

बिभा संवाददता

खूँटी। जिले के सुभाषचंद्र बोस आवासीय विद्यालय का विद्यार्थी एक दिव्यांग होनहार तीरंदाज झोंगो पाहन ने राष्ट्रीय दिव्यांग तीरंदाजी प्रतिस्पर्धा में रजत पदक अपने नाम कर लिया है। जो कि राजस्थान के जयपुर में चल रहा राष्ट्रीय दिव्यांग तीरंदाजी प्रतिस्पर्धा में खूँटी से प्रधान और लक्ष्मी परधिया का चयन हुआ था। जिसमें झोंगो ने 50 मीटर पर निशाना साधते हुए कई देश भर से आये सैकड़ों प्रतिभागियों को पीछे छोड़ते हुए रजत पदक पर कब्जा जमा लिया है और आगे भी उसका प्रयास जारी हैं। इस जीत पर खूँटी के तीरंदाजी के शौकीन और क्षेत्र के लोगों में उत्साह का वातावरण है। वहीं खूँटी प्रखंड विकास पदाधिकारी ज्योति कुमारी ने झोंगो के इस जीत पर शुभकामनाएं व बधाई दी है। उन्होंने कहा कि झोंगो का इस प्रकार आगे आना दिव्यांग जनों ही नहीं बल्कि सभी के लिए सीख है कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। अगर मन बना लें तो लक्ष्य प्राप्त करने में आसानी हो जाती है। वहीं विद्यालय की वार्डन प्रतिमा कश्यप ने उसे आगे बढ़ने और अच्छा उपलब्धि प्राप्त करने का आशिर्वाद दी। साथ ही उन्होंने कहा कि इसपर झोंगो का लगन और मेहनत का प्रतिफल है साथ ही उसके कोच आशीष कुमार का साथ मिलना ऐसे मेडल प्राप्त करने में काफी योगदान रहा। वहीं झोंगो पाहन ने अपने प्रशिक्षक आशीष कुमार, वार्डन मेडम प्रतिमा कश्यप व प्रखंड विकास पदाधिकारी ज्योति कुमारी का आभार प्रकट किया है।

पुलिस एसोसिएशन का चुनाव संपन्न, 198 मतदाताओं ने चुनाव प्रक्रिया में लिया भाग

बिभा संवाददाता

लोहरदगा। जिला पुलिस अधिकारी मेंस एसोसिएशन का चुनाव हुआ संपन्न अध्यक्ष चुने गए पुअनि जयदीप भगत। जिले के सदर थाना परिसर स्थित अफसर क्लब में रविवार सुबह से ही पुलिस मेंस एसोसिएशन ऑफिसर विंग का चुनाव कराया जा रहा था जिसे चुनाव पदाधिकारी धर्मेंद्र कुमार सिंह, रांची के क्षेत्रीय मंत्री राजकुमारलकड़ा, लातेहार जिलाअध्यक्ष पंकज कुमार, लातेहार जिला सचिव जगत प्रकाश, लातेहार जिला उपाध्यक्ष सुरेंद्र महतो की उपस्थिति में चुनाव शांति पूर्ण रूप से संपन्न कराया गया। चुनाव संपन्न होने के बाद विजय उम्मीदवारों की नामो की घोषणा कर दिया गया है। जिसमें पुअनि जगदीप भगत ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी शिवशंकर मुरमू को 71 मतों से पराजित कर अध्यक्ष चुने गए। वहीं सचिव पद पर मुरारी कुमार निर्विरोध चुन लिया गया। उपाध्यक्ष पद पर अपने निकटतम प्रतिद्वंदी रंजन कुमार सिंह को पराजित कर पुअनि महेंद्र प्रसाद यादव 47 मतों से विजयी रहे। पुअनि संजय तुरिया ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी किशोर दास को 27 मतों से पराजित कर कोषाध्यक्ष पद पर काबिज हुए। वहीं संयुक्त मंत्री के पद पर अपने निकटतम प्रतिद्वंदी मनोज कुमार सिंह को 22 मतों से पराजित कर पुअनि ज्ञास खान संयुक्त मंत्री बने। पुलिस एसोसिएसन के 263 मतदाताओं में से कुल 198 मतदाता चुनाव प्रक्रिया में भाग लिया। इस मौके पर डीएसपी समीर कुमार तिर्की समय तो सभी थाना के पुलिस कर्मी मौजूद थे।

श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा के प्रथम वर्षगांठ धूमधाम से मनाया

बिभा संवाददाता

लातेहार। श्रीराम लला का जन्म भूमि अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा का प्रथम वर्षगांठ द्वादश प्रतिष्ठा का त्योहार पर विश्व हिन्दु परिषद बजरंग दल मातृ शक्ति दुर्गावाहिनी के द्वारा बडे ही धूमधाम से अमवाटीकर हनुमान महावीर मंदिर में 24 घंटे का अखंड कीर्तन के पश्चात विशाल भंडारा उसके बाद झांकी के साथ भव्य शोभा यात्रा पुरे लातेहार नगर में भ्रमण किया इस कार्यक्रम में प्रमुख तौर विश्व हिन्दु परिषद के संरक्षक सह समाज सेवी रामनाथ अग्रवाल, विहिप जिला अध्यक्ष श्याम अग्रवाल, जिला मंत्री संजय तिवारी, जिला उपाध्यक्ष रविंद्र प्रसाद गुप्ता, जिला सेवा सह प्रमुख बिपिन सिंह, बालूमाथ प्रखंड अध्यक्ष लालदेव गंझु, मातृ शक्ति जिला संजोजिक मंजु सिंह, समाजिक समरसता अवधेश पाण्डेय, मनमोहन प्रसाद, नगर संजोजक गौरव महलका, नगर मंत्री विष्णु सोनी का प्रमुख योगदान रहा और इस पुरे कार्यक्रम में लातेहार के सामाजिक और राजनीतिक लोग का भी बहुत गरिमामय उपस्थिती रही जिसमें भारतीय जनता पार्टी के पुर्व जिला अध्यक्ष राजधानी यादव, वर्तमान भाजपा अध्यक्ष पंकज सिंह, जिला मंत्री अमलेश कुमार सिंह अन्य बहुत से गणमान्य लोग का साथ और सहयोग रहा।

सरस्वती पूजा को लेकर मूर्तिकार बनाने लगे माँ सरस्वती की प्रतिमा

खूँटी। बसंत पंचमी और कुछ ही दिन बाकी रह गया है। वहीं खूँटी में विद्या की देवी माँ सरस्वती की पूजा को लेकर जगह जगह मूर्तियाँ बनना शुरू हो गया है। खूँटी में मूर्तिकार तरह-तरह के आकार और रुप का माँ सरस्वती की प्रतिमा बनाने लगे हैं। मिट्टी पुआल व लकड़ी से निर्मित छोटे से बड़े आकार की मूर्तियाँ बनाई जा रही है। ताकि लोग अपने पसंद से पूजा करने के लिए माँ सरस्वती की प्रतिमा ले जा सकें। मूर्तिकार चिरंजी सूत्रधर ने बताया कि वे लोग 8 कारीगर दिन रात मेहनत कर रहे हैं मिट्टी, पुवाल और लकड़ी जुगाड़ करके सुबह से लेकर शाम तक मूर्ति बनाने में समय देते हैं। और अलग-अलग आकार के मूर्तियाँ बनाई जा रहे हैं।

कांग्रेस ने किया जय बापू , जय भीम, जय संविधान सम्मान यात्रा का आयोजन

बिभा संवाददाता

लोहरदगा। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार लोहरदगा जिला कांग्रेस कमेटी एवं कैरो प्रखंड कांग्रेस कमेटी के संयुक्त तत्वाधान में जिला अध्यक्ष सुखैर भगत के नेतृत्व में जय बापू, जय भीम, जय संविधान सम्मान यात्रा का आयोजन कैरो प्रखंड के नया टोली से होकर उतका तक पदयात्रा किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, झारखंड प्रदेश कांग्रेस के सह प्रभारी श्री बेला प्रसाद, पूर्व राज्यसभा सांसद प्रदीप बालमुचू, समेत प्रदेश स्तर एवं जिला स्तर के कई नेता सम्मिलित हुए, सर्वप्रथम नेताओं द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र एवं संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि देते हुए पदयात्रा प्रारंभ किया गया। पदयात्रा में कांग्रेसियों ने संविधान की रक्षा, और डॉ आंबेडकर और बापू के प्रति सम्मान को लेकर जोरदार नारा लगाते हुए आवाज बुलंद किया। ग्राम उतका में समापन के पूर्व सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित आम जनता एवं कांग्रेसियों को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश जी ने कहा कि केंद्रीय मंत्री अमित शाह के द्वारा संविधान रचियेता डॉ भीमराव अंबेडकर के प्रति संसद में दिया गया बयान काफी निंदनीय है भाजपा आरएसएस शुरू से ही देश के संविधान के खिलाफ है और केन्द्र के सत्ता में आने के बाद रह रहकर संविधान को बदलना चाहते हैं। और आम लोगों का संवैधानिक अधिकार छीनना चाहते हैं इस देश के शोषित वंचित दलित आदिवासी अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा समाज के लोगों को एक सूत्र में बांधकर संविधान हमें गर्व से जीने का अधिकार देता है। डॉ अंबेडकर का अपमान कर भाजपा आरएसएस वाले समय-समय पर अपने मंशा को उजागर करते रहे हैं, हमें पूरे देश में आम लोगों को इस बात से अवगत कराना होगा और उनके चेहरे को बेनकाब करना होगा। सभा में उपस्थित लोगों ने संविधान की रक्षा का संकल्प लेते हुए ऐसी ताकतों से आम लोगों को सतर्क रहने का आग्रह किया।

आज की इस कार्यक्रम में झारखंड कांग्रेस के सह प्रभारी बेला प्रसाद, पूर्व राज्यसभा सांसद प्रदीप बालमुचू, जिला अध्यक्ष सुखैर भगत,हिंदू न्यास बोर्ड के अध्यक्ष जयशंकर पाठक , मीडिया प्रभारी सतीश पाल मुंजनी, प्रवक्ता रियाज अंसारी, अन्य कांग्रेसी मौजूद थे।

पुलिस एसोसिएशन का निर्वाचन खूँटी थाना परिसर में सम्पन्न

बिभा संवाददाता

खूँटी। जिला पुलिस एसोसिएशन का निर्वाचन रविवार को खूँटी थाना परिसर में हुआ। जिसका पूरा निर्वाचन मुख्य चुनाव अधिकारी विक्रांत कुमार मुंडा ने चुनाव सम्पन्न कराया। जिसमें सार्जेंट मेजर सोनाराम सोरेन निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए। साथ ही, निर्वाचन में एसोसिएशन के उपाध्यक्ष नवीन कुमार, सचिव सोनू कुमार ठाकुर, कोषाध्यक्ष जय कुमार और संयुक्त सचिव राहुल रंजन निर्वाचन में विजयी हुए। पुलिस एसोसिएशन के निर्विरोध निर्वाचित होने की घोषणा के बाद मुख्य चुनाव अधिकारी विक्रांत कुमार मुंडा ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया तथा उन सभी विजेताओं को माला पहनाकर सम्मानित किया गया। पुलिस एसोसिएशन के निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाने के बाद सार्जेंट मेजर सोनाराम सोरेन ने कहा कि पुलिस एसोसिएशन जिले के सभी पुलिस अधिकारियों को साथ लेकर कार्य किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पुलिस पदाधिकारियों का आवाज उठाने का काम करुंगा। जिसमें सभी की भलाई हो इसपर हमेशा खड़ा रहुंगा। तथा सामंजस्यता के साथ समस्याओं का निष्पादन किया जायेगा।

संपादकीय

सरकारों की गिरती साख

विश्व के अनेक देशों में अपनी ही सरकारों से जनता असंतुष्ट नजर आ रही है। ऐसे में हालात बद से बदतर हो रहे हैं और स्थिति गृहयुद्ध तक पहुंचती नजर आ रही है। इसके उदाहरण खोजने के लिए ज्यादा दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि भारत के पड़ोसी मुल्कों पर ही एक नजर दौड़ा ली जाए तो मालूम चल जाएगा कि सरकारों की साख किस कदर गिर चुकी है कि आवाम किसी बड़े युद्ध का आगाज करने से भी गुरेज नहीं कर रही है। मौजूदा स्थिति में बांग्लादेश और म्यांमार में गृहयुद्ध वाली स्थिति बनी हुई है। म्यांमार में तो शासन-प्रशासन अपने ही लोगों पर हवाई हमले करने को मजबूर है। म्यांमार में आन सान सू की सरकार के तख्तापलट के बाद से ही गृहयुद्ध की स्थिति बनी हुई है। ताजा घटनाक्रम में म्यांमार के रखाइन प्रांत में सैन्य सरकार की तरफ से किए गए हवाई हमले में 40 नागरिकों की मौत हुई है। इसकी जानकारी संयुक्त राष्ट्र ने भी दी और कहा कि दक्षिण-पूर्व एशियाई देश का यह गृह युद्ध अपने चौथे साल के करीब पहुंच गया है। इसी तरह पाकिस्तान में भी स्थिति अनकंट्रोल जैसी बनी हुई है। सरकार के खिलाफ पाकिस्तान में भी लगातार धरने-प्रदर्शन के साथ सेना व पुलिस पर हमले हो रहे हैं। जहां तक बांग्लादेश की बात है तो प्रधानमंत्री शेख हसीना के देश छोड़ने के बाद से ही स्थिति असामान्य बनी हुई है। अल्पसंख्यकों पर लगातार हमले हो रहे हैं और मौजूदा मोहम्मद यूनुस वाली सरकार के खिलाफ असंतोष बढ़ता ही चला जा रहा है। शासन-प्रशासन के खिलाफ जनता का खुला विरोध यह दिखाता है कि केवल सत्ता में बने रहना ही पर्याप्त नहीं होता है। सरकार की नीतियों से असंतोष पनप रहा है, भ्रष्टाचार और प्रशासनिक अक्षमता ने देश की स्थिति को गंभीर बना दिया है। यहां तक कि सत्ता से अलग होने के बाद भी हालात सामान्य नहीं हो पा रहे हैं। यह दर्शाता है कि लोकतंत्र और सुशासन के बिना जनता का विश्वास वापस पाना मुश्किल है। एक प्रकार से विश्व के कई देशों में सरकारों की गिरती साख और प्रशासन के प्रति जनता का गहराता अविश्वास एक गंभीर चुनौती के तौर पर उभरा है। म्यांमार, पाकिस्तान, और बांग्लादेश जैसे देशों में वर्तमान परिस्थितियां इस समस्या का जीवंत उदाहरण हैं। जहां एक ओर जनता सरकारों के खिलाफ आवाज उठा रही है, वहीं दूसरी ओर सरकारें इन विरोधों को दबाने के लिए कठोर कदम उठा रही हैं। ऐसे में यह सवाल उठना लाजमी है कि सरकारों की इस गिरती साख का असली जिम्मेदार कौन है? म्यांमार में चल रहे गृहयुद्ध ने प्रशासनिक ढांचे को तहस-नहस कर दिया है। सैन्य शासन द्वारा जनता के खिलाफ हवाई हमले और कठोर दमनकारी नीतियों ने स्थिति को और बिगाड़ दिया है।

महाकुंभ: दुनिया देखेगी दिव्य और भव्य आयोजन

लेखक

मुस्ताअली बोहरा

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

> समुद्र मंथन से अमृत कलश निकला जिसे पाने के लिए संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों पर गिरीं, हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक। यही स्थान महाकुंभ मेले के आयोजन के केंद्र बन गए। महाकुंभ मेला तब आयोजित किया जाता है जब सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रह विशेष खगोलीय स्थिति में होते हैं। इस विशेष समय पर त्रिवेणी संगम में स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। महाकुंभ, कुंभ और अर्धकुंभ के बारे में भी जानना जरूरी है। कुंभ मेला हर तीन साल में एक बार आयोजित होता है।

महाकुंभ मेला संस्कृति, धर्म, परंपराओं, सांस्कृतिक एकता और आस्था का प्रतीक है। महाकुंभ का पहला ऐतिहासिक उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांतों में मिलता है। महाकुंभ मेले को यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया गया है। यह आयोजन भारत की विविधता, आस्था और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पेश करता है। मुगल काल के दौरान बादशाह अकबर के ज़माने में भी महाकुंभ के दौरान खास इंतेजामात किए जाते थे। महाकुंभ मेला हर 12 साल में एक बार चार अलग-अलग स्थानों पर आयोजित किया जाता है, हरिद्वार, प्रयागराज (इलाहाबाद), उज्जैन और नासिक। वर्ष 2025 का महाकुंभ प्रयागराज में आयोजित होने वाला है, जहां गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती नदियों का संगम होता है। महाकुंभ मेले का इतिहास हजारों साल पुराना है। यह मेला वैदिक काल से चला आ रहा है, जब देवताओं और असुरों के बीच समुद्र मंथन हुआ था। समुद्र मंथन से अमृत कलश निकला जिसे पाने के लिए संघर्ष हुआ। इस संघर्ष में अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों पर गिरीं, हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक। यही स्थान महाकुंभ मेले के आयोजन के केंद्र बन गए। महाकुंभ मेला तब आयोजित किया जाता है जब सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति ग्रह विशेष खगोलीय स्थिति में होते हैं। इस विशेष समय पर त्रिवेणी संगम में स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। महाकुंभ, कुंभ और अर्धकुंभ के बारे में भी जानना जरूरी है। कुंभ मेला हर तीन साल

में एक बार आयोजित होता है। अर्ध कुंभ मेला छ साल में एक बार और पूर्ण कुंभ मेला 12 साल में एक बार आयोजित किया जाता है। 12 कुंभ मेला पूर्ण होने पर एक महाकुंभ मेले का आयोजन होता है। इससे पहले महाकुंभ प्रयागराज में वर्ष 2013 में आयोजित हुआ था।

प्रयागराज में महाकुंभ मेला 13 जनवरी 2025 से 26 फरवरी 2025 तक आयोजित होने जा रहा है। प्रयागराज को तीर्थराज के नाम से भी जाना जाता है। प्रयागराज महाकुंभ और भी खास होगा क्योंकि यह 4000 हेक्टेयर में फैला हुआ है। प्रयागराज में 2019 कुंभ मेले में क्षेत्रफल 3200 हेक्टेयर था जो 2025 में बढ़ गया है। खास बात ये है कि महाकुंभ इतना बड़ा आयोजन है कि अंतरिक्ष से भी श्रद्धालुओं की भीड़ को देखा जा सकता है। इस कुंभ मेले में 40 करोड़ श्रद्धालुओं के शामिल होने की उम्मीद है। महाकुंभ में किन्नर अखाड़े के अनुयायी भी खास आकर्षण हैं। इसके अलावा दांडी संन्यासी, अखाड़ों के महामंडलेश्वर, योगी और वैष्णव संत भी महाकुंभ में शामिल हो रहे हैं। कल्पवासी पूजा एक बहुत ही अनोखा समारोह है जिसमें कल्पवासी पवित्र भजन गाते हैं और रेत में धूनी या अगरबत्ती जलाते हैं। महाकुंभ में 13 अखाड़े भाग ले रहे हैं और उनके करीब 15 लाख अनुयायी कुंभ मेला मैदान में तंबुओं में डेरा डाल चुके हैं। महाकुंभ में अक्षयवट वृक्ष भी आस्था का केन्द्र बना हुआ है। ये एक बहुत पुराना अंजीर का पेड़ है जो प्रयागराज का मुख्य आकर्षण भी है। यह वृक्ष हिंदुओं के लिए अत्यंत पवित्र वृक्ष है और इसका उल्लेख हिंदू धर्मग्रंथों में भी मिलता है। ऋषि भारद्वाज का आश्रम भी एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण हैं। इसके अलावा संगम स्थल, संकटमोचन हनुमान मंदिर, वेणी माधव मंदिर, तक्षकेश्वर नाथ मंदिर, शिवकुटी, नारायण आश्रम, पत्थर गिरजाघर, प्रयागराज किला, शंकर विमान मंडपम, ललितादेवी मंदिर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, गंगा पुस्तकालय, दशाश्वमेध मंदिर, श्री अखिलेश्वर महादेव मंदिर, नागवासुकी मंदिर, अलोपी देवी मंदिर, खुसरोबाग, कल्याणी देवी, काली बाड़ी, मिंटो पार्क, सार्वजनिक पुस्तकालय, आनंद भवन और अल्फ्रेड पार्क भी यहां आने वाले भक्तों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र होते हैं। महाकुंभ मेला 2025 के लोगो पर टैगलाइन सर्वसिद्धिप्रद कुंभ है।

कुंभ का आयोजन हर 12 साल में भारत के 4 धार्मिक शहरों हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक में होता है। दुनिया के सबसे पुराने और सबसे बड़े धार्मिक आयोजन कुंभ का इतिहास सदियों पुराना है। मुगल काल में भी अकबर के समय इस आयोजन के लिए खास इंतेजामात किए जाते थे। इतिहासकार डॉ हेरम्ब चतुर्वेदी अपनी किताब कुंभ-ऐतिसाहिक वांग्मय में मुगल काल में हुए कुंभ के आयोजन का जिक्र किया है। उनके अनुसार बादशाह अकबर के शासनकाल में साल 1589 में कुंभ के रखरखाव पर 19 हजार से ज्यादा मुगलियां सिक्के खर्च किए गए थे। इसी साल इस आयोजन से 41 हजार सिक्कों की आमदनी हुई थी। बादशाह अकबर ने कुंभ मेले की व्यवस्था की देखरेख के लिए दो अफसर भी नियुक्त किए थे। एक अफसर को मीर ए बहर कहा जाता था और दूसरे अफसर को मुस्द्दी कहा जाता था। इन अफसरों का काम भक्तों के लिए बुनियादी सहुलियतें मुहैया कराना, कुंभ के दौरान साफ सफाई करवाना, घाटों की साफ सफाई और आने वाले लोगों को सुरक्षा उपलब्ध करवाना था। यहां ये बताना लाजमी होगा कि इस बार भी महाकुंभ से सरकार को खासी आमदनी होने की उम्मीद है।

लोहड़ी : खुशियों का संदेशवाहक पर्व

लेखक

योगेश कुमार गोयल

उत्तर भारत में मनाया जाने वाला प्रमुख पर्व है लोहड़ी। पंजाब, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश में खासतौर से पंजाबी समुदाय में तो इस पर्व पर एक अलग ही उत्साह देखा जाता है। यह ऐसा त्यौहार है, जो आधुनिक युग के व्यस्तता भरे माहौल में सुकून भरे कुछ पल लेकर आता है और लोग सारी व्यस्तताएं भूलकर भरपूर जोश और उल्लास के साथ इस पर्व का भरपूर आनंद लेते हैं। पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में तो लोहड़ी पर्व मकर संक्रांति के रूप में ही मनाया जाता है। सिंधी समाज में भी मकर संक्रांति से एक दिन पहले लोहड़ी के रूप में 'लाल लाही' नामक पर्व मनाया जाता है। लोहड़ी को लेकर कुछ लोककथाएं भी प्रचलित हैं। मान्यता है कि कंस ने इसी दिन लोहिता नामक एक राक्षसी को श्रीकृष्ण का वध करने के लिए भेजा था, जिसे श्रीकृष्ण ने खेल-खेल में ही मार डाला था और उसी घटना की स्मृति में यह पर्व मनाया जाने लगा। लोहड़ी पर अग्नि प्रज्जवलित करने के संबंध में एक लोककथा यह भी है कि दक्ष प्रजापति की पुत्री सती के योगाग्नि दहन की स्मृति में ही इस दिन अग्नि प्रज्जवलित की जाती है। लोहड़ी को लेकर सर्वाधिक प्रचलित कथा दुल्ला भट्टी नामक डाकू से संबंधित रही है, जिसे 'पंजाबी रॉबिनहुड' का दर्जा प्राप्त है।

जिस प्रकार होली जलाई जाती है, ठीक उसी प्रकार लकड़ियां एकत्रित कर लोहड़ी के अवसर पर अलाव जलाये जाते हैं और अग्नि का तिलों से पूजन किया जाता है। जिस दिन यह पर्व मनाया जाता है, उस दिन कड़ाके की ठंड होती है और उत्तर भारत में अधिकांश जगहों पर घने कोहरे के बीच तापमान प्रायः शून्य से पांच डिग्री के बीच होता है लेकिन इतनी ठंड के बावजूद इस पर्व के प्रति लोगों का उत्साह देखते बनता है। लोहड़ी के पावन अवसर पर लोग घरों के बाहर अलाव जलाकर यह पर्व धूमधाम से मनाते हैं। इस पर्व का संबंध उस उत्सव से भी माना गया है, जिसमें सर्दी को अलविदा कहते हुए सूर्यदेव का आह्वान करते हुए कहा जाता है कि वह इस माह अपनी किरणों से पृथ्वी को इतना गर्म कर दे कि ठंड से किसी को कोई नुकसान न पहुंचे और लोग आसानी से सर्दी के मौसम का मुकाबला कर सकें। माना जाता है कि इसी दिन से सर्दी कम होने लगती है। लोग अपने घरों के बाहर अलाव जलाकर ठंड से बचाव करने के साथ-साथ अग्नि की पूजा भी करते हैं ताकि उनके घर में अग्निदेव की कृपा से सुख-समृद्धि का साम्राज्य स्थापित हो सके।

हरियाणा व पंजाब में जिस घर में नई शादी हुई हो अथवा संतान (लड़के) का जन्म हुआ हो या शादी की पहली वर्षगांठ का मौका हो, ऐसे परिवारों में लोहड़ी का विशेष महत्व होता है। इन परिवारों में लोहड़ी के अवसर पर उत्सव जैसा माहौल होता है। आसपास के लोगों के अलावा रिश्तेदार भी इस उत्सव में सम्मिलित होते हैं। घर में अथवा घर के बाहर खुले स्थान पर अग्नि जलाकर लोग उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे होकर आग सेंकते हुए अग्नि में मूंगफली, गुड़, तिल, रेवड़ी, मक्का के भुने हुए दानों इत्यादि की आहूति देते हैं और रातभर भंगड़ा, गिद्धा करते हुए मनोरंजन करते हैं तथा बधाई देते हैं।

लोहड़ी का संबंध सुन्दरी नामक एक ब्राह्मण कन्या और दुल्ला भट्टी नामक कुख्यात डाकू से जोड़कर देखा जाता रहा है। दुल्ला भट्टी अमीरों का धन लूटकर निर्धनों में बांट दिया करता था। कहा जाता है कि गंजीबार क्षेत्र, जो इस समय पाकिस्तान में है, में एक ब्राह्मण रहता था, जिसकी सुन्दरी नामक एक बहुत खूबसूरत बेटी थी, जो इतनी खूबसूरत थी कि उसके सौन्दर्य की चर्चा गली-गली में होने लगी थी। जब उसके बारे में गंजीबार के राजा को पता चला तो उसने ठान लिया कि वह सुन्दरी को अपने हरम की शोभा बनाएगा। तब उसने सुन्दरी के पिता को संदेश भेजा कि वह अपनी बेटी को उसके हरम में भेज दे। इसके लिए ब्राह्मण को तरह-तरह के प्रलोभन भी दिए मगर ब्राह्मण अपनी बेटी को राजा की रखैल नहीं बनाना जाता था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? जब उसे कुछ नहीं सूझा तो उसे जंगल में रहने वाले कुख्यात डाकू दुल्ला भट्टी का ख्याल आया, जो गरीबों व शोषितों की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहता था। घबराया ब्राह्मण अपनी बेटी सुन्दरी को लेकर उसी रात उसके पास पहुंचा और विस्तार से सारी बात बताई। दुल्ला भट्टी ने ब्राह्मण की व्यथा सुन उसे सांत्वना दी और रात को ही एक योग्य ब्राह्मण लड़के की तलाश कर सुन्दरी को अपनी ही बेटी मानकर उसका कन्यादान अपने हाथों से करते हुए उस युवक के साथ सुन्दरी का विवाह कर दिया।

गंजीबार के राजा को इसकी जानकारी मिली तो वह बौखला उठा। उसके आदेश पर उसकी सेना ने दुल्ला भट्टी के ठिकाने पर धावा बोल दिया किन्तु दुल्ला भट्टी और उसके साथियों ने राजा को बुरी तरह धूल चटा दी। दुल्ला भट्टी के हाथों गंजीबार के शासक की हार होने की खुशी में गंजीबार में लोगों ने अलाव जलाए और दुल्ला भट्टी की प्रशंसा में गीत गाकर भंगड़ा डाला। कहा जाता है कि तभी से लोहड़ी के अवसर पर गाए जाने वाले गीतों में सुन्दरी व दुल्ला भट्टी को विशेष तौर पर याद किया जाने लगा।

लोहड़ी से पहले ही बच्चे इकट्ठे होकर लोहड़ी के गीत गाते हुए घर-घर जाकर लोहड़ी मांगने लगते हैं। इस दिन उत्सव के लिए लकड़ियां व उपले एकत्र करने के लिए भी बच्चे कई दिन पहले ही जुट जाते हैं। वैसे समय बीतने के साथ-साथ अब घर-घर से लकड़ियां मांगकर लाने की परम्परा समाप्त होती जा रही है। बहुत से स्थानों पर लोग अब लकड़ियां व उपले बच्चों के जरिये मांग-मांगकर एकत्र कराने के बजाय खरीदने लगे हैं।

लोहड़ी के दिन सुबह से ही रात के उत्सव की तैयारियां आरंभ हो जाती हैं और रात के समय लोग अपने-अपने घरों के बाहर अलाव जलाकर उसकी परिक्रमा करते हुए उसमें तिल, गुड़, रेवड़ी, चिड़वा, पॉपकॉर्न इत्यादि डालते हैं और माथा टेकते हैं। उसके बाद अलाव के चारों ओर बैठकर आग सेंकते हैं। तब शुरू होता है गिद्दा और भंगड़ा का मनोहारी कार्यक्रम, जो रात्रि में देर तक चलता है और कहीं-कहीं तो पूरी-पूरी रात भी चलता है। अगले दिन प्रातः अलाव ठंडा होने पर मौहल्ले के सभी लोग इसकी राख को 'ईश्वर का उपहार' मानते हुए अपने-अपने घर ले जाते हैं। यह पर्व सही मायने में समाज में प्रेम व भाईचारे की अनूठी मिसाल कायम करता है।

राशिफल

मेष अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। जल्दबाजी में कोई भूल संभव है।

वृष आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। दूसरों के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते हैं। भय तथा शत्रुहानि की आशंका रहेगी। एकाकी प्रवृति का त्याग करें।

मिथुन शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपत्ति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी।

कर्क नये-नये व्यापारिक अनुबंध होंगे। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। हरि करे सो खरी इसीलिए पूरे मनोयोग से कार्य करें।

सिंह कार्यक्षेत्र में खुशनुमा माहौल बनेगा। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर-प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए।

कन्या भावनाओं का उद्वेग बढ़ेगा। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी।

तुला योजना क्रियान्वन के लिए समय अच्छा व सकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। जीवन साथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। सफलता मिलेगी।

वृश्चिक व्यवसाय में प्रतिद्वंद्वी परेशान कर सकते हैं। समय व्ययकारी सिद्ध होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। दिमाग में निर्मूल तर्क-कुतर्क पैदा होंगे। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी।

धनु लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा।

मकर मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। पुराने मित्र के कारण कार्य बाधा हटेगी। शुद्ध गोचर का लाभ। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। आर्थिक लाभ हेतु किये गए कार्यों का तत्काल प्रतिफल मिलेगा।

कुंभ मनोरंजन के साधनों पर धन-व्यय होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंग। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा।

मीन सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होगी। अल्प-परिश्रम से ही लाभ होगा। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा।

मकर संक्रान्ति : आस्था और विश्वास का संगम है गंगासागर

लेखक

रमेश सर्राफ धमोरा

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

> मान्यता के अनुसार साल की 12 संक्रान्तियों में मकर संक्रान्ति का सबसे महत्व ज्यादा है। इस दिन सूर्य मकर राशि में आता हैं और इसके साथ देवताओं का दिन शुरू हो जाता है। गंगासागर के संगम पर श्रद्धालु समुद्र को नारियल और यज्ञोपवीत भेंट करते हैं। समुद्र में पूजन एवं पिण्डदान कर पितरों को जल अर्पित करते हैं। गंगासागर में स्नान-दान का महत्व शास्त्रों में विस्तार से बताया गया है। मेले में आये लोग कपिल मुनि के आश्रम में उनकी मूर्ति की पूजा करते हैं। मन्दिर में गंगा देवी, कपिल मुनि तथा भागीरथ की मूर्तियां स्थापित हैं।

भारत में सबसे पवित्र गंगा नदी, गंगोत्री से निकल कर पश्चिम बंगाल में सागर से मिलती है। गंगा का जहां सागर से मिलन होता है उस स्थान को गंगासागर के नाम से जाना जाता है। इस स्थान को सागरद्वीप के नाम से भी जाना जाता है। गंगासागर सिर्फ़ एक तीर्थस्थल नहीं है। यह भावना, संस्कृति, आस्था और विश्वास का संगम है। जीवन का उत्सव है। धर्म हमेशा से ही इस भूमि की संस्कृति में समाया हुआ है। कुम्भ मेले को छोड़कर देश में आयोजित होने वाले अन्य सभी मेलों में गंगासागर का मेला सबसे बड़ा मेला होता है। हिन्दू धर्मग्रन्थों में इसकी चर्चा मोक्षधाम के तौर पर की गई है। जहां मकर संक्रान्ति के मौके पर दुनिया भर से लाखों श्रद्धालु मोक्ष की कामना लेकर आते हैं और सागर-संगम में डुबकी लगाते है।

मान्यता के अनुसार साल की 12 संक्रान्तियों में मकर संक्रान्ति का सबसे महत्व ज्यादा है। इस दिन सूर्य मकर राशि में आता हैं और इसके साथ देवताओं का दिन शुरू हो जाता है। गंगासागर के संगम पर श्रद्धालु समुद्र को नारियल और यज्ञोपवीत भेंट करते हैं। समुद्र में पूजन एवं पिण्डदान कर पितरों को जल अर्पित करते हैं। गंगासागर में स्नान-दान का महत्व शास्त्रों में विस्तार से बताया गया है। मेले में आये लोग कपिल मुनि के आश्रम में उनकी मूर्ति की पूजा करते हैं। मन्दिर में गंगा देवी, कपिल मुनि तथा भागीरथ की मूर्तियां स्थापित हैं।

मकर संक्रांति पर जैसे ही सूर्य देव धनु

राशि से मकर राशि में प्रवेश करते हैं। लाखों तीर्थयात्री पवित्र संगम पर डुबकी लगाते हैं। गंगासागर में मकर संक्रांति के दिन स्नान करने का विशेष महत्व है। पौराणिक मान्यता है कि इस दिन गंगासागर में जो श्रद्धालु एक बार स्नान करता है उसे 10 अश्वमेध यज्ञ और एक हजार गाय दान करने का फल मिलता है। गंगासागर की तीर्थयात्रा सैकड़ों तीर्थयात्राओं के समान मानी जाती है।

पहले गंगासागर जाना हर किसी के लिये सम्भव नहीं होता था। तभी कहा जाता था कि सारे तीरथ बार-बार गंगासागर एक बार। हालांकि यह पुराने जमाने की बात है जब यहां सिर्फ जल मार्ग से ही पहुंचा जा सकता था। आधुनिक परिवहन साधनों से अब यहां आना सुगम हो गया है। पश्चिम बंगाल के दक्षिण चौबीस परगना जिले में स्थित इस तीर्थस्थल पर कपिल मुनि का मंदिर बना हुआ हैं। जिन्होंने भगवान राम के पूर्वज और इक्ष्वाकु वंश के राजा सगर के 60 हजार पुत्रों का उद्धार किया था। मान्यता है कि यहां मकर संक्रान्ति पर पुण्य-स्नान करने से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। सुन्दरवन निकट होने के कारण गंगासागर मेले को कई विषम स्थितियों का सामना करना पड़ता है। तूफान व ऊंची लहरें हर वर्ष मेले में बाधा डालती हैं। इस द्वीप में ही रॉयल बंगाल टाइगर का प्राकृतिक आवास है। यहां दलदल, जलमार्ग तथा छोटी छोटी नदियां, नहरें भी है। बहुत पहले इस स्थान पर गंगा जी की धारा सागर में मिलती थी। किंतु अब इसका मुहाना पीछे हट गया है। अब इस द्वीप के पास गंगा की एक बहुत छोटी सी धारा सागर से मिलती है। यह मेला पांच दिन चलता है। इसमें स्नान मुहूर्त तीन दिनों का होता है। यहां अलग से गंगाजी का कोई मंदिर नहीं है। मेले के लिये एक स्थान निश्चित है। कहा जाता है कि यहां स्थित कपिल मुनि का प्राचीन मंदिर सागर की लहरें बहा ले गयी थी। मन्दिर की मूर्ति अब कोलकाता में रखी रहती है और मेले से कुछ सप्ताह पूर्व यहां के पुरोहितों को पूजा अर्चना के लिये मिलती है।

गंगासागर में मकर संक्रान्ति से पन्द्रह दिन पहले ही मेला शुरू हो जाता है। मेले में दुनिया के विभिन्न भागों से तीर्थयात्री, साधु-संत आते हैं और संगम में स्नान कर सूर्यदेव को अर्घ्य देते हैं। मेले की विशालता के कारण लोग इसे मिनी कुंभ मेला भी कहते हैं। मकर संक्रान्ति के दिन यहां सूर्यपूजा के साथ विशेष तौर कपिल मुनि की पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि ऋषि-मुनियों के लिए गृहस्थ आश्रम या पारिवारिक जीवन वर्जित होता है। भगवान विष्णु जी के कहने पर कपिलमुनी के पिता कर्दम ऋषि ने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया। उन्होने विष्णु भगवान से शर्त रखी कि भगवान विष्णु को उनके पुत्र रूप में जन्म लेंना होगा। भगवान विष्णु ने शर्त मान ली फलस्वरुप कपिलमुनी का जन्म हुआ जिन्हें विष्णु का अवतार माना गया। आगे चलकर गंगा और सागर के मिलन स्थल पर कपिल मुनि आश्रम बनाकर तप करने लगे। इस दौरान राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ आयोजित किया। इस के बाद यज्ञ के अश्वों को स्वतंत्र छोड़ा गया। परिपाटी है कि ये जहां से गुजरते हैं वे राज्य अधीनता स्वीकार करते है। अश्व को रोकने वाले राजा को युद्ध करना पड़ता है। राजा सगर ने यज्ञ अश्वों के रक्षा के लिए उनके साथ अपने 60 हजार पुत्रों को भेजा। अचानक यज्ञ अश्व गायब हो गया। खोजने पर यज्ञ का अश्व कपिल मुनि के आश्रम में मिला। फलतः सगर पुत्र साधनरत ऋषि से नाराज हो उन्हे अपशब्द कहने लगे। ऋषि ने नाराज हो कर उन्हें शापित करते हुये अपने नेत्रों के तेज से भस्म कर दिया। मुनि के श्राप के कारण उनकी आत्मा को मुक्ति नहीं मिल सकी। काफी वर्षों के बाद राजा सगर के पौत्र राजा भागीरथ कपिल मुनि से माफी मांगने पहुंचे। कपिल मुनि राजा भागीरथ के व्यवहार से प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि गंगा जल से ही राजा सगर के 60 हजार मृत पुत्रों का मोक्ष संभव है। राजा भागीरथ ने अपने अथक प्रयास और तप से गंगा को धरती पर उतारा। अपने पुरखों के भस्म स्थान पर गंगा को मकर संक्रान्ति के दिन लाकर उनकी आत्मा को मुक्ति और शांति दिलाई। यही स्थान गंगासागर कहलाया। इसलिए यहां स्नान का इतना महत्व है।

गंगासागर का मेला 5 दिन तक चलता है। इस दौरान तीर्थयात्री लोग मुंडन, श्राद्ध, पिण्डदान और समुद्र में पितरों को जल अर्पित करते हैं। गंगासागर में कपिल मुनि का प्राचीन मंदिर था जोकि समुद्र में समा गया। 1973 में यहाँ कपिल मुनि का नया मंदिर बना जहां श्रद्धालु दर्शन करते हैं। गंगासागर गंगा नदी का एक छोटा डेल्टा द्वीप है जिसकी आबादी करीब 2 लाख और क्षेत्रफल 282 वर्ग किमी है। सागर द्वीप के एक ओर बंगाल की खाड़ी और दूसरी ओर बांग्लादेश है। इस सुंदर द्वीप के ज्यादातर क्षेत्र में घने जंगल है। कपिल मुनि के मंदिर, आश्रम के अलावा यहाँ महादेव मंदिर, शिव शक्ति-महानिर्वाण आश्रम, भारत सेवाश्रम संघ का मंदिर, धर्मशालायें भी है। गंगासागर वास्तव में एक टापू है जो गंगा नदी के मुहाने पर स्थित है। यहां बंगला भाषी आबादी रहती है। यह पूरी तरह से ग्रामीण ईलाका है। यहां आने वाले तीर्थयात्रियों के रहने के लिए यहां पर होटल, आश्रम व धर्मशालायें है। अब पूरे वर्ष यहां लोगों का आवागमन लगा रहता है।

मकर संक्रांति 2025 के शुभ मुहूर्त :

मकर संक्रांति के दिन की पूजा विधि और विशेष मुहूर्त

प्रतिवर्ष की तरह वर्ष 2025 में मकर संक्रांति पर्व 14 जनवरी को मनाया जा रहा है। धार्मिक मान्यता के अनुसार यह सूर्यभगवान और शनिदेव का त्योहार क्योंकि शनिदेव की की मकर राशि में सूर्यदेव का इस दिन गोचर होता है। और, इस दिन पर सूर्य दक्षिणायन पक्ष छोड़कर उत्तरायणपथ से निकलकर गमन करते हैं। इस दिन से दिन बड़े होने लगते हैं। इस दिन व्रत और दान यानी विशेष कर तिल के दान का काफी महत्व माना गया है। इस दिन पूजा करने के बाद जब तक गाय और गरीबों को दान नहीं दिया जाता, तब तक व्रत रखना चाहिए। इस दिन पूजा के बाद तिल-गुड़ की मिठाइयां बांटते हैं।

-सूर्य 14 जनवरी मंगलवार को सुबह 09:03 बजे मकर राशि में प्रवेश करेगा।
-मकर संक्रांति का पुण्य काल- सुबह 09:03 से शाम 05:46 तक।
-मकर संक्रांति का महा पुण्य काल- सुबह 09:03 से सुबह 10:48 तक।

शुभ मुहूर्त

अमृत काल: प्रात: 07:55 से सुबह 09:29 बजे तक।
अभिजीत मुहूर्त: दोपहर 12:09 से दोपहर 12:51 तक।
विजय मुहूर्त: दोपहर 02:15 से दोपहर 02:57 तक।
गोधूलि मुहूर्त: शाम 05:43 से शाम 06:10 तक।

मकर संक्रांति पूजा विधि

संक्रांति के दिन पुण्य काल में दान, स्नान व श्राद्ध करना शुभ माना जाता है।
इस दिन तीर्थों में या गंगा स्नान और दान करने से पुण्य प्राप्ति होती है।
मकर संक्रांति के दिन पावन नदियों में श्रद्धापूर्वक स्नान करें।
इसके बाद, पूजा-पाठ, दान और यज्ञ क्रियाओं को करें।
प्रात:नहा-धोकर भगवान शिव जी की पूजा तेल का दीपक जलाकर करें।
भोलेनाथ की प्रिय चीजों जैसे धतूरा, आक, बिल्व पत्र इत्यादि को अर्पित करें।
भविष्यपुराण के अनुसार सूर्य के उत्तरायन या दक्षिणायन के दिन संक्रांति व्रत करना चाहिए।
इस व्रत में संक्रांति के पहले दिन एक बार भोजन करना चाहिए।
संक्रांति के दिन तेल तथा तिल मिश्रित जल से स्नान करना चाहिए।
इसके बाद सूर्य देव की स्तुति करनी चाहिए। ऐसा करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।
संक्रांति के पुण्य अवसर पर अपने पितरों का ध्यान और उन्हें तर्पण अवश्य प्रदान करना चाहिए।
सूर्यदेव को अर्घ्य दें। आदित्य हृदय स्तोत्र का 108 बार पाठ करें।
मकर संक्रांति के शुभ मुहूर्त में सिद्ध सूर्य यंत्र को सूर्य मंत्र का जप करके पहनने से सूर्यदेव तरक्की की राह आसान बना देते हैं।
तिल युक्त खिचड़ी, रेवड़ी, लड्डू खाएं एवं दूसरों को भी खिलाएं।
ब्राह्मण को गुड़ व तिल का दान करें और खिचड़ी खिलाएं।
वेदों में वर्जित कार्य- जैसे दूसरों के बारे में गलत सोचना या बोलना, वृक्षों को काटना और इंद्रिय सुख प्राप्ति के कार्य इत्यादि कदापि नहीं करना चाहिए।
जरूरतमंद को कंबल, वस्त्र, छाते, जूते-चप्पल इत्यादि का दान करें।

मकर संक्रांति मंत्र

मकर संक्रांति के दिन सूर्यदेव की निम्न मंत्रों से पूजा करनी चाहिए
- ॐ सूर्याय नम:, ॐ आदित्याय नम:, ॐ सप्तार्चिषे नम:।

मकर संक्रांतिः इसी दिन खुलता है स्वर्ग का द्वार !

मूलतः सूर्य उपासना का अति प्राचीन पर्व मकर संक्रांति प्रतिवर्ष 14 या 15 जनवरी को पूरे उल्लास के साथ सम्पूर्ण भारत सहित कई अन्य देशों में भी किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। इसी दिन से वसंत ऋतु की शुरूआत होती है खरीफ की फसलें कट चुकी होती हैं और खेतों में रबी की फसलें लहलहा रही होती हैं खेत में सरसों के फूल मनमोहक लगते हैं। इसीलिए यह पर्व सम्पूर्ण भारत में फसलों के आगमन की खुशी के रूप में भी मनाया जाता है। मकर संक्रांति पर्व 14 अथवा 15 जनवरी को ही मनाए जाने के पीछे सूर्य की भूमिका का विशेष महत्व है। माना जाता है कि इसी दिन सूर्य देवता इन्द्रधनुषी रंग से मेल खाते अपने सात घोड़ों वाले रथ पर सवार होकर मकर राशि में प्रवेश करते हुए अपनी उत्तर दिशा की यात्रा आरंभ करते हैं जो हमारे जीवन को उजाले से भरने तथा अंधकार से छुटकारे का प्रतीक है। मान्यता है कि इसी दिन सूर्य अपने पुत्र शनिदेव से नाराजगी भुलाकर उनके घर गए थे। कहा जाता है कि महाराज भगीरथ ने अपने पूर्वजों के लिए मकर संक्रांति के ही दिन तर्पण किया था। मकर संक्रांति के दिन सूर्य की कक्षा में होने वाले परिवर्तन यानी सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण में आने को अंधकार से प्रकाश की ओर परिवर्तन माना जाता है। सूर्य प्राय: 14 या 15 जनवरी को ही मकर राशि में प्रवेश करता है इसीलिए उसी दिन मनाए जाने वाले पर्व को 'मकर संक्रांति' कहा जाता है।

यह हिन्दू पर्व भारत के अलग-अलग राज्यों में भी अलग-अलग तरीकों और नामों से मनाया जाता है। उत्तर भारत में इसे लोहड़ी खिचड़ी पर्व पतंगोत्सव इत्यादि नामों से जाना जाता है जबकि मध्य भारत में इसे संक्रांति कहा जाता है। दक्षिण भारत में यह त्यौहार 'पोंगल' उत्सव के रूप में मनाया जाता है। मकर संक्रांति को उत्तरायण माघी खिचड़ी पौष संक्रांति भोगाली बिहू शिशुर सेंक्रांत आदि नामों से भी जाना जाता है। नेपाल में इसे माघे संक्रांति या माघी संक्रांति व खिचड़ी संक्रांति श्रीलंका में पोंगल या उझवर तिरूनल बांग्लादेश में पौष संक्रांति थाईलैंड में सोंगकरन म्यांमार में थिंयान कम्बोडिया में मोहा संगक्रान तथा लाओस में पि मा लाओ नाम से मनाया जाता है। कहा जाता है कि मकर संक्रांति से ही दिन तिल-तिल करके बढ़ता है अर्थात् इस दिन से दिन की अवधि रात के समय से अधिक होने लगती है यानी दिन लंबे होने लगते हैं जिससे खेतों में बोए हुए बीजों को अधिक रोशनी अधिक उष्मा और अधिक ऊर्जा मिलती है जिसका परिणाम अच्छी फसल के रूप में सामने आता है। इसलिए इस अवसर का खासतौर से किसानों के लिए तो बड़ा महत्व है।

मकर संक्रांति में 'मकर' शब्द जहां मकर राशि को इंगित करता है वहीं 'संक्रांति' शब्द का अर्थ है संक्रमण अर्थात प्रवेश करना। मकर संक्रांति के दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है। एक राशि को छोड़कर दूसरी राशि में प्रवेश करने की इस विस्थापन क्रिया को ही संक्रांति कहा जाता है। सूर्य हर माह एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है अर्थात् एक-एक करके वर्षभर में कुल 12 राशियों में प्रवेश करता है। सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है तो उसे 'संक्रांति' कहा जाता है।

पृथ्वी की गोलाकार आकृति और अक्ष पर भ्रमण की वजह से दिन और रात होते हैं। जब पृथ्वी का कोई भाग सूर्य के सामने आता है उस समय वहां दिन होता है जबकि पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने नहीं होता वहां रात होती है। यह पृथ्वी की दैनिक गति कहलाती है। पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा 12 महीने में पूरी करती है जिसे पृथ्वी की वार्षिक गति कहा जाता है। इस वार्षिक गति के आधार पर ही दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग समय पर अलग-अलग ऋतुएं होती हैं।

हिन्दू शास्त्रों में मकर संक्रांति को पुण्यदायी पर्व माना गया है। इस दिन श्राद्धकर्म तथा तीर्थ स्नान करना फलदायी माना गया है। इस दिन लाखों श्रद्धालु विभिन्न तीर्थ स्थलों पर पवित्र स्नान करते हैं और तिल से बने पदार्थों का दान करते हैं। गंगासागर पर तो इस अवसर पर तीर्थस्नान के लिए लाखों लोगों का हुजूम उमड़ पड़ता है जो इस पर्व की महत्ता को परिलक्षित करता है। मान्यता है कि इस दिन देशभर के किसी भी पवित्र तीर्थ संगम स्थल या गंगा अथवा यमुना के तट पर स्नान करने से आध्यात्मिक शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक ऊर्जा मिलती है। कहा जाता है कि इसी दिन स्वर्ग का द्वार भी खुलता है और इस विशेष दिन को सुख-समृद्धि का दिन माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मकर संक्रांति के दिन पवित्र नदियों में स्नान दान पूजा इत्यादि करने से पुण्य प्रभाव हजारों गुना बढ़ जाता है। मकर संक्रांति पर्व 'पतंग महोत्सव' के रूप में भी मनाया जाता है। दरअसल इस दिन लोग न केवल अपने घर की छतों पर या खुले मैदानों में पतंग उड़ाते हैं बल्कि देश के कई हिस्सों में पतंग उडाने की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं। चूंकि कड़ाके की ठंड के इस मौसम में सूर्य का प्रकाश शरीर के लिए स्वास्थवर्द्धक स्फूर्तिदायक और त्वचा व हड्डियों के लिए अत्यधिक लाभदायक माना जाता है इसीलिए मकर संक्रांति के दिन पतंग उड़ाने के पीछे कुछ घंटे सूर्य के प्रकाश में बिताना मुख्य कारण माना जाता है।

मकर संक्रांति के बारे में 25 पौराणिक तथ्य और सत्य

सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने के समय को मकर संक्रांति कहते हैं। यह ऋतु परिवर्तन, फसल कटाई और बुवाई, उत्तरायण का त्योहार है लेकिन इसके साथ ही इसके साथ कई पौराणिक तथ्य भी जुड़ें हैं साथ ही कई परंपराएं भी इसके साथ जुड़ी हुई है। जानिए इस संबंध में 25 खास जानकारी।

1. हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार मकर संक्रांति के दिन सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण गति करने लगते हैं। हालांकि इस बात को लेकर मतभेद हैं।
2. इस दिन से देवताओं का छह माह का दिन आरंभ होता है, जो आषाढ़ मास तक रहता है।
3. इसी दिन सूर्य अपने पुत्र शनि के घर एक महीने के लिए जाते हैं, क्योंकि मकर राशि का स्वामी शनि है।
4. मकर संक्रांति के दिन ही गंगाजी भगीरथ के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होती हुई सागर में जाकर मिली थीं।
5. इसी दिन महाराज भगीरथ ने अपने पूर्वजों के लिए तर्पण किया था इसलिए मकर संक्रांति पर गंगासागर में मेला लगता है। इसीलिए तभी से तर्पण प्रथा भी प्रचलित हुई।
6. इस दिन भगवान विष्णु ने असुरों का अंत करके युद्ध समाप्ति की घोषणा की थी। उन्होंने सभी असुरों के सिरों को मंदार पर्वत में दबा दिया था। इसलिए यह दिन बुराइयों और नकारात्मकता को खत्म करने का दिन भी माना जाता है।
7. महाभारत काल में भीष्म पितामह ने अपनी देह त्यागने के लिए सूर्य के उत्तरायण होने का ही इंतजार किया था। कारण कि उत्तरायण में देह छोड़ने वाली आत्माएं या तो कुछ काल के लिए देवलोक में चली जाती हैं या पुनर्जन्म के चक्र से उन्हें छुटकारा मिल जाता है।
8. सूर्य की सातवीं किरण भारत वर्ष में आध्यात्मिक उन्नति की प्रेरणा देने वाली है। सातवीं किरण का प्रभाव भारत वर्ष में गंगा-जमुना के मध्य अधिक समय तक रहता है। इस भौगोलिक स्थिति के कारण ही हरिद्वार और प्रयाग में माघ मेला अर्थात मकर संक्रांति या पूर्ण कुंभ तथा अर्द्धकुंभ के विशेष उत्सव का आयोजन होता है।
9. सूर्य संस्कृति में मकर संक्रांति का पर्व ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, आद्यशक्ति और सूर्य की आराधना एवं उपासना का पावन व्रत है, जोतन-मन-आत्मा को शक्ति प्रदान करता है।
10. संत-महर्षियों के अनुसार इसके प्रभाव से प्राणी की आत्मा शुद्ध होती है। संकल्प शक्ति बढ़ती है। ज्ञान तंतु विकसित होते हैं। मकर संक्रांति इसी चेतना को विकसित करने वाला पर्व है। यह संपूर्ण भारत वर्ष में किसी न किसी रूप में आयोजित होता है।
11. विष्णु धर्मसूत्र में कहा गया है कि पितरों की आत्मा की शांति के लिए एवं स्व स्वास्थ्यवर्द्धन तथा सर्वकल्याण के लिए तिल के छः प्रयोग पुण्यदायक एवं फलदायक होते हैं- तिल जल से स्नान करना, तिल दान करना, तिल से बना भोजन, जल में तिल अर्पण, तिल से आहुति, तिल का उबटन लगाना।
12. सूर्य के उत्तरायण होने के बाद से देवों की ब्रह्म मुहूर्त उपासना का पुण्यकाल प्रारंभ हो जाता है। इस काल को ही परा-अपरा विद्या की प्राप्ति का काल कहा जाता है। इसे साधना का सिद्धिकाल भी कहा गया है। इस काल में देव प्रतिष्ठा, गृह निर्माण, यज्ञ कर्म आदि पुनीत कर्म किए जाते हैं। मकर संक्रांति के एक दिन पूर्व से ही व्रत उपवास में रहकर योग्य पात्रों को दान देना चाहिए।
13. रामायण काल से भारतीय संस्कृति में दैनिक सूर्य पूजा का प्रचलन चला आ रहा है। मकर संक्रांति सूर्यपूजा का विशेष दिन है। राम कथा में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा नित्य सूर्य पूजा का उल्लेख मिलता है।
14. प्रचलन से मकर संक्रांति के साथ तिल, गुड़, पतंग, गिल्ली डंडा खेलाना आदि कई परंपराएं जुड़ी चली गई।
15. मकर संक्रांति के दिन सूर्य को अर्घ्य देने का खास महत्व है।
16. मकर संक्रांति के दिन पवित्र नदी में स्नान का भी महत्व है।
17. मकर संक्रांति के दिन दान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।
18. मकर और कर्क संक्रांति को छोड़कर संक्रान्ति दिन या रात्रि दोनों में हो सकती है। दिन वाली संक्रान्ति पूरे दिन भर पुण्यकाल वाली होती है।
19. बारह संक्रांतियां 7 प्रकार की, 7 नामों वाली हैं, जो किसी सप्ताह के दिन या किसी विशिष्ट नक्षत्र के सम्मिलन के आधार पर मानी गई हैं। ये हैं- मन्दा, मन्दाकिनी, ध्वांक्षी, घोरा, महोदरी, राक्षसी एवं मिश्रिता।
20. नक्षत्र पर आधारित संक्रांतियां- ध्रुव, मृदु, क्षिप्र, उग्र, चर, क्रूर या मिश्रित कही गई है जिसका अलग अलग फल बताया जाता है।
21. कालांतार में संक्रांति का देवीकरण हो गया और वह साक्षात? दुर्गा कही जाने लगी। जैसे अब वो किसी न किसी वाहन, उप वाहन आदि पर सवार होकर आती है।
22. प्रत्येक संक्रंति के दान भी अलग अलग बताए गए हैं। मेष में भेड़, वृषभ में गायें, मिथुन में वस्त्र, भोजन एवं पेय पदार्थ, कर्क में घृतधेनु, सिंह में सोने के साथ वाहन, कन्या में वस्त्र एवं गौएं, नाना प्रकार के अन्न एवं बीज, तुला-वृश्चिक में वस्त्र एवं घर, धनु में वस्त्र एवं वाहन, मकर में ईंधन एवं अग्नि, कुम्भ में गौएं जल एवं घास, मीन में नए पुष्प दान किए जाने का उल्लेख मिलता है।
23. मकर संक्रांति के सम्मान में अब 3 दिनों या एक 1 दिन का उपवास भी रखा जाता है। जो व्यक्ति तीन दिनों का उपवास रखता है उसकी मनचाही इच्छा पूर्ण होती है। एक दिन का उपवास करने वाला पापों से मुक्ति हो जाता है।
24. मकर संक्रांति को हर प्रांत में अलग अलग रूप में मनाया जाता है। जैसे तमिलनाडु या संपूर्ण दक्षिण भारत में पोंगल के रूप में इसे मनाते हैं। पोंगल तमिल वर्ष का प्रथम दिवस है। असम में माघ बिहू के रूप में, पंजाब, हरियाणा और जम्मू कश्मीर में लोहड़ी के रूप में और गुजरात में उत्तरायण के रूप में इसे मनाते हैं। सिंध में या सिन्धी समाज लाल लोही के रूप में मनाता है। उत्तर प्रदेश और बिहार में खिचड़ी पर्व के रूप में इसे मनाते हैं। केरल में मकर ज्योति के रूप में मनाते हैं।
25. मकर रेखा दक्षिणी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा के समानांतर 23' 23' 22' पर, पश्चिम से पूरब की ओर खींची गई काल्पनिक रेखा है। मकर रेखा के उत्तर में तथा कर्क रेखा के दक्षिण में स्थित क्षेत्र उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र कहलाता है। 22 दिसम्बर को सूर्य जब मकर रेखा पर लम्बवत चमकता है तो उसके बाद वह उत्तरायण गति करने लगता है। मकर संक्रांति के दिन यह पूर्णतः उत्तरायण हो जाता है।

लोहड़ी के त्योहार का धार्मिक और सामाजिक महत्व

खुशहाली के आगमन का प्रतीक माने जाने वाले लोहड़ी का पर्व पंजाब में खासतौर पर पारम्परिक रीति-रिवाज के साथ मनाया जाता है। लोहड़ी पर्व से जुड़ी एक बड़ी बात यह भी है कि मूल रूप से सिखों के इस त्योहार के दिन का निर्धारण हिंदू पंचांग/कैलेण्डर से होता है।

लोहड़ी पर झूम उठते हैं किसान

हर साल के जनवरी माह के दूसरे सप्ताह में मनाया जाने वाला यह पर्व किसानों के लिए विशेष रूप से उत्साह लेकर आता है क्योंकि इस पर्व तक उनकी वह फसल पक कर तैयार हो चुकी होती है जिसको उन्होंने अपनी अथक मेहनत से बोया और सींचा था। इस दिन जब लोहड़ी जलाई जाती है तो उसकी पूजा गेहूं की नयी फसल की बालों से ही की जाती है। जाति बंधनों से मुक्त होकर यह पर्व समूचे उत्तर भारत खासकर पंजाब और हरियाणा में काफी धूमधाम से मनाया जाता है। राजधानी दिल्ली में भी इस पर्व की धूम खूब रहती है। मकर संक्रांति से एक दिन पहले पड़ने वाले इस पर्व पर लोग मस्ती में रहते हैं तथा नाच गाकर अपनी खुशियों का इजहार करते हैं।

इस बार लोहड़ी पर्व की वैसी छटा नहीं

पंजाब में तो इस पर्व पर अलाव जलाकर भांगड़ा नृत्य किया जाता है और मूंगफली, रेवड़ी तथा गजक का प्रसाद बांटा जाता है। इस दिन पंजाबी गायकों की काफी मांग रहती है और विभिन्न इलाकों में वह अपनी गायकी से लोगों को झूमने पर मजबूर कर देते हैं। हालांकि इस बार कोरोना संक्रमण के चलते लगे तमाम प्रतिबंधों की वजह से सामूहिक स्तर पर कार्यक्रम आयोजित नहीं किये जा रहे हैं। लोग इस बार अपने परिवार के साथ ही लोहड़ी पर्व मना रहे हैं।

लोहड़ी से जुड़ा धार्मिक महत्व

देखा जाये तो दिल्ली, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में जहां इस पर्व को मस्ती भरे अंदाज में मनाया जाता है वहीं पंजाब में इस पर्व का धार्मिक महत्व भी होता है। इस दिन सुबह से ही विभिन्न गुरुद्वारों में श्रद्धालु एकत्रित होना शुरू हो जाते हैं। इसके साथ ही इस दिन अंधेरा होते ही लोहड़ी जलाकर सात चक्कर लगाकर अग्नि पूजा करते हुए तिल, गुड़, चावल और भुने हुए मक्के की आहुति दी जाती है। इस सामग्री को तिलचौली कहा जाता है। आग में तिल डालते हुए, ईश्वर से धनधान्य से भरपूर होने का आशीर्वाद मांगा जाता है। ऐसा माना जाता है कि जिसके घर पर भी खुशियों का मौका आया, चाहे विवाह के रूप में हो या संतान के जन्म के रूप में, लोहड़ी उसके घर जलाई जाएगी और लोग वहीं एकत्र होंगे। इस अवसर पर लोग मूंगफली, तिल की गजक और रेवड़ियां आपस में बांटकर खुशियां मनाते है।

पारम्परिक रीति-रिवाज

लोहड़ी पर्व से जुड़ी परम्परा के अनुसार, इस दिन पंजाब में बहुएं घर-घर जाकर लोकगीत गाकर लोहड़ी मांगती हैं और दुल्ला भट्टी के गीत गाती हैं। इस गीत के पीछे यह मान्यता है कि महराजा अकबर के शासन काल में दुल्ला भट्टी एक लुटेरा था लेकिन वह हिंदू लड़कियों को गुलाम के तौर पर बेचे जाने का विरोधी था। उन्हें बचा कर वह उनकी हिंदू लड़कों से शादी करा देता था। गीतों में उसके प्रति आभार व्यक्त किया जाता है।

लोहड़ी से जुड़ी बड़ी बात

पंजाब में नई बहू और नवजात बच्चे के लिए लोहड़ी का विशेष महत्व होता है। इस दिन रेवड़ी और मूंगफली वितरण के साथ ही मक्के की रोटी और सरसों के साग का भोज भी आयोजित किया जाता है। पंजाब के गांवों में तो इस दिन इस तरह के दृश्य आम होते हैं कि परम्परागत वेशभूषा पहले सिख पुरुष और स्त्रियां ढोल की थाप पर लोकप्रिय भांगड़ा नृत्य कर खुशियां मनाते हैं। बच्चों को भी उनका साथ देते देखा जा सकता है। स्त्रियां तो इस अवसर पर अपनी हथेलियों और पांवों पर आकर्षित करने वाली आकृतियों वाली मेहंदी भी रचाती हैं।

एटीएम में लोगों के कार्ड को फंसाकर पैसे ठगने के नए तरीके आए सामने, रहें सतर्क

नई दिल्ली । एटीएम में काली पट्टी फंसाकर लोगों के कार्ड को फंसा देना और फिर फर्जी हेल्पलाइन नंबरों के द्वारा पैसे निकालने का नया तरीका अपराधियों ने अपना लिया है। हाल ही में पटना और आसपास के इलाकों में तीन लोगों के साथ इसतरह की धोखाधड़ी हुई है। जहां पहले मामले में 5 जनवरी को बिहार के पटना स्थित परसा बाजार निवासी रणविजय सिंह सेंट्रल बैंक के एटीएम से 10 हजार रुपए निकालने गए। ट्रांजैक्शन के बाद उनका कार्ड मशीन से बाहर नहीं आया। इसी बीच दो लोग आए और उन्होंने रणविजय को पास की बैंक शाखा या दिए गए नंबर पर कॉल करने को कहा। रणविजय ने नंबर पर कॉल किया, लेकिन नंबर बंद था। वे कार्ड छोड़कर बैंक गए, और तभी उनके खाते से 81 हजार रुपए निकाल लिए गए। दूसरे मामले में पंडारक के शशि कपूर पासवान के साथ ऐसा ही हुआ। उनका कार्ड बैंक ऑफ इंडिया के एटीएम में फंस गया। दिए गए हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करने पर शातिर ने उन्हें पिन डालने और कैंसिल बटन दबाने को कह दिया। थोड़ी ही देर में उनके खाते से 38,500 रुपए निकाल लिए गए। तीसरे मामले में जहानाबाद के धीरज कुमार का कार्ड एसबीआई एटीएम में फंस गया। दिए गए हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करने पर उन्हें बताया गया कि कार्ड दोपहर बाद निकलेगा। वे कार्ड छोड़कर चले गए, और उनके खाते से 1.11 लाख रुपए ट्रांजैक्शन और शॉपिंग के जरिए निकाल लिए गए।

जम्मू में नियंत्रण रेखा के पास आतंकवादियों का पता लगाने के लिए सेना ने तेज किया तलाशी अभियान

जम्मू। सेना ने जम्मू के अखनूर सेक्टर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास आतंकवादियों की संदिग्ध गतिविधि की सूचना मिलने के बाद शुरू किया गया तलाशी अभियान रविवार को ड्रोन और अन्य नवीनतम उपकरणों की मदद से तेज कर दिया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। ग्रामीणों द्वारा जोगीवन वनक्षेत्र में संदिग्ध गतिविधियों की सूचना दिए जाने के बाद शनिवार को भट्टल क्षेत्र में सेना की विभिन्न इकाइयों द्वारा तलाशी अभियान शुरू किया गया था। उन्हें संदेह था कि वे घुसपैठिये आतंकवादी थे। अधिकारियों ने बताया कि तलाशी अभियान जारी है तथा व्यापक क्षेत्र को शामिल करने के लिए अधिक जवानों को तैनात किया गया है, हालांकि अभी तक संदिग्धों का कोई सुराग नहीं मिल पाया है। उन्होंने बताया कि सुरक्षाबलों ने इलाके की तलाशी के लिए खोजी कुत्तों के अलावा ड्रोन और अन्य नवीनतम उपकरण भी तैनात किए हैं। उन्होंने बताया कि सेना के इस तलाशी अभियान में पुलिस के दल भी शामिल हुए हैं। पिछले वर्ष 28 और 29 अक्टूबर को अखनूर सेक्टर में सुरक्षाबलों ने दो दिवसीय अभियान में पाकिस्तान आधारित आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) के तीन आतंकवादियों को मार गिराया था।

कम उम्र के बच्चों के ऑनलाइन पेमेंट माता-पिता की अनुमति से

नई दिल्ली। सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा 18 साल से कम उम्र के बच्चों के ऑनलाइन लेनदेन के लिए नियमों में बदलाव किए जाने का प्रारूप तैयार किया गया है। बच्चों के खाते से ऑनलाइन लेनदेन करने का ओटीपी का ईमेल और मोबाइल फोन पर बच्चों के पैरंट को भी मिलेगा। उनके द्वारा पुष्टि कर देने के बाद ही भुगतान संभव होगा। वर्तमान में जिस तरह से डिजिटल क्राइम बढ़ रहा है। छोटे-छोटे बच्चे स्वयं ऑन लाइन पेमेंट कर रहे हैं। सोशल मीडिया पर भी वह सक्रिय रहते हैं। ऐसी स्थिति में दुरुपयोग को रोकने के लिए अब माता-पिता या जो भी पालक हैं। उनके पास सूचना आएगी, तभी लेनदेन संभव हो सकेगा। सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय इसके लिए नियमों में परिवर्तन करने जा रहा है। सरकार ने दावे और आपत्ति के लिए 18 फरवरी तक की तारीख तय की है। इसकी सुनवाई होने के पश्चात अप्रैल 2025 से इसे लागू किया जा सकता है। इस संशोधन के बाद साइबर क्राइम और सोशल मीडिया पर नाबालिक बच्चों के माता-पिता को निगाह रखने में आसानी होगी। बच्चों के नाम पर जो सिम कार्ड जारी होगी। उसके लिए हर स्तर पर पेरेंट्स की सहमति को अनिवार्य किया जाएगा।

भूपेंद्र हुड्डा ने चेताया कहा- नशे की भेंट चढ़ रही हरियाणा की जवानी

चंडीगढ़। हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री भेपेंद्र सिंह हुड्डा ने चेतावनी देते हुए कहा है कि इस वक्त राज्य में नशे ने युवाओं की जिंदगी दांव पर लगा दी है। उन्होंने कहा कि दूध-दही के खाने वाले हरियाणा को नशा तस्करों ने ड्रग्स, अफीम, चिट्टा, हेरोइन, ब्राउन शुगर, स्मैक, चरस, गांजा, कोकीन, भांग और सुल्फा का अड्डा बना दिया है। नशा कारोबारी बेखौफ अपने साम्राज्य को फैला रहे हैं, जिससे उनका नेटवर्क हर गांव, गली व मोहल्ले तक पहुंच गया है। हुड्डा ने कहा कि युवाओं से लेकर महिलाएं और छोटे-छोटे बच्चे भी नशे की चपेट में आकर जान गंवा रहे हैं। हरियाणा की पहचान उसका शुद्ध, सात्विक खाना, उर्जावान युवा, जवान और खिलाड़ी होते थे, लेकिन प्रदेश सरकार ने इसे नशे में 'उड़ता हरियाणा' बना दिया है। अब हरियाणा की जवानी नशे की भेंट चढ़ रही है। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की ओर से दिसंबर 2023 में राज्यसभा में पेश की गई रिपोर्ट के मुताबिक हरियाणा में नशा करने वाले 16.51 फीसद लोग अफीम, हेरोइन और चिट्टा का इस्तेमाल करते हैं। 11 प्रतिशत लोग नशे के लिए गांजा, भांग और चरस तथा पांच प्रतिशत लोग नींद के लिए ली जाने वाली नशीली दवाइयों और बड़ी मात्रा में लोग कोकीन का भी इस्तेमाल करते हैं। उन्होंने पिछले पांच साल में लगभग 15 लाख लोग नशा मुक्ति के लिए सरकारी अस्पतालों की ओपीडी और नशा मुक्ति केंद्रों में पहुंचे हैं। हालांकि यह आंकड़ा इससे कई गुना बड़ा हो सकता है क्योंकि नशे की दलदल में फंसे लाखों लोग इलाज के लिए आगे नहीं आते हैं और अपनी जिंदगी तबाह कर लेते हैं।

भारत का बड़ा कदम अब इंडोनेशिया को देगा ब्रह्मोस मिसाइल

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बने हुए चुनौतीपूर्ण सुरक्षा हालात के बीच भारत की कोशिश एक ओर रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के जरिए अपनी सभी घरेलू जरूरतों को पूरा करने की है। वहीं, दूसरी ओर वह निर्यात के जरिए स्वदेश में बनाए गए सैन्य हथियारों को तेजी के साथ दुनिया के दूसरे देशों को देने का इच्छुक है। जिससे उनकी सामरिक क्षमता को भी मजबूती प्रदान की जा सके। इसी क्रम में भारत, इंडोनेशिया को ध्वनि की गति से भी अधिक तेजी से मार करने में सक्षम 'सुपरसोनिक ब्रह्मोस मिसाइल' देगा। रक्षा सूत्रों ने बताया यह समूची कवायद 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस परेड समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करने वाले इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो की भारत यात्रा से ठीक पहले हो रही है। इसे देखते हुए यह संभावना जताई जा रही है कि दोनों देशों के बीच ब्रह्मोस मिसाइल समझौते की घोषणा इंडोनेशिया के राष्ट्रपति की भारत यात्रा से ऐन पहले या उसके साथ भी की जा सकती है। गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होने के बाद भारत और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति के बीच राजधानी में एक द्विपक्षीय बैठक होना तय है। यहां बता दें कि भारत की तीनों सशस्त्र सेनाएं वर्ष 2006 से (सेना, वायुसेना और नौसेना) ब्रह्मोस मिसाइल के विभिन्न संस्करणों का प्रयोग कर रही हैं।

भारत और इंडोनेशिया के बीच ब्रह्मोस मिसाइल के मामले पर चर्चा की शुरुआत पिछले दिसंबर महीने में नौसेनाप्रमुख एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी की इंडोनेशिया की यात्रा के दौरान हुई थी। वहीं, इंडोनेशिया के रक्षा मंत्रालय ने राजधानी जकार्ता में मौजूद भारतीय दूतावास को ब्रह्मोस मिसाइल की खरीद को लेकर लगभग 450 मिलियन डॉलर के समझौते से जुड़ा हुआ एक पत्र भी सौंपा है। उधर, भारत ने इंडोनेशिया से स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) या किसी अन्य भारतीय राष्ट्रीय बैंक के जरिए समझौते से जुड़ी उक्त धनराशि को ऋण (लोन) पर लेने के पेशकश की है। जबकि इसके पूर्व में एक्जिम बैंक (आयात-निर्यात बैंक) द्वारा इंडोनेशिया के ऋण से जुड़ी प्रक्रिया को पूरा करने का निर्णय लिया गया था। लेकिन यह हो नहीं सका।

भारत ने सबसे पहले अपने देश के बाहर वर्ष 2022 में फिलीपींस को ब्रह्मोस मिसाइल (290 किलोमीटर की मारक क्षमता) दी थी। इसके लिए दोनों देशों के बीच कुल करीब 374.96 मिलियन डॉलर का एक समझौता हुआ था। जिसमें तट आधारित युद्धपोत रोधी मिसाइल सिस्टम दिया गया था। समझौते में हालांकि मिसाइल की तीन बैटरियां भी शामिल थीं। जिसे भारत ने फिलीपींस को सौंपा था। अब इंडोनेशिया दुनिया का दूसरा ऐसा देश होगा जिसे भारत द्वारा ब्रह्मोस मिसाइल दी जाएगी। यहां गौर करने वाली बात यह है कि फिलीपींस और इंडोनेशिया दोनों ही दस सदस्यीय आसियान समूह में शामिल देश हैं। जिन्हें भारत ने ब्रह्मोस मिसाइल दी है। इन दोनों के अलावा भारत और वियतनाम के बीच भी ब्रह्मोस मिसाइल को लेकर चर्चा जारी है। मूलरूप से यह मिसाइल वर्ष 1998 में भारत और रूस द्वारा संयुक्त रूप से शुरू की गई ब्रह्मोस परियोजना के तहत विकसित की गई थी। इसके निर्माण में भारत का रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और रूस का एनपीओ मशीनोस्ट्रोयेनिया शामिल हैं। मिसाइल का नाम भारत की ब्रह्मपुत्र और रूस की मस्कवा नदी के नाम पर ब्रह्मोस रखा गया है।

ग्रेटर नोएडा : केमिकल फैक्ट्री में भीषण आग, 32 दमकल गाड़ियों ने 6 घंटे में पाया काबू

- सुबह 3:30 बजे लगी आग, लाखों का हुआ नुकसान लेकिन जनहानि नहीं

- 32 दमकल गाड़ियों ने संभाला मोर्चा

ग्रेटर नोएडा। उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा के बादलपुर थाना क्षेत्र में स्थित एक केमिकल फैक्ट्री में रविवार तड़के भीषण आग लग गई। इस हादसे में लाखों रुपये का नुकसान हुआ है। आग इतनी भयावह थी कि उस पर काबू पाने के लिए दमकल विभाग की 32 गाड़ियों को लगाया गया और इसे बुझाने में लगभग 6 घंटे का समय लगा। हादसा रविवार सुबह करीब 3:30 बजे बांके बिहारी केमिकल प्लांट में हुआ। आग लगने के बाद कुछ ही समय में पूरी फैक्ट्री आग की चपेट में आ गई। केमिकल फैक्ट्री से उठते काले धुएं के गुब्बार और तेज लपटों को देखकर आसपास के लोगों में अफरा-तफरी मच गई। तुरंत पुलिस और दमकल विभाग को सूचित किया गया। आग की भयावहता को देखते हुए दमकल विभाग ने तुरंत 32 गाड़ियों को मौके पर भेजा। फैक्ट्री में बड़ी मात्रा में केमिकल होने के कारण आग तेजी से फैलती जा रही थी, जिससे इसे बुझाने में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। दमकलकर्मियों ने करीब 6 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। इस भीषण हादसे में हालांकि किसी की जान नहीं गई, जो राहत की बात है। लेकिन फैक्ट्री में रखा लाखों रुपये का सामान जलकर खाक हो गया। आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। पुलिस ने घटना का संज्ञान लिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और आग लगने के संभावित कारणों की जांच कर रहे हैं। प्राथमिक जानकारी के अनुसार, आग शॉर्ट सर्किट या केमिकल रिएक्शन के कारण लगी हो सकती है, लेकिन इस पर अभी तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

शेख हसीना के भारत में रहने को लेकर बोले कांग्रेस नेता- अनुमति तब तक की दें जब तक वे रहना चाहें

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री मणिशंकर अय्यर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार से अपील की है कि बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना को भारत में तब तक रहने की अनुमति दे दी जानी चाहिए, जब तक कि वे रहना चाहती हैं। इसके साथ ही अय्यर ने कहा कि शेख हसीना ने भारत के लिए भी बहुत अच्छा काम किया है और उन्हें भारत में शरण देना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

गौरतलब है कि बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना 5 अगस्त 2024 से भारत में रह रही हैं। बांग्लादेश में छात्र आंदोलन और राजनीतिक अस्थिरता के चलते उन्हें अचानक देश छोड़ भारत अना पड़ा था। इसके बाद बांग्लादेश में हुए राजनीतिक घटनाक्रम के बाद यूनुस सरकार ने शेख हसीना के पासपोर्ट को रद्द करने का ऐलान किया तो वहीं भारत सरकार ने हाल ही में उनके वीजा की अवधि को बढ़ाने की जानकारी दे दी है। ऐसे में कांग्रेस नेता अय्यर का बयान खास मायने रखता है, जिसमें उन्होंने कहा है कि शेख हसीना ने भारत देश के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हमें उन्हें तब तक भारत में रहने की अनुमति दे देनी चाहिए, जब तक कि वे यहां रहना चाहें, फिर चाहे उनका पूरा जीवन ही क्यों न हो। इसके साथ ही कांग्रेस नेता ने भारत और बांग्लादेश के बीच संवाद बनाए रखने और रिश्तों को मजबूती प्रदान करने पर भी जोर दिया है।

पाकिस्तान पर बोले- विभाजन एक हादसा

कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर ने भारत और पाकिस्तान के रिश्तों पर अपने विचार साझा करते हुए कहा है कि पाकिस्तान और भारत के लोग तो एक समान ही हैं। बस विभाजन रुपी हादसा था, जिसने हमें अलग कर दिया। इसी बीच उन्होंने पीएम मोदी पर निशाना साधा और कहा कि यह सरकार सर्जिकल स्ट्राइक करने का साहस तो दिखा सकती है, लेकिन पाकिस्तान से बातचीत करने की हिम्मत नहीं दिखाती। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को स्थायी दुश्मन मानना आत्मघाती होगा, संवाद तो बनाए रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस समय पाकिस्तान आतंक का शिकार हो रहा है और तालिबानियों ने स्थिति बिगाड़ दी है।

बीपीएससी परीक्षा को लेकर छात्रों ने कराया बिहार बंद, कई जगह आगजनी और चक्काजाम

-सांसद पप्पू यादव ने बंद का समर्थन करने विपक्षी पार्टियों को किया आमंत्रित

पटना (एजेंसी)। बिहार से पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने बीपीएससी 70वीं पीटी की परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर रविवार को बिहार बंद का रखा गया। पटना, मधेपुरा और कटिहार में इसका असर दिखा। छात्र युवा शक्ति संगठन के सदस्य बीपीएससी की दोबारा परीक्षा को लेकर सड़कों पर प्रदर्शन कर रहे हैं। पप्पू यादव भी बिहार बंद को समर्थन दे रहे हैं और इसे सफल बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

इधर छात्र युवा शक्ति के बैनर तले शहीद चौक पर जुटे संमर्थकों ने सड़क जाम कर दी। पप्पू यादव ने बंद का समर्थन करने के लिए सभी विपक्षी पार्टियों को आमंत्रित किया है। उन्होंने कहा कि बिहार बंद में अगर तेजस्वी यादव शामिल होते हैं तो उनके नेतृत्व में हम चलने को तैयार हैं। बिहार में बीपीएससी परीक्षा की कथित अनियमितताओं को लेकर छात्रों का आंदोलन दिन ब दिन जोर पकड़ता ही रहा है। बिहार के पटना में रविवार को बीपीएससी री- एग्जाम और बहाली परीक्षाओं में गड़बड़ी की जांच को लेकर छात्रों का प्रदर्शन जारी है। पटना में जगह-जगह पर बीच सड़क पर छात्र आगजनी कर यातायात को बाधित कर रहे हैं। साथ ही छात्रों ने पटना के अशोक राजपथ पर हंगामा किया और आगजनी की। इस बंद का भीम आर्मी और औवेशी की पार्टी ने समर्थन किया है।

बता दें कि बिहार में बीपीएससी 70वीं प्रारंभिक परीक्षा विवाद के बीच 4 जनवरी को 12 हजार अभ्यर्थियों के लिए री-एग्जाम आयोजित हुआ। करीब 12 हजार अभ्यर्थियों के लिए 22 परीक्षा सेंटर पर री-एग्जाम संपन्न हुआ। अब आयोग जल्द ही प्रारंभिक परीक्षा का परिणाम घोषित करने की तैयारी कर रहा है। दरअसल, 13 दिसंबर को बिहार के विभिन्न परीक्षा केंद्रों पर बीपीएससी 70वीं पीटी परीक्षा आयोजित की गई थी। परीक्षा के दिन से ही अभ्यर्थी परीक्षा में गड़बड़ी का आरोप लगाकर इसे रद्द करके फिर से कराने की मांग कर रहे हैं। अभ्यर्थियों ने आरोप लगाया कि पटना के बापू एग्जाम सेंटर पर छात्रों को पेपर देरी से मिला था और पेपर की सील पहले से खुली हुई थी। इससे पहले भी पटना में छात्रों के प्रदर्शन पर पुलिस द्वारा किए गए लाठीचार्ज और वाटर कैनन का इस्तेमाल ने छात्रों और उनके संगठनों के आक्रोश को और बढ़ा दिया है। छात्रों का कहना है कि सरकार उनकी आवाज दबाने की कोशिश कर रही है, लेकिन वे अपनी मांगों से पीछे नहीं हटेंगे। अब तक सरकार की ओर से इस मामले में कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। छात्रों और विपक्षी दलों का कहना है कि उनकी मांगें नहीं मानी तो आंदोलन और तेज किया जाएगा।

यह कह गडकरी और कंगना ने खासदार क्रीड़ा महोत्सव 2025 का किया उद्घाटन

नागपुर (एजेंसी)। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी और अभिनेतत्री से भाजपा सांसद बनीं कंगना रनौत ने महाराष्ट्र के नागपुर में रविवार को खासदार क्रीड़ा महोत्सव 2025 का उद्घाटन किया। इस अवसर पर गडकरी ने कहा कि खेल महोत्सव का आनंद लेना चाहिए।

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने इसी दौरान जहां प्रतिभागियों की सराहना की वहीं उन्होंने कहा कि हमने इस साल सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। मुझे खुशी है कि यह आयोजन अपने सातवें साल में होने जा रहा है। इस मौके पर हम सभी को खेल महोत्सव का आनंद लेना चाहिए। भाजपा सांसद कंगना रनौत ने खासदार क्रीड़ा महोत्सव 2025 में सुबह-सुबह हिस्सा लेने पहुंचे नागपुरवासियों की प्रशंसा की और उनके उत्साह की सराहना की। कंगना ने कहा, कि लोग सुबह-सुबह यहां आए हैं, इससे साबित होता है कि नागपुर एक उत्साही शहर है और यहां के लोग उत्साह से भरे हुए हैं।

इस अवसर पर कंगना ने मीडिया से भी बातचीत की और कहा कि नागपुर में खेल और शारीरिक गतिविधि के लिए जो ऊर्जा और उत्साह है, मेरा मानना है कि अन्य शहरों और गांवों को भी इससे सबक लेते हुए इसे अपनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि शारीरिक फिटनेस और स्वस्थ रहने के बारे में यह उत्साह और जागरूकता वाकई उल्लेखनीय है। कंगना ने उत्साहित होते हुए कहा कि हमने भी इसमें हिस्सा लिया, इसमें बहुत आनंद आया।

इस मौके पर कंगना रनौत ने अपनी अपकमिंग फिल्म इमरजेंसी के बारे में भी बात की और बताया कि यह पहला अवसर था जबकि हमारी फिल्म की स्क्रीनिंग नागपुर में हुई। इसी बीच केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने उक्त फिल्म की तारीफ की और इसे बेहतरीन तथा प्रामाणिक बताया। उन्होंने कहा कि हम तो चाहते हैं कि संपूर्ण देश इस फिल्म को देखे। इस फिल्म की रिलीज डेट 17 जनवरी है।

उद्धव ठाकरे ने 2019 में हमें धोखा दिया- गृह मंत्री अमित शाह

शिरडी (एजेंसी)। उद्धव ठाकरे धोखा देकर मुख्यमंत्री बने। उद्धव ठाकरे ने 2019 में हमें धोखा दिया था। उन्होंने 2019 में बालासाहेब ठाकरे के विचारों को त्याग दिया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने महा विकास अघाड़ी के प्रमुख नेताओं की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि महाराष्ट्र ने शरद पवार की राजनीति को भी जमीन में दफन कर दिया है। वह शिरडी में भाजपा के राज्य स्तरीय सम्मेलन में बोल रहे थे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उद्धव ठाकरे और शरद पवार पर कड़ा निशाना साधा। इस बैठक में अमित शाह ने कहा, देवेंद्र फडणवीस दोबारा मुख्यमंत्री बन गए हैं। कई विधायक मंत्री बन गये। असली शिवसेना और असली एनसीपी भी जीत गई। शरद पवार ने छल और कपट की राजनीति की। लोगों ने उन्हें 20 फीट जमीन के नीचे दफनाने का काम किया। उद्धव ठाकरे ने बालासाहेब ठाकरे के विचारों को त्याग दिया। लोगों ने उन्हें भी उनकी जगह दिखा दी। लोगों ने स्थिर सत्ता देने का काम किया है। उनका सपना लोकसभा के बाद विधानसभा में जीत हासिल करना था। लेकिन उनका सपना टूट गया। यह हमारी महान विजय है। इस जीत का श्रेय पार्टी कार्यकर्ताओं को जाता है। गृह मंत्री ने आगे कहा, इस देश में विचारधारा की राजनीति चल रही है। लोगों ने परिवारवाद की राजनीति करने वालों को नकार दिया है। अमित शाह ने आगे कहा, महाराष्ट्र के लोगों ने साबित कर दिया है कि वे हिंदू और सनातन

विचारधाराओं में विश्वास करते हैं। हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बने। इस साल हरियाणा में हम तीसरी बार जीते। आंध्र प्रदेश में एनडीए की जीत हुई। उड़ीसा में भी बहुमत की सरकार बनी। सिक्किम में भी हम जीते। हम महाराष्ट्र में भी जीते।

महाकुंभ आज से शुरू, यहां जानें पहले शाही स्नान का शुभ मुहूर्त और महत्व

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज में महाकुंभ की शुरूआत 13 जनवरी सोमबार से हो रही है। महाकुंभ का समापन महाशिवरात्रि के दिन 26 फरवरी को होगा। धार्मिक आस्था का केंद्र महाकुंभ मेले का महत्व ज्योतिषीय आधार पर भी है। यही कारण है कि महाकुंभ मेले में देश-विदेश से लाखों लोग सम्मिलित होने आते हैं।

महाकुंभ मेले में धार्मिक आस्था और संस्कृति का एक अनूठा संगम होता है। यही कारण है कि प्रयागराज में इन दिनों भारत के कोने-कोने से लोग तो आते ही हैं, बल्कि विदेशों से भी बड़ी संख्या में लोग शरीक होते हैं। मेले का यह आयोजन सभी समुदाय के लोगों को आकर्षित करता है। इस विश्वव्यापी महाकुंभ मेले की शुरुआत 13 जनवरी से प्रयागराज में शुरुआत हो रही है। कुंभ का महत्व इसलिए भी विशेष है क्योंकि यह 12 साल में महज एक बार ही आता है, जिसका आयोजन भारत के चार प्राचीन शहरों हरिद्वार, नासिक, प्रयागराज और उज्जैन में किया जाता है। प्रयागराज संगम के पवित्र जल में महाकुंभ के स्नान और पूजा-अर्चना का सबसे बड़ा अवसर होता है। धार्मिक मान्यताओं और आस्था के अनुसार कुंभ मेले में स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है और मन व मस्तिष्क में दबी कुंठाओं से छुटकारा मिल जाता है।

समुद्र मंथन और कुंभ

मान्यतानुसार समुद्र मंथन से निकले अमृत को पाने के लिए देवताओं और राक्षसों के बीच 12 वर्षों तक युद्ध चला था। इस युद्ध के दौरान अमृत कलश से जिन स्थलों पर अमृत की बूंदें गिरीं वहां कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। युद्ध 12 वर्षों तक चलने के कारण ही कुंभ भी हर 12 वर्ष में एक बार आता है।

स्नान का समय

महाकुंभ का पहला शाही स्नान पूर्णिमा के शुभ अवसर पर होना बताया गया है। हिंदू पंचांग के मुताबिक पूर्णिमा तिथि 13 जनवरी यानी सोमबार सुबह 5.3 बजे पर होगी और समापन तिथि 14 जनवरी मंगलवार अर्धरात्रि 3.56 पर होगा।

मुद्रास्फीति के आंकड़े, कंपनियों के तिमाही परिणाम तय करेंगे शेयर बाजार की दिशा

- निवेशकों की नजर कच्चे तेल की कीमतों और डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल पर भी रहेगी

मुंबई । इस सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों की दिशा कंपनियों के तिमाही नतीजों, मुद्रास्फीति के आंकड़ों और विदेशी निवेशकों की गतिविधियों से तय होगी। बाजार के विश्लेषकों ने यह राय जताई है। इस सप्ताह इन्फोसिस, रिलायंस इंडस्ट्रीज जैसी बड़ी कंपनियों के दिसंबर तिमाही के नतीजे आने वाले हैं। इसके अलावा निवेशकों की नजर कच्चे तेल की कीमतों और डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल पर भी रहेगी। बीते सप्ताह अमेरिकी डॉलर के मजबूत होने तथा अमेरिका में बॉन्ड पर प्रतिफल बढ़ने से निवेशकों की धारणा प्रभावित हुई थी। बाजार के विश्लेषकों के मुतो बिक भारतीय शेयर बाजारों के लिए यह सप्ताह उतार-चढ़ाव भरा रहेगा। निवेशक बड़ी कंपनियों के तीसरी तिमाही के नतीजों का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस सप्ताह इन्फोसिस, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचसीएल टेक्नोलॉजीज, एचडीएफसी एएमसी, एचडीएफसी लाइफ इंश्योरेंस कंपनी और एक्सिस बैंक जैसे बड़ी कंपनियां अपने दिसंबर तिमाही के नतीजों की घोषणा करेंगी। स्थानीय बाजार में विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) और घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) के बीच संघर्ष जारी है। बाजार के एक अन्य विश्लेषक ने कहा कि सोमवार को उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति के आंकड़े आएंगे, जो बाजार के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं। थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित मुद्रास्फीति के आंकड़े मंगलवार को जारी किए जाएंगे। विश्लेषकों ने कहा कि बाजार में तेज गिरावट कई कारणों से आई है। इसमें विदेशी कोषों की निकासी, कंपनियों के तीसरी तिमाही के उम्मीद से कमजोर नतीजे, डॉलर के मुकाबले रुपये में लगातार गिरावट और अमेरिका में 10 साल के बॉन्ड पर प्रतिफल बढ़ना जैसे कारक शामिल हैं।

सेबी डेरिवेटिव खंड में गतिविधि पर रोक नहीं लगाएगा

- सेबी कारोबारी सुगमता और बेहतर जोखिम प्रबंधन के लिए करेगा कुछ उपाय

मुंबई ।

पूंजी बाजार नियामक सेबी के एक पूर्णकालिक सदस्य ने हाल ही में एक बड़ा बयान दिया है, जिसमें उन्होंने खुलासा किया कि सेबी डेरिवेटिव खंड में गतिविधि पर रोक नहीं लगाएगा।

उन्होंने यह भी कहा कि सेबी कोई भी ऐसा कदम नहीं उठाएगा जो डेरिवेटिव बाजार में कारोबार को नियंत्रित करे। उन्होंने बताया कि सेबी कारोबारी सुगमता और बेहतर जोखिम प्रबंधन के लिए कुछ उपायों पर विचार कर रहा है, परन्तु डेरिवेटिव खंड में कोई प्रतिबंध नहीं लगाने का इरादा है। उन्होंने भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा नियंत्रित एनआईएसएम के एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सेबी दर्शकों के लिए उपयुक्तता और अनुकूलता को ध्यान में रख रही है और नकद बाजार और डेरिवेटिव बाजार के बीच संबंध को मजबूत करने का प्रयास कर रही है। इस बयान के साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि सेबी किसी तरह के डेरिवेटिव खंड में गतिविधि को रोकने की स्थिति में नहीं है और उसे बरकरार रखने का निश्चित करेगी।

उन्होंने उन सभी का समर्थन किया जिन्होंने सेबी के विचारों की प्रशंसा की है और सहमति जताई है कि डेरिवेटिव बाजार में कोई प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिए। उन्होंने भविष्य में भी स्पष्ट किया कि डेरिवेटिव को लेकर किसी भी बदलाव को सावधानी से देखा जाएगा और उसे सभी पक्षों के सुझाव को ध्यान में रखकर ही लागू किया जाएगा।

सेबी के इस प्रकार के निर्णय से बाजार के साथी उत्थान और विकास के लिए एक सकारात्मक संकेत मिला है। इस सावधानीबद्ध कदम के साथ सेबी ने स्वतंत्र कारोबार को बढ़ावा देने का संकेत दिया है और बाजार में निवेशकों की सुरक्षा को मजबूत करने का प्रयास किया है।

स्टॉक में आई गिरावट, महंगा हो जाएगा गेहूं

चावल का भंडार रिकॉर्ड स्तर के पार

नई दिल्ली ।

भारत में चावल के बढ़ते भंडार ने जनवरी माह में सबसे ऊंचा स्तर छू लिया है जो देश के निर्यात की गति को तेज करने के लिए एक अवसर प्रदान कर सकता है। चावल के सरकारी भंडार में पहुंची मात्रा सरकार के निर्धारित लक्ष्य से अधिक है, लेकिन इस समय गेहूं की कमी के चलते बाजार में चिंता की स्थिति है। भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के अनुसार चावल के कुल स्टॉक जनवरी तक 60.9 मिलियन टन पहुंच गया है, जबकि निर्धारित लक्ष्य 7.6 मिलियन टन है। इस बढ़ते भंडार के साथ चावल के निर्यात में भी वृद्धि दर्शाई जा रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि चावल की इतनी बड़ी मात्रा का भंडार एक चुनौती पैदा कर सकता है, जबकि गेहूं की सीमित उपलब्धता बाजार में चिंता फैला रही है। गेहूं के स्टॉक 1 जनवरी तक 18.4 मिलियन टन था, जो कि सरकार के लक्ष्य से अधिक है, लेकिन पिछले साल की औसत से काफी कम है। सरकार की ओर से मार्च 2025 तक 2.5 मिलियन टन गेहूं की बेचने की योजना बनाई गई है, जो पिछले साल के मुकाबले कम है। इसके चलते बाजार में गेहूं की कमी महसूस हो रही है। काकीनाड़ा के एक चावल निर्यातक ने बताया कि धान की खरीदारी जारी रहने से भंडारण की समस्या और गंभीर हो सकती है और सरकार को इन चुनौतियों का सामना करना होगा। चावल के भंडार और गेहूं की कमी के बीच संतुलन बनाने की चुनौती सामने खड़ी है। इस असंतुलन को देखते हुए सरकार को कठोर कदम उठाने होंगे ताकि गेहूं की पुनः उपलब्धता में सुधार हो सके और बाजार को स्थिरता मिले।

इस सप्ताह 5 नए आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेंगे

- मेनबोर्ड और 4 एसएमई आईपीओ शामिल

नई दिल्ली ।

आगामी हफ्ते शेयर बाजार में एक महामेला की तैयारी है, जिसमें अनेक बड़ी कंपनियों के आईपीओ और लिस्टिंग की घोषणा की गई है। 13 से 17 जनवरी के बीच 5 नए आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेंगे, जिनमें मेनबोर्ड और 4 एसएमई आईपीओ शामिल हैं। इसके साथ ही 8 कंपनियों के शेयरों की भी लिस्टिंग होगी। मेनबोर्ड पर आ रहे हैं क्राडेंट फ्यूचर टेक लिमिटेड, स्टैंडर्ड ग्लास लाइनिंग टेक्नोलॉजी लिमिटेड और स्टैंडर्ड ग्लास लाइनिंग टेक्नोलॉजी लिमिटेड। एकमात्र मेनबोर्ड आईपीओ, लक्ष्मी डेंटल आईपीओ के साथ एसएमई सेगमेंट में भी काबरा ज्वेल्स लिमिटेड का आईपीओ होगा। इनके अलावा रिखव सिक्योरिटीज लिमिटेड और लैंड इमिग्रेशन कंसल्टेंट्स लिमिटेड भी आईपीओ शुरू कर रहे हैं। इस उत्सव में इंडोबेल इंसुलेशन, एवैक्स अपैरल्स एंड ऑर्नामेंट्स, बीआर गोयल इंफ्रास्ट्रक्चर, डेल्टा ऑटोकॉर्प और सत करतार शॉपिंग भी शामिल हैं। आगामी सप्ताह शेयर बाजार में महामेला का आनंद उठाएं और निवेश करने के लिए तैयार रहें। यह महामेला नए निवेशकों के लिए एक सुनहरा अवसर प्रस्तुत कर सकता है। इस पूरे महीने आईपीओ की सतर्कता बनी रहेगी और निवेशकों को सूचित रहने की

आवश्यकता है। हर कंपनी की विशेषता, इश्यू के विवरण और मार्केट डायनामिक्स पर ध्यान देना जरूरी है, ताकि स्मार्ट निवेश कर सकें। इस तरह के मौके बिना सही जानकारी के इस्तेमाल करने से नुकसान की संभावना हो सकती है।

सोने के आभूषणों का निर्यात 12 प्रतिशत बढ़ा: जीजेईपीसी

- हीरे के निर्यात में 10 प्रतिशत की गिरावट

कोलकाता ।

रत्न एवं आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद (जीजेईपीसी) ने कहा कि वित्त वर्ष के पहले नौ महीनों में सोने के आभूषणों का निर्यात 12 प्रतिशत बढ़ गया है, जबकि हीरे के निर्यात में 10 प्रतिशत की गिरावट हुई है। इसमें अमेरिका को हीरे के निर्यात में सुधार की उम्मीद जताई गई है। चीन की सुस्त मांग की वजह से हीरे के निर्यात में चिंता बनी हुई है, लेकिन अमेरिका में त्योहार के दौरान मांग में वृद्धि की संकेत मिल रही है। जीजेईपीसी के अधिकारियों ने इस संदर्भ में उम्मीद जताते हुए कहा कि उनका मानना है कि अब बुरा समय` निकल गया है और आगामी वर्षों में मद्देनजर 10-15 प्रतिशत की वृद्धि की उम्मीद की जा रही है। इसके साथ ही जीजेईपीसी ने वैश्विक जेनेरिक प्रोत्साहन पर भी 150 करोड़ रुपये का निवेश किया है। आभूषण उद्योग के विकास और अमेरिका की मांग में सुधार की उम्मीद को ध्यान में रखते हुए जीजेईपीसी ने पश्चिम बंगाल के सिंगूर को एक वैश्विक निर्यात केंद्र के रूप में स्थापित करने की योजना बताई है। यह योजना स्थानीय कारीगरी विरासत को बढ़ाने और कई रोजगार के अवसर प्रदान करने का उद्देश्य रखती है। सिंगूर के विकास में हुगली

जिले के सुव्यवे स्थित स्थान का भी अहम योगदान है, जो राष्ट्रीय राजमार्ग-2 और कोलकाता हवाई अड्डे के निकट है। इस विकास योजना से अधिक लोगों को रोजगार का अवसर मिलने की उम्मीद है और स्थानीय उद्योगों को भी बढ़ावा प्राप्त होगा।

डी-मार्ट का दिसंबर तिमाही में मुनाफा बढ़कर 723.5 करोड़ रुपए हुआ

नई दिल्ली । खुदरा स्टोर श्रंखला डी-मार्ट को संचालित करने वाली कंपनी एवेन्यू सुपरमार्केट्स लिमिटेड का चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में मुनाफा 4.8 प्रतिशत बढ़कर 723.54 करोड़ रुपये हो गया। बीते वित्त वर्ष की समान तिमाही में कंपनी का मुनाफा 690.41 करोड़ रुपये रहा था। कंपनी ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि समीक्षाधीन तिमाही में उसकी परिचालन आय 17.68 प्रतिशत बढ़कर 15,972.55 करोड़ रुपये रही, जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 13,572.47 करोड़ रुपये थी। कंपनी ने कहा कि तीसरी तिमाही में मुनाफा मार्जिन 4.5 प्रतिशत रहा, जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में 5.1 प्रतिशत था। कंपनी का कुल खर्च अक्टूबर-दिसंबर 2024 तिमाही में 18.52 प्रतिशत बढ़कर 15,001.64 करोड़ रुपये रहा। एवेन्यू सुपरमार्ट्स की कुल आमदनी समीक्षाधीन अवधि में 17.57 प्रतिशत बढ़कर 15,996.69 करोड़ रुपये हो गई।

एफपीआई ने जनवरी में अब तक शेयर बाजार से 22,194 करोड़ निकाले

नई दिल्ली । विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस महीने भारतीय शेयर बाजारों से 22,194 करोड़ रुपये की निकासी की है। यह निकासी दिसंबर माह के 15,446 करोड़ रुपये के निवेश के बाद आई है। विदेशी निवेशकों का एफपीआई बिकवाली के पीछे कुछ कारकों का इसमें जिम्मेदार माना जा रहा है। कंपनियों के तिमाही नतीजे कमजोर रहने, डॉलर में मजबूती, डोनाल्ड ट्रंप प्रशासन में शुल्क युद्ध तेज होने और साथ ही भारतीय बाजारों में असमंजस के कारण इस बिकवाली का मुख्य कारण भी माना जा रहा है। भारतीय रुपये के निचले स्तर अमेरिकी बॉन्ड प्रतिफल और भारतीय शेयर बाजार के ऊंचे मूल्यांकन के कारण भी विदेशी निवेशकों ने अपना निवेश घटाया है। अनुसंचारित आंकड़ों के अनुसार इस महीने विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने भारतीय शेयरों से 22,194 करोड़ रुपये निकाले हैं। बाजार के जानकारों ने कहा कि डॉलर इंडेक्स में बढ़ोतरी, 10 साल के बॉन्ड पर प्रतिफल और अन्य कारकों के कारण निवेशक उभरते बाजारों से निकासी कर रहे हैं। बीते साल उन्होंने भारतीय शेयरों में सिर्फ 427 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया था। वहीं 2023 में उन्होंने 1.71 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया था।

आगामी बजट में बायोगैस उत्पादन पर कॉरपोरेट कर की छूट चाहता है आईबीए

- निवेश को बढ़ावा मिलेगा और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को प्रोत्साहित करेगा।

नई दिल्ली । भारतीय बायोगैस एसोसिएशन (आईबीए) ने वित्त मंत्रालय से आगामी बजट में कंप्रेस्ड बायोगैस (सीबीजी) उत्पादन के लिए पूरी तरह कॉरपोरेट कर की छूट देने की मांग की है। इससे निवेश को बढ़ावा मिलेगा और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को प्रोत्साहित करेगा। आईबीए ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को एक पत्र लिखकर इस मांग को मुख्य किया है। उद्योग निकाय ने कहा है कि सीबीजी उत्पादकों को पूर्ण कर राहत दी जानी चाहिए। आईबीए के अनुसार देश में कुल 100 सीबीजी संयंत्र चालू हैं और कुल सीबीजी की बिक्री लगभग 1,200 करोड़ रुपये तक पहुंची है। इसके बाद भी कर माफ करने के बाद सरकार को करीब 100 करोड़ रुपये का नुकसान हो सकता है। इस मामले में कर छूट से सीबीजी उत्पादकों को अपने उत्पादों को प्रतिस्पर्धी कीमतों पर बेचने में मदद मिलेगी। आईबीए ने बताया कि इस कदम से भारत अपने नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य को हासिल कर सकेगा और निजी निवेश प्राप्त करने के साथ-साथ रोजगार के अवसरों का सृजन होगा। इसके अलावा, बायोगैस के उत्पादन में कृषि अवशेषों का उपयोग बढ़ाएगा और प्रदूषण कम करने में मदद करेगा।

सेंसेक्स की शीर्ष 10 में से पांच कंपनियों का मार्केट कैप 1.85 लाख करोड़ घटा

- शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर बरकरार रही

मुंबई ।

पिछले सप्ताह सेंसेक्स की शीर्ष 10 में से पांच कंपनियों के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 1,85,952.31 करोड़ रुपये की गिरावट देखी गई है। सबसे अधिक नुकसान एचडीएफसी बैंक को हुआ। बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 1,844.2 अंक नीचे आया। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 573.25 अंक के नुकसान में रहा। समीक्षाधीन सप्ताह में रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) और आईटीसी के बाजार मूल्यांकन में गिरावट आई। वहीं टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), भारती एयरटेल, इन्फोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर और शीर्ष 10 की सूची में हाल में शामिल हुई एचसीएल टेक्नोलॉजीज की बाजार हैसियत बढ़ गई। सप्ताह के दौरान एचडीएफसी बैंक का बाजार पूंजीकरण 70,479.23 करोड़ रुपये घटकर 12,67,440.61 करोड़ रुपये, आईटीसी का बाजार मूल्यांकन 46,481 करोड़ रुपये घटकर 5,56,583.44 करोड़ रुपये, एसबीआई की बाजार हैसियत 44,935.46 करोड़ रुपये घटकर 6,63,233.14 करोड़ रुपये, रिलायंस इंडस्ट्रीज का मूल्यांकन 12,179.13 करोड़ रुपये घटकर 16,81,194.35 करोड़ रुपये और आईसीआईसीआई बैंक के मूल्यांकन में 11,877.49 करोड़ रुपये की गिरावट आई और यह 8,81,501.01 करोड़ रुपये पर आ गया। इस रुख के` विपरीत टीसीएस की बाजार हैसियत 60,168.79 करोड़ रुपये बढ़कर 15,43,313.32 करोड़ रुपये पर पहुंच गई। आईटी सेवा कंपनी टीसीएस का दिसंबर तिमाही का शुद्ध लाभ 11.95 प्रतिशत बढ़कर 12,380 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। इसके बाद शुक्रवार को कंपनी का शेयर छह प्रतिशत चढ़ गया।एचसीएल टेक का बाजार मूल्यांकन 13,120.58 करोड़ रुपये बढ़कर 5,41,539.01 करोड़ रुपये हो गया। इन्फोसिस का बाजार पूंजीकरण 11,792.44 करोड़ रुपये के उछाल के साथ 8,16,626.78 करोड़ रुपये रहा। भारती एयरटेल का मूल्यांकन 8,999.41

करोड़ रुपये बढ़कर 9,19,933.99 करोड़ रुपये पर पहुंच गया।हिंदुस्तान यूनिलीवर की बाजार हैसियत 8,564.26 करोड़ रुपये बढ़कर 5,73,758.44 करोड़ रुपये रही।सेंसेक्स की शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, इन्फोसिस, भारतीय स्टेट बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, आईटीसी और एचसीएल टेक का स्थान रहा।

ओपीजी मोबिलिटी की 400 करोड़ रुपए जुटाने की योजना

जुटाये गए धन का उपयोग कंपनी पोर्टफोलियो और नेटवर्क का विस्तार करने के लिए करेगी

नई दिल्ली । देश में इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग के साथ ईवी विनिर्माता ओपीजी मोबिलिटी ने अपनी वृद्धि योजनाओं को पूरा करने के लिए अगले 18 से 24 माह में 400 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बनाई है। कंपनी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने बताया कि यह धन उनके पोर्टफोलियो और नेटवर्क का विस्तार करने के लिए उपयोग किया जाएगा। ओपीजी मोबिलिटी की तरफ से एक बड़ा कदम उठाते हुए अे धिकारी ने बताया कि कंपनी फेराटो ब्रांड के तहत दो नए इलेक्ट्रिक स्कूटर और एक इलेक्ट्रिक मोटरसाइकिल लॉन्च करने की योजना बना रही है। कंपनी का तिपहिया कारोबार ओटीटीओपीजी ब्रांड के तहत रहेगा। इस साल ओपीजी मोबिलिटी ने इलेक्ट्रिक यात्री खंड में उतरने का निर्णय लिया है और कंपनी देशभर में अपने बिक्री और सेवा नेटवर्क का विस्तार करने की योजना बना रही है। अधिकारी ने बताया कि ये निवेशकों के लिए कोई जोखिम नहीं होगा। पूंजी जुटाने को लेकर अे धिकारी ने कहा कि कंपनी 18-24 माह में 400 करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य रख रही है। निवेशकों को एक मजबूत उत्पाद वितरण और सेवा नेटवर्क देना है। हमारा लक्ष्य निजी इक्विटी प्राप्त करना है, चाहे वह रणनीतिक निवेशक हो या गैर-रणनीतिक निवेशक। फिर हम आगे बढ़ेंगे और दीर्घावधि में सफल होंगे।

शिकॉगो एक्सचेंज में मजबूती से तेल-तिलहन की कीमतें सुधार के साथ बंद

- सरसों की मंडियों में आवक घट रही है जबकि सोयाबीन की मांग निरंतर बढ़ रही है

नई दिल्ली ।

शिकागो एक्सचेंज की मजबूती ने बीते सप्ताह खाद्य तेल-तिलहनों के दामों में सुधार की ओर बढ़ावा किया। इस दौरान मूंगफली तेल को छोड़कर सरसों, सोयाबीन तेल-तिलहन, कच्चा पामतेल (सीपीओ) एवं पामोलीन, मूंगफली तिलहन और बिनौला तेल के दाम सुधार के साथ बंद हुए। बाजार के जानकार सूत्रों के मुताबिक सरसों की मंडियों में आवक घट रही है जबकि सोयाबीन की मांग निरंतर बढ़ रही है। सरसों का जो स्टॉक है, वह सहकारी संस्थाओं के पास है जो इसकी बिकवाली में संतुलन बनाए रख रहे हैं। सोयाबीन और कच्चे पामतेल (सीपीओ) के दामों में भी सुधार दिखाई दिया। मूंगफली खल के भाव मामूली सुधार के साथ बंद हुए, जबकि मूंगफली तेल के दाम पर निर्यात की कमजोर मांग के कारण कोई विशेष बदलाव नहीं आया। विदेशों में पाम और पामोलीन की कीमतों में गिरावट होने के बावजूद, तेल की कीमतों में सुधार देखने को मिला। कपास की सीड के दामों में भी थोड़ी उलटाव दिखाई दी, जिसे बीते हफ्ते सीसीआई ने बिनौला सीड की बिक्री रोककर दिखाया।

बीते सप्ताह सरसों दाने का थोक भाव 125 रुपये सुधार के साथ 6,650-6,700 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। सरसों दादरी तेल का थोक भाव 200 रुपये की बढ़त के साथ 13,800 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। सरसों पक्की और कच्ची घानी तेल का भाव क्रमशः 40-40 रुपये के सुधार के साथ क्रमशः 2,340-2,440 रुपये और 2,340-2,465 रुपये टिन (15 किलो) पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में सोयाबीन दाने और सोयाबीन लूज का थोक भाव क्रमशः 35-35 रुपये की बढ़त के साथ क्रमशः 4,335-4,385 रुपये और 4,035-4,135 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। इसी प्रकार सोयाबीन दिल्ली एवं सोयाबीन इंदौर और सोयाबीन डीगम के दाम क्रमशः 650 रुपये, 400 रुपये और 650 रुपये की तेजी के साथ क्रमशः 13,750 रुपये, 13,350 रुपये और 9,700 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुए। समीक्षाधीन सप्ताह में मूंगफली तेल-तिलहन कीमतों में पिछले सप्ताहांत के मुकाबले सुधार आया। मूंगफली तिलहन का भाव 25 रुपये के मामूली सुधार के साथ 5,825-6,150 रुपये क्विंटल पर बंद हुआ। वहीं मूंगफली तेल गुजरात और मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल का भाव क्रमशः 14,000 रुपये और 2,125-2,425 रुपये प्रति टिन पर अपरिवर्तित बंद हुए। कच्चे पाम तेल (सीपीओ) का दाम 100 रुपये सुधरकर 13,000 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। पामोलीन दिल्ली का भाव 200 रुपये की बढ़त के साथ 14,200 रुपये प्रति क्विंटल तथा पामोलीन एक्स कांडला तेल का भाव 300 रुपये की तेजी के साथ 13,300 रुपये प्रति

नई इलेक्ट्रिक एसयूवी जी-क्लास ईक्यूजी 580 लॉन्च

नई दिल्ली।

भारत में मर्सिडीज-बेंज ने नई इलेक्ट्रिक एसयूवी जी-क्लास ईक्यूजी 580 को लॉन्च किया है। यह कंपनी की लग्जरी इलेक्ट्रिक गाड़ियों के सेगमेंट में एक नई दिशा को चिह्नित करती है। इस अत्याधुनिक एसयूवी की एक्स-शोरूम कीमत 3 करोड़ रुपये है। इस वाहन में 116 केडब्ल्यूएच की बैटरी है, जो चार इलेक्ट्रिक मोटरों से जुड़ी हुई है और यह 587 पीएस की पावर और 1,164 एनएम का टॉर्क उत्पन्न करती है। इस दमदार पावर के साथ, ईक्यूजी 580 महज 4.7 सेकंड में 0 से 100 किमी/घंटा की गति पकड़ सकती है। कंपनी का दावा है कि इसकी बैटरी फुल चार्ज होने पर 473 किमी तक की रेंज प्रदान करती है, जिससे यह लंबी दूरी की यात्रा के लिए एक आदर्श विकल्प बन जाती है। इसके अलावा, इस इलेक्ट्रिक एसयूवी को 32 मिनट में 10 प्रतिशत से 80 प्रतिशत तक चार्ज किया जा सकता है, जो इसके फास्ट-चार्जिंग क्षमता को दर्शाता है। ईक्यूजी 580 में प्रीमियम सुविधाओं का भरपूर ध्यान रखा गया है। भारत में इसे पेश किया गया है और इसे 2025 में भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो में भी दिखाया जाएगा। यह मर्सिडीज-बेंज के इलेक्ट्रिक वाहनों की नई दिशा और भारतीय बाजार में उनकी उपस्थिति को और मजबूत करेगा।

इस वर्ष भारतीय अर्थव्यवस्था में थोड़ी कमजोरी संभावितः आईएमएफ

- चीन में मुद्रास्फीति और मांग की चुनौतियों का सामना करना भी आईएमएफ के लिए हो सकता है मुश्किल

मुंबई । अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालिना जॉर्जीवा ने स्वीकार किया कि भले ही दुनियाभर में वैश्विक वृद्धि स्थिर रहेगी, लेकिन 2025 में भारतीय अर्थव्यवस्था में थोड़ी कमजोरी संभावित है। उन्होंने कहा कि इस वर्ष वैश्विक स्तर पर अनिश्चितता बनी रहेगी, खासकर अमेरिका की व्यापार नीति के चलते। जॉर्जीवा ने उम्मीद जताई है कि भारतीय अर्थव्यवस्था 2025 में थोड़ी कमजोर रहेगी। उन्होंने बताया कि भारत के अलावा चीन में मुद्रास्फीति और मांग की चुनौतियों का सामना करना भी आईएमएफ के लिए मुश्किल हो सकता है। उन्होंने डोनाल्ड ट्रंप द्वारा चीन, कनाडा और मैक्सिको पर शुल्क लगाने की योजना की घोषणा का माध्यम उचित नहीं माना, कारण रखते हुए कि इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था को और अधिक अनिश्चितता का सामना करना पड़ सकता है। जॉर्जीवा ने आगे कहा कि अमेरिका के नीतिगत कदम, खासकर शुल्क और कर वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण हैं और अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकते हैं।

वानखेड़े स्टेडियम की 50वीं वर्षगांठ के समारोह में गावस्कर सहित मुम्बई के पूर्व कप्तान सम्मानित

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) ने वानखेड़े स्टेडियम की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर एक समारोह में सुनील गावस्कर सहित मुंबई क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तानों को सम्मानित किया है। गावस्कर 1974 में वेस्टइंडीज के खिलाफ वानखेड़े स्टेडियम में पहला टेस्ट मैच खेलने वाली भारतीय टीम के सदस्य भी थे। एमसीए की 50वीं वर्षगांठ के अवसर सप्ताह भर कार्यक्रम चलेंगे।

समारोह के दौरान गावस्कर ने कहा, ÷इस प्रतिष्ठित स्थल पर वापस आना बहुत अच्छा है, एक ऐसा स्थल जिसने भारतीय क्रिकेट को ऐसे शानदार पल दिए हैं। आज प्रतिष्ठित वानखेड़े स्टेडियम के 50वें वर्षगांठ समारोह की शुरुआत है और एक सलामी बल्लेबाज के रूप में, मैं इसकी शुरुआत को भूल नहीं कर सकता था। मैं एमसीए को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और मेरे स्कूल के दिनों से मुझे जो अवसर प्रदान किए हैं, उसके लिए अपना गहरा आभार व्यक्त करता हूं। मैं अपनी सफलता का श्रेय एमसीए से प्राप्त समर्थन और प्रोत्साहन को देता हूं।

वहीं सम्मान समारोह में एमसीए अध्यक्ष अजिंक्य नाइक के साथ ही एमसीए उपाध्यक्ष संजय नाइक, सचिव अभय हडप, कोषाध्यक्ष अरमान मलिक, संयुक्त सचिव दीपक पाटिल और पूर्व अध्यक्ष विजय पाटिल भी थे। समारोह में संजय मांजरेकर, वसीम जाफर, राजू कुलकर्णी, चंद्रकांत पंडित, लालचंद राजपूत, शोभा पंडित और अरुंधति घोष सहित कई क्रिकेट दिग्गजों ने भाग लिया, जिन्होंने मुंबई क्रिकेट की समृद्ध विरासत में योगदान दिया।

सप्ताह भर चलने वाले समारोह दो रोमांचक क्रिकेट मैच आयोजित किए गए, जिसमें मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए), स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ मुंबई (एसजेएएम), महावाणिज्य दूत और आईएएस अधिकारियों की टीमों ने हिस्सा लिया। पहले मैच में, एमसीए ने स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ मुंबई को पांच रनों से हराया, जबकि आईएएस अधिकारियों की टीम ने दूसरे मैच में महावाणिज्य दूत टीम को 20 रनों से हराया।

इस अवसर पर, एमसीए के अध्यक्ष इक ने कहा, 'वानखेड़े स्टेडियम की 50वीं वर्षगांठ हमारे लिए एक विशेष अवसर है। आज भव्य समारोह की शुरुआत हुई और इस सप्ताह भर चलने वाले कार्यक्रम के पीछे हमारा मुख्य लक्ष्य अगली पीढ़ी को मुंबई के क्रिकेट इतिहास और मुंबई के लिए खेलने वाले पुरुष और महिला खिलाड़ियों के योगदान के बारे में बताना और युवा पीढ़ी को इस विरासत को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करना है।'

50वीं वर्षगांठ का जश्न पूरे सप्ताह जारी रहेगा। एमसीए 15 जनवरी को एमसीए के क्लबों और मैदानों के ग्राउंड्समैन को सम्मानित करेगा और उनके लिए पॉली उमरीगर स्वास्थ्य शिविर और विशेष लंच का आयोजन करेगा।

विश्व कप की मेजबानी में पुर्तगाल का भी नाम, स्टार फुटबॉलर रोनाल्डो की पहली प्रतिक्रिया आई सामने

मैड्रिड (एजेंसी)। पुर्तगाल सहित पांच अन्य देशों को 2030 में होने वाले फुटबॉल विश्व कप की मेजबानी मिलने के बाद स्टार स्ट्राइकर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने कहा कि छह साल बाद होने वाला यह टूर्नामेंट बेहद खास होगा। विश्व फुटबॉल की सर्वोच्च संस्था फीफा ने बुधवार को 2030 और 2034 में होने वाले विश्व कप के मेजबानों की औपचारिक घोषणा की। विश्व कप 2030 के मैच तीन महाद्वीपों के छह देशों में खेले जाएंगे।

यह पहला अवसर होगा जबकि विश्व कप छह देशों में आयोजित किया जाएगा। स्पेन, पुर्तगाल और मोरक्को को इसकी संयुक्त मेजबानी सौंपी गई है लेकिन दक्षिण अमेरिकी देशों अर्जेंटीना, पैराग्वे और उरुग्वे में भी इसके एक-एक मैच आयोजित किए जाएंगे। पहला विश्व कप 1930 में उरुग्वे में आयोजित किया गया था और फीफा ने उसके 100 साल पूरे होने का जश्न मनाने के लिए दक्षिण अमेरिका के इन देशों को एक-एक मैच की मेजबानी सौंपी है। रोनाल्डो ने पुर्तगाल की जर्सी पहनकर जश्न मनाते हुए अपनी तस्वीर इंस्टाग्राम पर पोस्ट की जिसमें उन्होंने लिखा है, 'सपना सच हो गया। यह बेहद खास विश्व कप होगा। पुर्तगाल 2030 में विश्व कप की मेजबानी करके हमें गौरवान्वित करेगा।' फीफा ने इसके साथ ही 2034 में होने वाले विश्व कप की मेजबानी सऊदी अरब को सौंपने की घोषणा भी की।

भारत-ऑस्ट्रेलिया नहीं, जिम्बाब्वे ने बनाया टी20 का सबसे बड़ा स्कोर

-सिकंदर, ब्रायन और मरुमानी ने की छक्के-चौकों की बौछार, 57 बाउंड्री लगाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्रिकेट में चौकों-छक्के लगना आम है और स्टेडियम में मौजूद लोग भी यही चाहते हैं, अगर किसी 20 ओवर के मैच में 57 बाउंड्री लग जाएं तो यह कमाल ही है। ऐसा कमाल हुआ भी है जब जिम्बाब्वे के बल्लेबाज ने टी20 मैच में 27 छक्के और 30 चौके लगाए। जिम्बाब्वे ने कई रिकॉर्ड भी तोड़ दिए और उसने 4 विकेट पर 344 रन बनाए थे, जो टी20 इंटरनेशनल मैचों में सबसे बड़े स्कोर का विश्व रिकॉर्ड है।

यह कारनामा जिम्बाब्वे ने केन्या की राजधानी नैरोबी में पिछले साल 23 अक्टूबर को किया था और इसका शिकार बना था गाम्बिया। आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप सब रीजनल अफ्रीका क्वालिफायर के इस मुकाबले में जिम्बाब्वे ने पहले बल्लेबाजी की। ओपनर ब्रायन बेनेट (50) और टी मरुमानी (62) ने 98 रन बहुत ही तेज गति से बनाए, लेकिन असली तूफान तब आया जब जिम्बाब्वे के कप्तान सिकंदर रजा मैदान पर उतरे। सिकंदर रजा ने इस मैच में महज 33 गेंदों में शतक लगा दिया। यह टी20 इंटरनेशनल मैचों में दूसरा सबसे तेज शतक था। उन्होंने 43 गेंद में 133 रन की पारी खेली, जिसमें 15 छक्के और 7 चौके लगाए थे। जिम्बाब्वे के इस रिकॉर्ड खेल में क्लाइव मंडाडे ने भी 17 गेंद में 53 रन बनाए थे। उन्होंने 17 में से 8 गेंदों को बाउंड्री के पार कराई। 5 गगनचुंबी छक्के और 3 चौके लगाकर नाबाद रहे। जिम्बाब्वे की इस पारी में 27 छक्के लगे। यह टी20 इंटरनेशनल मैचों में विश्व रिकॉर्ड है। जिम्बाब्वे ने इस मैच में चौकों और छक्कों से 282 रन बनाए। यह टी20 इंटरनेशनल का विश्व रिकॉर्ड है। जिम्बाब्वे के बल्लेबाजों की तूफानी रफ्तार के बाद गेंदबाज का भी जलजला रहा। जिम्बाब्वे के गेंदबाजों ने गाम्बिया की पारी महज 54 रन पर समेट दी। इस तरह उसने 290 रन से मैच जीत कर इतिहास रच दिया था।

23 मार्च से शुरू होगा आईपीएल 2025,

सैकिया और भाटिया ने बीसीसीआई सचिव और कोषाध्यक्ष का पदभार संभाला

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने आधिकारिक तौर पर इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 की घोषणा कर दी है, जो 23 मार्च, 2025 से शुरू होने वाला है। बीसीसीआई के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने रविवार को मुंबई में आयोजित बीसीसीआई की विशेष आम बैठक (एसजीएम) के बाद शुरुआत की तारीख का खुलासा किया।

बीसीसीआई के नए सचिव और कोषाध्यक्ष चुने गए

एसजीएम में, देवजीत सैकिया और प्रभतेज सिंह भाटिया को क्रमशः नए बीसीसीआई सचिव और कोषाध्यक्ष के रूप में निर्विरोध चुना गया। शुक्ला ने कहा, 'देवजीत सैकिया को नए बीसीसीआई सचिव और प्रभतेज सिंह भाटिया को कोषाध्यक्ष के रूप में चुना गया है।'

दिसंबर में जय शाह के आधिकारिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (ICC) के अध्यक्ष की भूमिका संभालने के बाद से सचिव का पद खाली था। इस बीच, महाराष्ट्र सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में नियुक्त होने के बाद आशीष शेलार ने बीसीसीआई कोषाध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे दिया।

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए आगामी निर्णय

शुक्ला ने यह भी पुष्टि की कि 2025 आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत की टीम को अंतिम रूप देने के लिए 18 या 19 जनवरी को एक बैठक निर्धारित की गई है। यह निर्णय उन रिपोर्टों के बाद लिया गया है, जिनमें कहा गया है कि आईसीसी द्वारा 12 जनवरी को आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि निर्धारित किए जाने के बावजूद भारत की टीम की घोषणा में देरी हो सकती है।

अब तक, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और बांग्लादेश ने टूर्नामेंट के लिए अपनी टीमों की घोषणा कर दी है। भारत अपने चैंपियंस ट्रॉफी अभियान की शुरुआत 20 फरवरी को दुबई में बांग्लादेश के खिलाफ ग्रुप-स्टेज मैच के साथ करेगा, उसके बाद 23 फरवरी को पाकिस्तान के खिलाफ एक हाई-स्टेक मुकाबला और 2 मार्च को न्यूजीलैंड के खिलाफ एक मैच होगा, ये सभी मैच दुबई में ही होंगे।

ओलंपिक चैंपियन झेंग दूसरे दौर में, ऑस्ट्रेलियाई ओपन में पहले दिन बारिश ने डाली बाधा

मेलबर्न ।ओलंपिक चैंपियन झेंग किनवेन ने रविवार को यहां रॉड लेवर एरेना में छत के नीचे इनडोर परिस्थितियों का भरपूर फायदा उठाते हुए सीधे सेटों में जीत दर्ज करके ऑस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दौर में प्रवेश किया, जबकि बाहर बारिश हो रही थी। साल के पहले ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के पहले दिन बारिश के कारण कई मैच नहीं हो पाए क्योंकि इनडोर सुविधा में कुछ मैचों का आयोजन ही संभव हो पाया था। पिछले साल फाइनल में आर्यना सबालेकना से हारने के बाद मेलबर्न पार्क के मुख्य कोर्ट पर अपने पहले मैच में पांचवीं वरीयता प्राप्त झेंग ने 20 वर्षीय क्वालीफायर एंका टोडोनी को 7-6 (3), 6-1 से हराया।

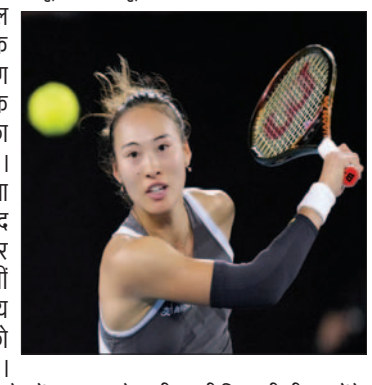

सत्रह वर्षीय मीरा एंड्रीवा दूसरे दौर में जगह बनाने वाली पहली खिलाड़ी थी। उन्होंने जॉन कैन एरेना में छत के नीचे खेले गए मैच में मैरी बौज़कोवा को सीधे सेटों में 6-3, 6-3 से पराजित किया।

पाकिस्तान के प्रमुख तेज गेंदबाज शाहीन अफरीदी का टेस्ट क्रिकेट में भविष्य खतरे में

कराची ।पाकिस्तान के प्रमुख तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी को वेस्टइंडीज के खिलाफ घरेलू मैदान पर होने वाली दो टेस्ट मैच की श्रृंखला के लिए टीम में नहीं चुना गया है जिससे उनका टेस्ट क्रिकेट में भविष्य खतरे में पड़ गया है। शाहीन को 2024 की शुरुआत से पाकिस्तान के आखिरी 12 टेस्ट मैचों में से आठ मैच से या तो बाहर कर दिया गया या फिर उन्हें तथाकथित रूप से विश्राम दिया गया। बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज ने अभी तक 32 टेस्ट में 116 विकेट लिए हैं। उन्हें दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उसकी धरती पर खेले गए दो टेस्ट मैच की श्रृंखला के लिए भी टीम में नहीं चुना गया था। तब चयनकर्ताओं ने स्पष्टीकरण दिया था कि वे उन्हें 19 फरवरी से शुरू होने वाली आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए तरोताजा चाहते हैं। दिलचस्प बात यह है कि पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने शाहीन को मौजूदा बांग्लादेश प्रीमियर लीग में खेलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) जारी करने में कोई संकोच नहीं किया, जबकि उसी समय दक्षिण अफ्रीका में टेस्ट श्रृंखला चल रही थी। चयनकर्ताओं ने वेस्टइंडीज के खिलाफ दो टेस्ट मैचों के लिए तेज गेंदबाज नसीम शाह, मीर हमजा, मुहम्मद अब्बास और आमिर जमाल को भी टीम में नहीं रखा जबकि वे दक्षिण अफ्रीका में खेली गई श्रृंखला में टीम का हिस्सा थे। पाकिस्तान इस श्रृंखला के दोनों मैच में हार गया था। चयनकर्ताओं के एक करीबी सूत्र ने कहा कि शाहीन और नसीम दोनों को चैंपियंस ट्रॉफी के लिए तैयार किया जा रहा है। सूत्र ने कहा, 'चयनकर्ता चाहते हैं कि शाहीन और यहां तक कि नसीम भी चैंपियंस ट्रॉफी में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करें क्योंकि यह 50 ओवरों की प्रतियोगिता है और हम गत चैंपियन हैं।'

प्रिटोरियस के 97 रन, पार्ल रॉयल्स ने सनराइजर्स ईस्टर्न केप को नौ विकेट से हराया

पार्ल (एजेंसी)। लहुआन ड्रे प्रिटोरियस की 51 गेंद में 97 रन की पारी की मदद से पार्ल रॉयल्स ने शनिवार को यहां एसए20 में सनराइजर्स ईस्टर्न केप को नौ विकेट से शिकस्त दी। अठारह साल के प्रिटोरियस ने अपनी पारी के दौरान 10 चौके और छह छक्के जड़े। उन्होंने इंग्लैंड के पूर्व कप्तान जो रूट के साथ 132 रन की साझेदारी निभाई। प्रिटोरियस के मार्को यानसेन की गेंद पर पगबाधा आउट होने के बाद रूट ने 44 गेंद में नाबाद 62 रन (चार चौके, एक छक्का) बनाकर अपनी टीम को जीत दिलाई।

इससे पहले सनराइजर्स ईस्टर्न केप के कप्तान ऐडन मार्करम ने 49 गेंद में 82 रन (सात चौके, दो छक्के) की पारी खेलकर फॉर्म में वापसी की। उनकी ट्रिस्टन स्टब्स (नाबाद 28 रन) की पारी से टीम पांच विकेट पर 175 रन बनाने में सफल रही लेकिन इस स्कोर का बचाव नहीं कर सकी। वहीं शुक्रवार को डरबन सुपर जायंट्स ने विल जैक्स (64) और रहमानुल्लाह गुरबाज़ (89) की तूफानी पारियों के बावजूद प्रिटोरिया कैपिटल्स पर दो रन से रोमांचक जीत दर्ज की।

डरबन की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए चार विकेट पर 209 रन बनाए। इसके जवाब में जैक्स और गुरबाज़ ने पहले विकेट के लिए 154 रन जोड़कर प्रिटोरिया को शानदार शुरुआत दिलाई। इसके बावजूद उसकी टीम निर्धारित 20 ओवर में छह विकेट पर 207 रन ही बना पाई। अफगानिस्तान के गेंदबाज नूर अहमद ने इन दोनों बल्लेबाजों को आउट करके डरबन को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

जैक्स ने 35 गेंदों में पांच छक्कों और तीन चौकों की मदद से 64 रन, जबकि गुरबाज ने सात छक्कों और तीन चौकों की मदद से 43 गेंदों में 89 रन बनाए। इससे पहले डरबन की टीम ने वियान मुल्डर की 19 गेंदों में तीन छक्कों और चार चौकों की मदद से नाबाद 45 रन और न्यूजीलैंड के अनुभवी बल्लेबाज केन विलियमसन की 40 गेंदों में तीन छक्कों और चार चौकों की मदद से नाबाद 60 रन की बदौलत मजबूत स्कोर बनाया था।

हैदराबाद तूफान्स ने सूरमा हॉकी को शूटआउट में 4-3 से हराया, यूपी रूद्राज जीता

राउरकेला ।हैदराबाद तूफान्स ने शनिवार को यहां हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) के रोमांचक मैच में पेनल्टी शूटआउट में सूरमा हॉकी क्लब को 4-3 से शिकस्त दी। दोनों टीमें नियमित समय में 1-1 से बराबरी पर थी। सूरमा हॉकी क्लब के लिए निकोलस डेला टोरे (आठवें मिनट) और हैदराबाद तूफान्स के लिए अमनदीप लकड़ा (40वें मिनट) ने गोल किया। हैदराबाद तूफान्स के गोलकीपर डॉमिनिक डिक्सन के 'सडन डेथ' में शानदार प्रदर्शन से टीम ने बोनस अंक जुटाया। हैदराबाद तूफान्स अब रविवार को वेदांता कलिंगा लांसर्स से भिड़ेगी। एक अन्य मैच में यूपी रूद्राज ने दिल्ली एसजी पाइपर्स को 3-1 से पराजित किया। यूपी रूद्राज के लिए फ्लोरिज वोर्टबोयर ने 30वें, केन रसेल ने 43वें और टैंगुए कोसिन्स ने 54वें मिनट में गोल दाकर अपनी टीम को तीन अंक दिलाये जिससे टीम तालिका में दूसरे नंबर पर पहुंच गई। दिल्ली एसजी पाइपर्स के लिए जेक वेटन ने 29वें मिनट में गोल दागा।

रूड, निशिकोरी ने पहले दौर में पांच सेटों के रोमांचक मुकाबले में जीत दर्ज की

मेलबर्न, (एजेंसी)। छठे वरीय कैस्पर रूड ने रविवार को नाटकीय मुकाबले में जीत दर्ज की, जब नॉर्वे के इस खिलाड़ी ने रॉड लेवर एरिना में स्पेन के खिलाड़ी जैम मुनार को 6-3, 1-6, 7-5, 2-6, 6-1 से हराकर लगातार चौथे साल ऑस्ट्रेलियाई ओपन के दूसरे दौर में प्रवेश किया। एटीपी के आंकड़ों के अनुसार, रूड ने 37 अनफोर्स्ड गलतियों के साथ 48 विनर्स लगाए और पांचवें सेट में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया, जिसमें उन्होंने 93 प्रतिशत (13/14) फर्स्ट-सर्व पॉइंट जीतकर रॉड लेवर एरिना में तीन घंटे, 24 मिनट तक चले रोमांचक मुकाबले में जीत दर्ज की। 26 वर्षीय रूड, जो तीन बार मेजर फाइनलिस्ट रह चुके हैं, ने जीत के साथ अपने पांच सेट के रिकॉर्ड को 10-6 तक सुधारा और मुनार के खिलाफ एटीपी हेड-टू-हेड सीरीज में 3-1 से आगे हैं।

हालांकि, मेलबर्न में उनका सर्वश्रेष्ठ परिणाम 2021 में आया जब वे चौथे दौर में पहुंचे। 26 वर्षीय खिलाड़ी का अगला मुकाबला चेक खिलाड़ी जैकब मेनसिक या जॉर्जियाई क्वालीफायर निकोलोज बेसिलशविली से होगा। अन्य मुकाबले में, जापान के केई निशिकोरी ने दो सेट से पिछड़ने के बाद वापसी की और पहले दौर के जबरदस्त मैच में ब्राजील के थियागो मोंटेइरो के खिलाफ मैच प्वाइंट बचाए। जॉन कैन एरिना में छत के नीचे, जापानी स्टार सीधे सेटों में हारने के कगार पर थे, जब तीसरे सेट में 4-5 पर मैच में बने रहने के लिए सर्विस करते समय उन्हें दो मैच प्वाइंट का सामना करना पड़ा।

हालांकि, उन्होंने हार मानने से इनकार कर दिया, 23 विनर्स लगाए और सेट चार और पांच में सिर्फ़ आठ अनफोर्स्ड एरर किए, जिससे चार घंटे छह मिनट के बाद 4-6, 6-7(4), 7-5, 6-2, 6-3 से जीत दर्ज की। निशिकोरी 2019 के बाद पहली बार ऑस्ट्रेलियन ओपन के दूसरे दौर में पहुंचे हैं, जब उन्होंने मेलबर्न में चौथी बार क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया था। 35 वर्षीय खिलाड़ी, जो हांगकांग में एटीपी 250 इवेंट में फाइनल तक पहुंचने के बाद हार्ड-कोर्ट मेजर में पहुंचे थे, अब टॉमी पॉल या क्रिस्टोफर ओ%कॉनेल से खेलेंगे। इससे पहले दिन में, फ्रांसीसी आर्थर फिल्स ने ओटो विरटेनन के खिलाफ़ 3-6, 7-6(4), 6-4, 6-4 से जीत हासिल की। 20 वर्षीय खिलाड़ी का अगला मुकाबला हमवतन क्वेंटिन हेलिस या ऑस्ट्रेलियाई एडम वाल्टन से होगा।

चैंपियंस ट्रॉफी : बुमराह के बाहर होने पर ये तेज गेंदबाज ले सकते हैं उनकी जगह

स्पोर्ट्स डेस्क ~ चैंपियंस ट्रॉफी 19 फरवरी से शुरू हो रहा है। लेकिन भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह चोटिल हैं और यह टीम के लिए बुरी खबर है। बुमराह की पीठ में ऐंठन है जिस वजह से वह चैंपियंस ट्रॉफी के बाहर हो सकते हैं। अब सवाल यह खड़ा हो रहा है कि उनकी जगह कौन ले सकता है। आइए उन प्लेयर्स के बारे में नजर डालते हैं जो चैम्पियन्स ट्रॉफी में बुमराह के बाहर होने पर उनकी जगह ले सकते हैं-

प्रसिद्ध कृष्णा - प्रसिद्ध कृष्ण का हालिया प्रदर्शन काफी शानदार है और वह भारत के स्टार तेज गेंदबाजों में से एक हैं। प्रसिद्ध ने हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ काफी शानदार गेंदबाजी की थी। बीते 5 मैचों में वह 15 से भी अधिक विकेट चटका चुके हैं।

उमरान मलिक - भारत के सबसे तेज गेंदबाज उमरान मलिक भी विकल्प हो सकते हैं। अगर बुमराह पूरी तरह से फिट नहीं हो पाते हैं तो उमरान को मौका मिलने की उम्मीद की जा सकती है। उमरान के नाम भारत की ओर से सबसे तेज गेंद फेंकने का रिकॉर्ड दर्ज है। उनकी फास्टेस्ट स्पीड 157 ध्द्वश्चद्ध है।

आवेश खान - भारत के स्टार तेज गेंदबाजों में से एक आवेश खान भी चोटिल जसप्रीत बुमराह को रिप्लेस करने कर सकते हैं। आवेश ने अब तक भारत के लिए कई मुकाबले खेले हैं और लगभग हर मैच में उनका प्रदर्शन शानदार रहा है। ऐसे में अगर उन्हें चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में खेलने का मौका मिलेगा तो वह काफी अच्छा कर सकते हैं।

भारतीय क्रिकेट ने बेहतर खिलाड़ियों से ज्यादा कप्तानों को दिया जन्म

मेलबर्न (एजेंसी)। पिछले पांच सालों में भारतीय क्रिकेट ने बेहतर खिलाड़ियों से ज्यादा कप्तानों को जन्म दिया है, जिससे टीम में नेतृत्व को लेकर असमंजस बढ़ता जा रहा है। वर्तमान में भारतीय क्रिकेट टीम को एक सेनापति के बजाय कई सेनापति अपनी-अपनी दिशा में सेना को चलाने की कोशिश कर रहे हैं।

इस संकट का असर अब आगामी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में देखने को मिल सकता है, जहां भारतीय टीम संभावित रूप से सात कप्तानों के साथ मैदान में उतरेगी। टीम इंडिया के नियमित कप्तान रोहित शर्मा के साथ विराट कोहली, हार्दिक पांड्या, जसप्रीत बुमराह, सूर्यकुमार यादव, ऋषभ पंत और संभावित तौर पर केएल राहुल जैसे खिलाड़ी भी दुबई जाने वाली टीम में शामिल होंगे। ये सभी खिलाड़ी किसी न किसी समय भारतीय टीम की कप्तानी कर चुके हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि जब एक टीम में इतने कप्तान हों, तो क्या सभी एक पेज पर आ पाएंगे? भारतीय क्रिकेट में कप्तानी को लेकर विवाद कोई नई बात नहीं है। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर टीम में चार कप्तान थे, जिनमें से दो ने अलग-अलग मौकों पर टीम का नेतृत्व किया। खबरें यहां तक थीं कि एक और खिलाड़ी कप्तानी की महत्वाकांक्षा रखता था। अब चैंपियंस ट्रॉफी जैसे बड़े टूर्नामेंट में सात कप्तानों की मौजूदगी टीम के लिए रणनीतिक और सामंजस्य का बड़ा चैलेंज बन सकती है। 2013 में महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में भारतीय टीम ने चैंपियंस ट्रॉफी जीती थी। उस वक्त टीम में सिर्फ एक ही लीडर था, जिसने खिलाड़ियों को एक दिशा में संगठित रखा। इसके बाद से खिलाड़ियों की फिटनेस और क्रिकेट कैलेंडर की व्यस्तता के कारण कप्तानों में बदलाव बढ़ा, जिससे टीम में नेतृत्व की स्थिरता कम हो गई।

रोहित शर्मा, जो 2013 की चैंपियंस ट्रॉफी जीत का हिस्सा थे, टीम को एकजुट रखने की क्षमता रखते हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या वे बाकी कप्तानों के साथ तालमेल बिठाकर इस चुनौती को पार कर पाएंगे? जितने सिर, उतने दिमाग वाली स्थिति में खिलाड़ियों का नेतृत्व करना रोहित के लिए बड़ी परीक्षा साबित हो सकता है। भारतीय क्रिकेट टीम के फैंस को 2025 की शुरुआत में खराब प्रदर्शन के बाद अब चैंपियंस ट्रॉफी से वापसी की उम्मीद है। लेकिन कप्तानों की इस फौज के बीच यदि हर कोई अपनी-अपनी शैली में नेतृत्व करने की कोशिश करेगा, तो टीम के लिए यह टूर्नामेंट एक और खाली हाथ वापसी का कारण बन सकता है।

संक्षिप्त खबरें

शौण्डिक सम्मेलन में बतौर अतिथि भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता हुई शामिल

हजारीबाग/बिभा संवाददाता। छत्तीसगढ़ रायपुर मे अखिल भारतीय राष्ट्रीय शौण्डिक सम्मेलन में बतौर अतिथि भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता शामिल हुई। जहां अखिल भारतीय राष्ट्रीय शौण्डिक समाज के सदस्यों एवं महिला साथियों द्वारा अतिथि वंदन कर शॉल ओढाकर एवं अपनापन के भाव से स्वागत व अभिनंदन किया। भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने आत्मीय स्वागत व अभिनंदन से काफी अभिभूत हुई। मंच पर हाथ जोड़कर आत्मीय भाव से समारोह में उपस्थित लोगों का अभिवादन की। साथ ही अपनापन के भाव से स्वागत व अभिनंदन के लिए भारतीय राष्ट्रीय शौण्डिक समाज का सहृदय आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित की। जिसमें मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, कृषि मंत्री राम विचार नेताम, विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमन सिंह, हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद एवं शौण्डिक समाज के प्रदेश अध्यक्ष शिवरत्न गुप्ता सहित देश एवं विदेश के कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। मौके पर भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने मंच पर संबोधित कर कहा कि अखिल भारतीय राष्ट्रीय शौण्डिक समाज द्वारा भव्य सम्मेलन से हमें समाज के उत्थान में एक नई ताकत एवं दिशा मिलेगी। हम सभी उस दिशा एवं मार्गदर्शन प्राप्त कर समाज को स्वर्णिम बनाएंगे। इस भव्य सम्मेलन के लिए छत्तीसगढ़ शौण्डिक समाज के प्रदेश अध्यक्ष शिवरत्न गुप्ता एवं उनकी टीम का आभार व्यक्त करती हूँ। जिनके पहल से हम सभी एक मंच पर उपस्थित होकर शौण्डिक समाज को एक नई दिशा प्रदान कर रहें हैं। उन्होंने कहा कि समाज में एकता कायम रखना जरूरी तभी समाज का उत्थान होगा और राजनीतिक क्षितिज पर समाज का परचम लहराएगा। हर अधिकार को हासिल रखने के लिए एकता बनाएं रखना होगा। एकता के बल पर ही समाज का हर समास्या का समाधान संभव है। समाज के उत्थान के लिए जनसरोकार से जुड़ी तमाम समास्याओं का समाधान के लिए राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार से दबाव डालना होगा। इस भव्य सम्मेलन में बतौर अतिथि आमंत्रित करने के लिए अखिल भारतीय राष्ट्रीय शौण्डिक समाज का आभार व धन्यवाद व्यक्त करती हूँ।

विद्यालय स्थापना दिवस एवं राष्ट्रीय युवा दिवस मनाया गया

हजारीबाग/बिभा संवाददाता। रविवार को स्थानीय केडी चिल्ड्रेन अकादमी / उच्च विद्यालय, डॉ भाभा मार्ग, मुनका बगीचा, हजारीबाग में विद्यालय स्थापना दिवस एवं राष्ट्रीय युवा दिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया। विद्यालय प्राचार्या मीनू गुप्ता एवं उप प्राचार्या हेमलता मिश्रा की अध्यक्षता में समारोह का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम विद्यालय प्राचार्या ने स्वामी जी के चित्र पर माल्यार्पण कर स्वामी विवेकानंद जी के जीवन के मूल्यों को आत्मसात करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया तथा विद्यालय की वर्ष 1985 में स्थापना से लेकर आज तक की जानकारी दी। ज्ञात हो कि विद्यालय आज अपना 40 वां स्थापना दिवस मना रहा है। 12 जनवरी 1985 को विद्यालय की स्थापना स्वर्गीय डोमन लाल गुप्ता ने अपनी धर्म पत्नी स्वर्गीय नूपुर बाला गुप्ता के साथ मिलकर समाज के गरीब बच्चों को कम शुल्क में स्तरीय और अच्छी शिक्षा देने के उद्देश्य से किए थे। उन्होंने विद्यालय का ध्येय वाक्य - शिक्षा, सेवा, संस्कार रखा था। उनके सपनों को आज भी यह विद्यालय साकार कर रहा है। सभा का संचालन विद्यालय की सहायक शिक्षिका रिया कुमारी द्वारा किया गया। विद्यालय के नवम एवं दशम के भैया बहनों एवं बाल संसद के सदस्यों द्वारा स्वामी जी के जीवन से जुड़ी बहुत सी घटनाओं का उल्लेख किया गया। वर्ग नवम की छात्राओं ने स्वामी विवेकानंद के जीवन पर लिखी हुई कविताएं सुनाई तथा मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति की जिसने सभी का मन मोह लिया। विद्यालय की पुरानी शिक्षिका नीलम सिंह ने अपने विचारों एवं अनुभवों को सभी के साथ साझा किया। धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय की उप प्राचार्या ने किया। इस पावन अवसर पर विद्यालय के सहायक शिक्षक उपेंद्र पांडेय, जयनाथ महतो, धनंजय मिश्रा, विजय सिन्हा, मुकेश कुमार, सुखदेव यादव, राहुल सिन्हा, अमिता प्रसाद, संगम पांडेय, पूनम सिन्हा, कुमारी लीलावती, सुजाता रावत, आरोही कुमारी, नैंसी कुमारी, माही गुप्ता, कल्याणी दुबे, प्रियंका कुमारी,श्वेता मिश्रा, मीनाक्षी सिन्हा, राफिया खातून, जूली सिन्हा, पूनम तिवारी, मंजू गुप्ता, पूनम गुप्ता, आकांक्षा वर्मा, अमन कुमार सिन्हा, पीयूष कुमार आदि सभी शिक्षक एवं शिक्षिकाए उपस्थित रहे।

दो दिवसीय कार्यशाला स्मार्ट फाउंडेशन के सहभागिता के साथ आयोजन हुआ

हजारीबाग/बिभा संवाददाता। स्वामी धर्मबंधु कॉलेज ऑफ एजुकेशन में "व्यक्तित्व विकास और शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में" ,टॉपिक पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के निदेशक डॉ नजीर अंसारी एवं प्राचार्या डॉ. सारिका कुमारी के मार्गदर्शन में दो दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न हुआ । इस कार्यशाला का संचालन आशीष कुमार सिंह (स्मार्ट फाउंडेशन) द्वारा किया गया। प्रथम दिन के कार्यशाला में उन्होंने इंग्लिश वर्ड के उच्चारण में आई कठिनाई को दूर करने के लिए वेवसाईट की जानकारी दी साथ ही साथ व्यक्तित्व विकास ,कौशल विकास,आत्मविश्वास बनाए रखने पर, बात की। दूसरे दिन के कार्यशाला में आशीष कुमार सिंह जी ने इंटरव्यू कैसे देना है और इंटरव्यू कैसे लेना है के बारे में विस्तृत जानकारी दी। प्रशिक्षुओं ने बहुत ही उत्साहपूर्वक कार्यशाला में भाग लिया। कार्यक्रम में सभी प्रशिक्षुगण, प्राध्यापकगण, शिक्षकेत्तर कर्मी उपस्थित थे, जिनकें सहयोग से यह कार्यशाला सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल की संसदीय सत्रों में पहली ही बार में बेमिसाल उपलब्धि

तीन सत्र, 54 दिनों की सदन अवधि के कुल वर्किंग डे 44 में 100 फीसदी रही उपस्थिति

बिभा संवाददाता

रामगढ़। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल की पहली बार में ही देश के सर्वोच्च सदन संसद के तीनों सत्रों में बेमिसाल उपलब्धि रही। उन्होंने तीन सत्रों के 54 दिनों की सदन अवधि में कुल वर्किंग डे 44 में दमदार अपनी सौ फीसदी उपस्थिति दर्ज कराई। उक्त बातें सांसद श्री जयसवाल ने रामगढ़ चैम्बर भवन में आयोजित प्रेस वार्ता में कहीं।

श्री जयसवाल ने आगे कहा कि इस अनमोल अवधि में अपने हजारीबाग संसदीय क्षेत्र के जनहित से जुड़े कई क्रांतिकारी और कल्याणकारी कुल 72 मुद्दे उठाए और 07 बार उन्हें लोकसभा के पटल पर बोलने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्हें लोकसभा की तीन प्रमुख समितियों का सदस्य बनाया गया जिसमें प्राक्कलन समिति, कोल तथा माइंस की सलाहकार समिति और उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण संबंधी समिति शामिल है।

श्री जयसवाल ने बताया कि हजारीबाग जिला मुख्यालय में सांसद सेवा कार्यालय के माध्यम से लोकसभा क्षेत्र में सेवा कार्यों और विकास को नई गती दी। सदन में शत प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करने के साथ ही लगातार लोकसभा क्षेत्र के दौरे और सांसद सेवा कार्यालय के माध्यम से जनता से सीधे जुड़कर उनकी समस्याओं से रूबरू हुए और यथासंभव समस्याओं के निराकरण का भरसक प्रयास किया।

उक्त बातों की जानकारी खुद हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने रविवार को रामगढ़ शहर के चैंबर ऑफ कॉमर्स भवन सभागार में एक विशेष प्रेस-वार्ता का आयोजन कर जानकारी देते हुए कहा कि हजारीबाग के सांसद सेवा कार्यालय के तर्ज़ पर जल्द ही रामगढ़ जिले की जनता के सुलभता के लिए रामगढ़ शहर में भी सांसद सेवा कार्यालय खोला जाएगा। आमजनमानस के इन मुद्दों को सांसद में हमारे द्वारा उठाया गया जिसमें प्रमुख हजारीबाग को प्रमुख शहरों से रेलवे के माध्यम से जोड़ने का मुद्दा उठाया। 377 के तहत झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठियों का मुद्दा, डिमांड एवं ग्रांट के तहत शिक्षा नीति में सुधार की मांग, शुक्रवार की छुट्टी, राइट्स ऑफ एजुकेशन की माइनोरिटी के तहत नीति में सुधार की चर्चा, इंडियन स्कूल ऑफ माइंस की मांग प्रमुख रही। इनके जवाब में मंत्रालय की ओर से कार्यवाही का आश्वाशन मिला।

इसी तरह विपक्ष के हंगामे के बीच शुरू हुआ शीतकालीन सत्र में मुख्य कैंसर हॉस्पिटल, हजारीबाग में नए एम्स, हवाई अड्डे, हाईवे पर ब्लैक स्पॉट के सुधार की मांग, तत्कालीन आलू के मूल्यों में वृद्धि की समस्या आदि रहे। श्री जयसवाल ने आगे बताया कि रामगढ़ में इंडियन स्कूल ऑफ़ माइंस (ISM) खोले जाने की मांग शिक्षा मंत्री जी के समक्ष रखा। कांग्रेस वही है जिसने महाराणा प्रताप की जगह अकबर को महान बताया, शिवाजी की जगह औरंगजेब को महान बताया। इतिहास में जो सम्मान छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप और भगत सिंह को मिलना था। काग्रेस ने वह सम्मान बाबर, अकबर, औरंगजेब को दे दिया। उन देशद्रोहियों के नामों के आगे महान जोड़ दिया।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के विभिन्न सड़क संबंधित विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई।

मौके पर रामगढ़ भाजपा जिला अध्यक्ष प्रवीण मेहता, रामगढ़ सांसद प्रतिनिधि राजीव जायसवाल, भाजपा नेता राजू चतुर्वेदी, विजय जायसवाल, रंजीत सिन्हा, इलारानी पाठक, राजू कुशवाहा, रंजीत पांडेय, पुरुषोत्तम पांडेय, मनोज गिरी, सूर्यवंश श्रीवास्तव, नरेश कुमार, बबलू साव, सतीश मोहन मिश्रा, सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहें।

बरनवाल सेवा समिति हजारीबाग ने आयोजित किया परिवार मिलन समारोह

बिभा संवाददाता

हजारीबाग। स्थानीय रिंग्स एंड रोजेज के प्रांगण में बरनवाल मोदी सेवा समिति हजारीबाग के द्वारा परिवार मिलन समारोह का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि हजारीबाग सदर के विधायक प्रदीप प्रसाद एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में झारखंड प्रदेश बरनवाल वैश्य महासभा के अध्यक्ष लखन लाल बरनवाल मौजूद रहे। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर झारखंड प्रदेश बरनवाल वैश्य महासभा की महिला अध्यक्ष सुषमा सुमन, उपाध्यक्ष परमेश्वर मोदी, महामंत्री इंद्रजीत लाल एवं कोषाध्यक्ष सुबोध कुमार, राष्ट्रीय मोदी बरनवाल विकास संघ से प्रेमलाल मोदी एवं लखन लाल बरनवाल एवं झारखंड मोदी बरनवाल विकास संघ से संतोष रंजन, समाजसेवी सुरेंद्र भाई मोदी, बरकट्ठा से शिव शंकर मोदी, बिशुनगढ़ से बालगोविंद बरनवाल सहित बाहर से कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत सर्वप्रथम आदि पुरुष महाराजा अहिवरन को दीप प्रज्वलित एवं माल्यार्पित कर किया गया। सर्वप्रथम समिति के अध्यक्ष सूरज कुमार ने सभी अतिथियों का स्वागत स्थानीय समिति के लोगों के द्वारा मोमेंटो एवं शॉल देकर किया गया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए समाज के उत्थान के लिए सभी वक्ताओं ने अपने अपने विचार रखे। सभी लोगों ने कहा कि समाज अब हर क्षेत्र में आगे है किंतु अभी भी राजनीति के क्षेत्र में काफी पीछे है। इसमें मंथन करने की जरूरत है कि आखिर ऐसा क्यों। लखन लाल बरनवाल ने कहा कि बरनवाल जाति अभी भी ओबीसी की सूची में नहीं है लेकिन आशा है कि 2025 में इसे ओबीसी की सूची में शामिल कर लिया जाएगा। समिति के द्वारा हजारीबाग में विख्यात डॉक्टर भानु शंकर, डॉ संगीता रानी, डॉ अमर कुमार, डॉ रजनी कुमारी, डॉ क्षितिज आनंद, डॉ रौशन कुमार, डॉ सिम्पी कुमारी, केरेडारी के सीओ रामरतन कुमार बरनवाल, कार्यपालक अभियंता रंजीत कुमार बरनवाल सहित कई गणमान्य लोगों को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का मंच संचालन स्वयं सूरज कुमार, बीडी बरनवाल एवं विनोद कुमार ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु समिति के सचिव अशोक कुमार विज्ञान, कोषाध्यक्ष लक्ष्मी नारायण, बिपिन मोदी आदि की अहम भूमिका रही।

बसंत महोत्सव में 1500 से भी अधिक महिलाओं ने किया मंगल पाठ

हजारीबाग/आसनसोल। पश्चिम बंगाल के आसनसोल में आयोजित श्री रानी सती दादी के 40वें बसंत महोत्सव का शानदार आगाज हुआ आपको बताते चले कि रविवार को दूसरे दिन 1500 से भी अधिक महिलाओं ने मंगल पाठ किया !जिसमें विभिन्न राज्यों के दादी भक्त शामिल है ! पाठ वाचिका मंजू शर्मा उपस्थित हुई ! वही हजारीबाग की बात करे तो हजारीबाग से कई दादी भक्त शामिल हुए है महोत्सव का आगाज एक अद्भुत और आध्यात्मिक यात्रा के साथ हुआ। गूंजते भक्ति गीत पूरे वातावरण को भक्तिमय बना रहे थे यह यात्रा न केवल आस्था का प्रतीक रही बल्कि सांस्कृतिक एकता का संदेश भी दिया इसके साथ ही, राष्ट्रीय स्तर के विख्यात कलाकार भक्तों के बीच अपनी भक्ति संगीत प्रस्तुतियों से समां बांधेंगे उनके भजनों पर दादी भक्त झूमते नजर आएंगे। 40 वर्षों से आयोजित हो रहे इस बसंत महोत्सव ने भक्तों के लिए एक ऐसा मंच प्रदान किया है, जहां वे अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं को जीवंत रखते हुए भक्ति का सच्चा आनंद ले सकें।

नव निर्मित श्री श्याम मंदिर रामगढ़ के सदस्यों से मिले मनीष जायसवाल

बिभा संवाददाता

रामगढ़। रामगढ़ नेहरू रोड स्थित नव निर्मित श्री श्याम मंदिर में आज सांसद मनीष जायसवाल ने रामगढ़ दौरें के कर्म में कमेटी के पदाधिकारियों से मुलाकात की। उन्होंने सभी दृष्टियों के साथ मंदिर के निर्माण संबंधी जानकारी ली। सांसद श्री जयसवाल ने मंदिर के लिए जो भी सहयोग चाहिए उसे यथासंभव पूरा करने का भरोसा दिलाया। श्री श्याम सेवा ट्रस्ट समिति ने उन्हें प्राण प्रतिष्ठा मे आने का निमंत्रण दिया। मंदिर के निर्माण कार्य को देखकर उन्होंने प्रशंसा की व पदाधिकारियों से काफी देर चर्चा की। श्री श्याम सेवा समिति ट्रस्ट के अध्यक्ष सांवर कुमार अग्रवाल, सचिव अनिल कुमार गोयल, उपाध्यक्ष राजेश अग्रवाल, भवन निर्माण मंत्री रमेश कुमार अग्रवाल, कमल बगड़िया, सुशील गर्ग, शिव कुमार अग्रवाल, दीपक मंगलम, शंभू अग्रवाल, ओम प्रकाश अग्रवाल, श्याम परशुरामपुरिया, बाल किशन जलान, इंद्र अग्रवाल, मनोज बंसल, प्रकाश पटवारी, मुन्ना अग्रवाल, मनोज अग्रवाल, राजू चतुर्वेदी, राजीव जायसवाल, रॉबिन गुप्ता, अनमोल सिंह, राजीव जायसवाल, आदित्य सहित अनेक श्याम प्रेमी उपस्थित थे।

स्वामी विवेकानंद के 162वीं जयंती हर्षोल्लास एवं रक्तदान के साथ संपन्न

बिभा संवाददाता

हजारीबाग। राष्ट्रीय युवा दिवस-2025, स्वामी विवेकानंद जी की 162वीं जयंती श्री रामकृष्ण सारदा आश्रम परिसर बड़े धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का आरंभ प्रातः 8:00 बजे प्रभात फेरी के साथ किया गया। जिसमें श्री रामकृष्ण सारदा आश्रम (विवेकानंद सेंट्रल स्कूल) के एनसीसी कैडेट, छात्र-छात्राएँ, श्री रामकृष्ण सारदा आश्रम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय महाविद्यालय तथा एस. बी. एम. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षु विद्यार्थी और शिक्षकगण शामिल थे। प्रभात फेरी का नेतृत्व विद्यालय की प्राचार्या डॉ. मौसुमी मैती, संस्था के सचिव डॉ. समाप्ति पॉल तथा प्रबंधन समिति के सदस्य डॉ. दीपांकर मैती के द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि निर्मल जैन, अध्यक्ष, वोलंटरी ब्लड डोनर्स एसोशियसन तथा डॉ. नीरज कुमार ब्लड बैंक इन्चार्ज शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज, हजारीबाग के द्वारा स्वामी विवेकानंद के चरणों में पुष्प अर्पित कर दीप प्रज्वलन कर किया गया। स्वागत भाषण में विद्यालय की प्राचार्या डॉ. मौसमी मैती ने युवाओं को स्वामी जी के आदर्शों को आत्मसात करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस पावन अवसर पर संस्था के द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन वोलंटरी ब्लड डोनर्स एसोशियसन एवं शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज, हजारीबाग के संयुक्त तत्वाधान में किया गया।

स्वामी धर्मबंधु में राष्ट्रीय युवा महोत्सव का लाइव प्रसारण

हजारीबाग। स्वामी धर्मबंधु कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन, हरहद, मुकुंदगंज, हजारीबाग में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई एक के तहत स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर भारत सरकार,युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग राष्ट्रीय युवा महोत्सव का लाइव प्रसारण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सारिका कुमारी ने स्वामी विवेकानंद जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित किया। इस दौरान उप प्राचार्या फौजिया खानम एवं समस्त प्राध्यापक गण तथा स्वयंसेवकों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लाइव संवादों को सुना एवं आत्मसात् किया।

विवेकानंद जयंती पर ग्राहक पंचायत ने मनाया समर्पण दिवस, मैत्री क्रिकेट मैच का आयोजन

बिभा संवाददाता

हजारीबाग। विवेकानंद जयंती पर रविवार को अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत की जिला इकाई ने समर्पण दिवस के रुप में मनाते हुए स्वामी विवेकानंद के विचारों को आत्मसात करते हुए भारत मां को परम वैभवं पर ले जाने का संकल्प लिया गया । बतौर मुख्य अतिथि प्रसिद्ध होमियोपैथिक चिकित्सक और संस्कार भारती के पदाधिकारी डा. प्रहलाद ने स्वामी विवेकानंद के चित्र पर पुष्पार्चन कर समर्पण दिवस समारोह प्रारंभ किया। संबोधित करते हुए स्वामी विवेकानंद और युवा भारत की परिकल्पना बताया। कहा कि देश के युवा को आज सबसे ज्यादा युवा बनने और दिखने की जरुरत है। युवा दिवस पर समर्पण के नाते प्रत्येक दिन एक घंटा राष्ट्र कार्य और स्वयं के स्वास्थ्य पर खर्च करने का संकल्प लेने की आवश्यकता है। समर्पण भाव से मां भारती की सेवा के लिए तन मन और धन लगाना होगा। वहीं वरिष्ठ सदस्य कुणाल कुमार सिंह ने कहा कि युवा भारत आने वाले दिनों में युवाओं के माध्यम से भारत मां को उसका खोया हुआ गौरव वापस दिलाएंगा। सदस्य मो. फैजल ने ग्राहक पंचायत और युवा दिवस की जानकारी देते हुए बताया कि हम सब को जागरुक बनना होगा। ग्राहक पंचायत की जानकारी देते हुए प्रांत सह सचिव अरविंद राणा ने कहा कि ग्राहक पंचायत देश भर में 1974 -75 से कार्य कर रही है। ग्राहक जागरण के माध्यम से राष्ट्र जागरण कर रही है। हम सब इसके सदस्य है और इस नाते संगठन को सुचारु रुप से चलाने के लिए निधि की आवश्यकता होती है। इसलिए युवा दिवस को ग्राहक पंचायत समर्पण दिवस के रुप में मनाती है। सदस्य और संगठन के शुभचिंतक संगठन के प्रति अपना गुप्त दान निधि का समर्पण करते है। धन्यवाद ज्ञापन सचिन खंडेलवाल ने किया। समर्पण कार्यक्रम में अभिषेक पांडेय, मो. एजाज, मो. फैज, महेश रविदास, रवि कुमार, अनुज सिन्हा, आशीष कुमार साव, शीतेश तिवारी, फैज अनवर, प्रदीप कुमार सिन्हा, अनिल कुमार, पुरुषोत्तम कुमार, सूरज कुमार, सागर कुमार, संजय विश्वकर्मा, मो. फैजल, रुपांशू सहित अन्य शामिल थे।

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा युवा प्रकोष्ठ ने मनाया स्वामी विवेकानंद की जयंती

बिभा संवाददाता

हजारीबाग। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा जिला इकाई हजारीबाग के द्वारा दुर्गा प्रसाद ट्रस्ट हॉल में युवा प्रकोष्ठ एवं समाज कल्याण प्रकोष्ठ की ओर से आयोजित युवा दिवस भव्यता पूर्वक मनाया गया. जैसा हम लोग जानते हैं विश्व युवा दिवस स्वामी विवेकानंद जयंती के उपलक्ष में मनाया जाता है, उसी क्रम में आज श्री अरुण प्रभात सिंहा, जिला अध्यक्ष के नेतृत्व में युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष नवीन सिन्हा की अगुवाई में महोत्सव 2025 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉक्टर सीबी सहाय प्रदेश अध्यक्ष थे एवं विशिष्ट अतिथि प्रदेश कार्यकारिणी से कोषाध्यक्ष सुशील सिंहा एवं संदीप सिंहा थे। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 11:00 सर्वप्रथम अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के झंडा को फहराते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की गई, उसके बाद सभागार में प्रवेश द्वार पर सभी आगंतुकों का टीका लगाकर स्वागत किया गया एवं अंग वस्त्र पहनकर सभी को यथोचित स्थान पर बैठने की व्यवस्था की गई, उसके उपरांत जिला महिला प्रकोष्ठ के द्वारा श्री चित्रगुप्त भगवान की आरती हुई तथा मुख्य अतिथि एवं मंचासीन पदाधिकारी के द्वारा दीप प्रजवलन कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की गई. कार्यक्रम का मंच संचालन जिला महामंत्री शशिकांत के द्वारा बहुत ही सुचारू रूप से किया गया. कार्यक्रम में सुश्री अन्वेशा ने स्वागत गान गाकर सभी का स्वागत किया। सभी मंचासीन पदाधिकारीयो का स्वागत मंच पर अंगवस्त्र, माला एवं कार्यक्रम संबंधित सूची देकर किया गया. कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण वरिष्ठ उपाध्यक्ष प्रमोद रंजन के द्वारा स्वामी विवेकानंद पर लिखी एक अद्भुत कविता पाठ रहा जिसे वहां उपस्थित सभी लोगों ने बहुत सराहा. युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष नवीन सिन्हा ने सभी का स्वागत किया एवं युवा प्रकोष्ठ एवं समाज कल्याण प्रकोष्ठ के द्वारा किए गए पूर्व में कार्यों का विवरण तथा आने वाले समय में कार्यक्रमों की रूपरेखा सभी के समक्ष रखा। उसके बाद सुलेखा सिंहा के द्वारा स्वामी विवेकानंद पर एक लोकगीत प्रस्तुत किया गया जो उनके मधुर स्वर से अत्यंत मनमोहक था एवं उपस्थित सभी लोगों ने तालियां बजाकर उनका स्वागत किया। आदर्श वैभव द्वारा प्रस्तुत गीत कौशल्या दशरथ के नंदन गीत गाकर समारोह को चार चांद लगाया लोगों ने तालिया बजकर प्रोत्साहित किया। उसके उपरांत स्वामी विवेकानंद जी के जीवन पर प्रकाश डालने हेतु अनूप कुमार सिंहा आए तथा उन्होंने स्वामी जी के जीवन की विशिष्ट बातें तथा उनके गुण रहस्य हम सभी को बताकर स्वामी जी के ज्ञान को फैलाया। तदोउपरांत शिवदयाल नगर निवासी सोनिया सिंहा के द्वारा स्वामी जी के व्यक्तित्व से संबंधित एक मधुर गीत प्रस्तुत किया गया. कार्यक्रम में विशिष्ट रूप से छठ तलब स्थित श्री चित्रगुप्त भगवान के मंदिर के निर्माण कार्य में सम्मिलित मुख्य रूप से मंदिर निर्माण कमेटी के सदस्यों का स्वागत एवं सम्मान किया गया जिसमें मुख्य रूप से उपस्थित थे राज प्रकाश, अनुपम सिंहा, शुभम प्रकाश, अनुज सिंहा, दीप प्रकाश उपस्थित थे जिनका सम्मान शोल पहनाकर, पुष्प देकर एवं युवा महोत्सव से संबंधित कार्यक्रमों की एक प्रतिलिपि प्रदान करके की गई। इसी क्रम में समाज कल्याण प्रकोष्ठ के महामंत्री आशीष सिंहा का सम्मान प्रदेश अध्यक्ष के द्वारा किया गया क्योंकि आशीष की कायस्थ समाज के प्रति समर्पण भावना अद्वितीय है तथा वह हर समय कायस्तो की सहायता के लिए हरदम तैयार खड़ा रहता है। संरक्षक मंडल के ओर से डॉक्टर नवेंदु शंकर एवं प्रोफेसर अरविंद सहाय के द्वारा सभी को संबोधित किया गया तथा अपने विचारों से अवगत कराया। उसके बाद श्रीमती जय श्री के द्वारा एक भजन की प्रस्तुति रखी गई. इसी क्रम में प्रदेश कमेटी की ओर से जिला कमेटी के पांच सक्रिय सदस्यों को भी तलवार देकर सम्मानित किया गया, जिनके नाम है युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष नवीन सिन्हा, जिला कोषाध्यक्ष गौतम सिंहा, समाज कल्याण प्रकोष्ठ के अध्यक्ष रूपेश बिहारी लाला, कर्मचारी अधिकारी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रबल प्रताप नारायण एवं युवा प्रकोष्ठ के हेमंत कुमार सिंहा।

संक्षिप्त खबरें

आद्रा मंडल में विकास कार्यों के कारण आद्रा आसनसोल मेमू ट्रेन रद्द

कोलकाता(बिभा) : आद्रा मंडल में विकासात्मक कार्यों के मद्देनजर निम्नलिखित ट्रेनों को निम्नानुसार विनियमित किया जाएगा। ट्रेनों का रद्दीकरणः 68045/68046 आद्रा-आसनसोल-आद्रा मेमू 13.01.2025 और 18.01.2025 को रद्द रहेगी। 68090/68089 आद्रा-मिदनापुर-आद्रा मेमू 13.01.2025, 17.01.2025 और 19.01.2025 को रद्द रहेगी। 68108/68111 बांकुरा-मासग्राम-बांकुरा मेमू स्पेशल 18.01.2025 को रद्द रहेगी। 18601 टाटानगर-हटिया एक्सप्रेस, 17.01.2025 को शुरू होने वाली यात्रा परिवर्तित मार्ग चांडिल-गुंडा बिहार-मुरी के रास्ते चलेगी। 63594/63593 आसनसोल-पुरुलिया-आसनसोल मेमू, 16.01.2025 और 19.01.2025 को शुरू होने वाली यात्रा आद्रा से थोड़ी देर में समाप्त हो जाएगी। 68056/68060 टाटानगर-आसनसोल-बाराभूम मेमू, 13.01.2025 से शुरू होने वाली यात्रा, 16.01.2025 से 18.01.2025 तक की यात्रा आद्रा से शॉर्ट-टर्मिनेट/शॉर्ट ओरिजिनेट की जाएगी।

टाटानगर-बरकाकाना पैसेंजर ट्रेन 15 को रद्द

रांची(बिभा) : चक्रधरपुर मंडल के अंतर्गत विकास कार्यों के लिए ब्लॉक लिया जाएगा अतः निम्नांकित ट्रेनें प्रभावित रहेंगी। ट्रेन संख्या 08151/08152 टाटानगर-बरकाकाना-टाटानगर पैसेंजर, यात्रा प्रारंभ दिनांक 15/01/2025 को रद्द रहेगी । ट्रेन संख्या 18428 आनंद विहार टर्मिनल-पुरी एक्सप्रेस, यात्रा प्रारंभ दिनांक 12/01/2025 को अपने निर्धारित प्रस्थान समय के स्थान पर 3 घंटे 15 मिनट विलम्ब से आनंद विहार टर्मिनल से प्रस्थान करेगी। ट्रेन संख्या 22892 रांची-हावड़ा इंटरसिटी एक्सप्रेस, यात्रा प्रारंभ दिनांक 16/01/2025 को अपने निर्धारित मार्ग कोटशीला-पुरुलिया-टाटानगर-खड़गपुर के स्थान पर परिवर्तित मार्ग कोटशीला-राजाबेडा-जमुनियाटाँड़-आद्रा-मेदिनीपुर-खड़गपुर होकर चलेगी।

मालदा टाउन-सुरत साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेन का ठहराव उधना तक

रांची(बिभा) : पश्चिम रेलवे के अंतर्गत सुरत स्टेशन पर विकास कार्य की वजह से रांची रेल मंडल से होकर परिचालित निम्नांकित ट्रेनों का आंशिक समापन / आंशिक प्रारंभ होगा । ट्रेन संख्या 13425 मालदा टाउन-सुरत साप्ताहिक एक्सप्रेस (वाया-रांची) का यात्रा प्रारंभ दिनांक 11/01/2025 से 01/03/2025 तक सूरत स्टेशन के स्थान पर उधना स्टेशन पर आंशिक समापन होगा। ट्रेन संख्या 13426 सूरत-मालदा टाउन साप्ताहिक एक्सप्रेस (वाया-रांची) का यात्रा प्रारंभ दिनांक 13/01/2025 से 03/03/2025 तक सुरत स्टेशन के स्थान पर उधना स्टेशन से आंशिक प्रारम्भ होगा।

हटिया - झारसुगुड़ा एक्सप्रेस ट्रेन आज रद्द रहेगी

रांची(बिभा) : रांची रेल मंडल के अंतर्गत कानारोवां - टाटी - परबाटोनिया रेलखण्ड पर विकास कार्य हेतु ब्लॉक लिया जाएगा । जिसके कारण ट्रेनें रद्द रहेंगी। ट्रेन संख्या 18175/18176 हटिया - झारसुगुड़ा - हटिया एक्सप्रेस, यात्रा प्रारंभ दिनाँक 13/01/2025 एवं 14/01/2025 को रद्द रहेगी। ट्रेन संख्या 58659 हटिया - राउरकेला पैसेंजर, यात्रा प्रारंभ दिनाँक 13/01/2025 एवं 14/01/2025 को रद्द रहेगी। ट्रेन संख्या 58660 राउरकेला - हटिया पैसेंजर, यात्रा प्रारंभ दिनाँक 14/01/2025 एवं 15/01/2025 को रद्द रहेगी।

यौन शोषण के आरोपी गया जेल

चान्हो(बिभा)। थाना क्षेत्र के ग्राम मेलानी की रहने वाली 17 वर्षीय नाबालिग लड़की के साथ शादी का प्रलोभन देकर यौन शोषण का मामला प्रकाश में आया हैं। इसके खिलाफ चांन्हो थाने में एक प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी, जिसपर करवाई करते हुए पुलिस उसी गांव के रहने वाले 20 वर्षीय शाहीद अंसारी को गिरफ्तार कर चान्हो पुलिस ने रविवार जेल भेज दिया। पीड़िता के पिता ने 17 दिसंबर 2024 को चान्हो थाना में नामजद आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कराया था।

सर्पदंश से युवक गंभीर, सदर अस्पताल में भर्ती

लोहरदगा(बिभा): सदर थाना क्षेत्र के स्टेशन टोली में सर्पदंश से एक युवक गंभीर हो गया है जिसे इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी अनुसार रेलवे साइडिंग के समीप पुटूस की झाड़ी में छुप कर बैठे सांप ने युवक को काट लिया जिससे स्टेशन टोली निवासी मन्ना उरांव के 35 वर्षीय पुत्र दिनेश उरांव गंभीर हो गया है।

देश का सबसे बड़ा धार्मिक मेला महाकुंभ आज से शुरू

नई दिल्ली : कल से प्रयागराज में महाकुंभ की शुरूआत हो रही है। यह हिंदू धर्म का सबसे बड़ा धार्मिक और आध्यात्मिक पर्व है। महाकुंभ का आयोजन हर 12 वर्षों बाद किया जाता है। इस महापर्व में देश-विदेश से लाखों-करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु शामिल होने के लिए आते हैं। इसके साथ ही प्रयागराज के महाकुंभ में साधु-संतों का भी जमावड़ा लगता है। इस मेले में साधु-संतों का स्वागत बेहद भव्य तरीके से किया जाता है। इस दौरान संगम में स्नान-दान का विशेष महत्व होता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, संगम में डुबकी लगाने से विशेष फलों की प्राप्ति होती है और सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। इसके अलावा यह भी मान्यता है कि त्रिवेणी संगम में स्नान करने से सारे पाप खत्म हो जाते हैं और आत्मा शुद्ध हो जाती है। वहीं, महाकुंभ में विशेष पूजा-अर्चना, यज्ञ सहित अन्य धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं। ऐसे में आइए जानते हैं महाकुंभ के पहले दिन स्नान के लिए सबसे शुभ मुहूर्त कब से कब तक रहेगा।

स्नान-दान का शुभ मुहूर्त

पौष पूर्णिमा यानी 13 जनवरी 2025 से महाकुंभ का आगाज होने जा रहा है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, महाकुंभ पर शुभ मुहूर्त में स्नान-दान करने से आपको महापुण्य की प्राप्ति हो सकती है। इस दिन आप अभिजीत मुहूर्त में भी स्नान कर सकते हैं। वैदिक पंचांग के अनुसार, इस दिन स्नान के लिए 13 जनवरी को सुबह 5 बजकर 27 मिनट से लेकर सुबह 6 बजकर 21 मिनट तक का समय सबसे शुभ माना गया है। ज्योतिष की मानें तो पूर्णिमा तिथि पर दान आप किसी भी समय कर सकते हैं।

इस दिन अभिजीत मुहूर्त

दोपहर 12 बजकर 9 मिनट से 12 बजकर 51 मिनट तक रहेगा। ब्रह्म मुहूर्त सुबह 5 बजकर 27 मिनट से लेकर 6 बजकर 21 मिनट तक रहेगा। विजय मुहूर्त दोपहर 2 बजकर 15 मिनट से लेकर 2 बजकर 57 मिनट तक रहेगा। गोधूलि मुहूर्त-शाम 5 बजकर 42 से लेकर 6 बजकर 09 तक रहेगा और निशिता मुहूर्त रात 12 बजकर 03 से लेकर 12 बजकर 57 तक रहेगा।

स्नान के नियम

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, महाकुंभ के दौरान संगम में स्नान करना बहुत पुण्य का काम माना जाता है। लेकिन इस दौरान कुछ खास नियमों का पालन करना चाहिए। मान्यता है कि इन नियमों का पालन करने से सारी मनोकामना पूरी होती है। संगम में स्नान के दौरान भक्त साबुन या शैंपू का इस्तेमाल न करें, क्योंकि माना जाता है कि ऐसा करने से पवित्र जल अशुद्ध होता है। इसके साथ ही श्रद्धा और मन की शुद्धता के साथ स्नान करें और नकारात्मक विचारों को दूर रखना चाहिए। स्नान करने से पहले सूर्यदेव को हाथ जोड़कर प्रणाम करें और डुबकी लगाने के दौरान भी भगवान का ध्यान करें।

महाकुंभ पर 144 साल बनेगा ये शुभ संयोग

इस बार का महाकुंभ बहुत खास है क्योंकि ज्योतिष की मानें तो 144 साल बाद ऐसा संयोग बन रहा है। समुद्र मंथन के समय सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति की जो स्थिति थी, वही इस बार भी बन रही है। इसके साथ ही इस बार रवि योग और भद्रावास योग भी बन रहे हैं। इन योगों में पूजा-पाठ करना बहुत शुभ माना जाता है।

जिले के मांडू थाना क्षेत्र में पुलिस व उग्रवादी के बिच 30 राउंड चली थी गोलियां

मुठभेड़ स्थल पर पहुंच रामगढ़ एसपी ने सिंघम रुप में सर्च आपरेशन चलाया

प्रकाश पटवारी

रामगढ़: हजारीबाग जिला पुलिस के कार्रवाई में रामगढ़ जिला अंतर्गत कुजू ओपी क्षेत्र के मुरपा में चरही पुलिस के साथ एनकाउंटर में शनिवार को एक अपराधी कि मौत हो गई । बताया गया कि चरही थाना प्रभारी गौतम कुमार एवं मुकेश कुमार ने एनकाउंटर को अंजाम दिया है। घटना के बाद रामगढ़ एसपी, हजारीबाग एसपी एवं कई थानों के प्रभारी पुलिस बल के साथ घटनास्थल पहुंचे। जहां रामगढ़ एसपी अजय कुमार ने सिंधम रुप में सर्च आपरेशन चलाया।

बताया जाता है कि चरही थाना प्रभारी को गुप्त सूचना मिली थी कि कुख्यात अपराधी राहुल तुरी उर्फ आकाश तुरी अपने दोस्त के साथ मुरपा क्षेत्र में बाइक से किसी घटना को अंजाम देने पहुंचा है। जिसके बाद थाना प्रभारी सब इंस्पेक्टर के साथ मुरपा जगल वाले क्षेत्र में पहुंचे। पुलिस को देखने के बाद राहुल भागने लगा। इस क्रम में उसने पुलिस पर गोली चलायी। जिसके बाद आत्मरक्षा में पुलिस ने फायरिंग की। जिसमें राहुल तुरी को गोली लगी। जबकि उसका साथी पुलिस की गिरफ्त में आ गया। जब पुलिस वहां पहुंची तो देखा कि राहुल तुरी मृत पड़ा है। जिसके उपरांत इसकी जानकारी हजारीबाग और रामगढ़ एसपी को दी गई।

एनकाउंटर के बाद घटनास्थल पहुंचे रामगढ़ एसपी अजय कुमार ने कहा कि पुलिस इनकाउंटर में मारे गये अपराधी राहुल तुरी पर 25 से अधिक मामले दर्ज थे। एसपी ने कहा कि अपराधी व्यवसायियों को फोन कर उन्हें परेशान करता रहता था। साथ ही वह इस पूरे क्षेत्र में अपना दबदबा कायम करना चाहता था। एसपी ने कहा कि हम वैसे युवाओं से जो किसी भी गिरोह में शामिल हैं उनसे गिरोह को छोड़ देने की अपील करते हैं। कहा कि युवाओं को समझना चाहिए कि गलत कार्यों का गलत अंजाम होता है इसलिए वे अपराध के रास्ते को छोड़ दें।

झामुमो हजारीबाग विस्थापित नेता संतोष सिंह कि जिम्मेदारी ली थी आकाश तुरी ने।बताया जाता है कि रामगढ़ जिले के कुजू ओपी के मुरपा में पुलिस इनकाउंटर में मारा गया कुख्यात अपराधी राहुल तुरी की रांची पुलिस को भी विभिन्न मामलों में तलाश थी। राहुल तुरी ने टीएसपीसी से अलग होकर आलोक नाम से गिरोह बनाया था और रांची जिला के बुढमू और खेलारी में उसने कई आपराधिक घटनाओं को अंजाम दिया था।

पत्रकार प्रेम तिवारी की माँ सावित्री देवी का निधन, कई लोगों ने जताया शोक

खूँटी(बिभा)। शहर के कर्रा रोड निवासी धर्मपरायण 94 वर्षीय सावित्री देवी का रविवार की सुबह निधन हो गया। स्व सावित्री देवी पत्रकार प्रेम तिवारी एवं वरिष्ठ अधिवक्ता रामानंद तिवारी की माँ थी। रविवार की सुबह जब उनके निधन की सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी मिलने लगी तो लोग उनके घर तक पहुंचने लगे। तथा उनके घर जाकर अंतिम दर्शन किए। तदोपरांत सभी सगे सम्बन्धी इष्ट मित्रों व स्नेहीजनों के साथ रविवार को शवयात्रा निकालकर स्थानीय तजना मुक्तिधाम में उनका अंतिम संस्कार किया गया। मुखाग्नि छोटे बेटे प्रेम तिवारी ने दी। इस दाह संस्कार में पूर्व विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा, डॉ निर्मल सिंह, संजय भगत, शेखर चौधरी, संदीप तिवारी समेत काफी संख्या में शहर के लोग शामिल हुए। इनके निधन पर शहर के गणमान्य लोगों समेत पत्रकारों ने शोक व्यक्त किया है। इधर, खूँटी प्रेस क्लब के सभी साथियों ने भी शोक व्यक्त किया है।

कंबल ही नहीं बल्कि हर योजना जनता तक देना जनप्रतिनिधियों का हो कर्तव्य : अरुण साबू

खूँटी(बिभा)। जिले में शीतलहरी चलने के साथ कड़ाके की ठंड पड़ने लगी है। जिसके कारण लोग या तो अलाव का सहारा ले रहे हैं नहीं तो गर्म कपड़े का उपयोग कर रहे हैं। वहीं मुरहू प्रखण्ड अंतर्गत मुरहू पंचायत में अभावग्रस्त लोगों को मुरहु उप प्रमुख अरुण साबू ने घर-घर जाकर सरकार के द्वारा दिया गया कम्बल जनहित में सुयोग्य जरुरतमंदों को प्रदान करने में लगे हुए हैं। वहीं रविवार को सुयोग्य लोगों को चिन्हित कर घर-घर जाकर कंबल का वितरण किया। उन्होंने बताया कि कई ऐसे जरूरतमंद लोग भी हैं जो पैदल चलकर आने में असमर्थ हैं। उनके बिस्तर तक जाकर कंबल दिया गया। वहीं कई लाभुक भावुक हुए और आशिर्वाद दिया । उन्होंने कहा कि आज तक कोई भी जनप्रतिनिधि कभी नहीं आये जो इतने दिल से मन से लोगो की सेवा करते हैं। अरुण साबू का कहना है जनता चुन कर अपने सेवा के लिए भेजी है और उनके लिए जरूरत के अनुसार उनका कार्य करना हमारा दायित्व है। सरकार का कंबल ही नहीं बल्कि हर योजना जनता तक देना मेरा कर्तव्य है ।

उपायुक्त ने वृद्धा आश्रम में रह रहे बुजूर्गों के बीच गर्म कपड़े, शॉल, दवाई, चप्पल, फल और व्हीलचेयर का किया वितरण

बिभा संवाददाता

देवघर : उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी विशाल सागर ने देवघर प्रखण्ड के चाँदडीह गाँव में स्थित वृद्धा आश्रम का निरीक्षण कर वहाँ रहने वाले बुजूर्गों व मुखबुधिर बच्चों से मुलाकात कर उन्हें मिलने वाली सुविधाओं से अवगत हुए। साथ ही वृद्धा आश्रम में मिलने वाली स्वास्थ्य सुविधा, रसोईघर, स्नानघर एवं

शौचालयों की साफ-सफाई की वस्तुस्थिति से अवगत हुए।

इसके अलावा उपायुक्त श्री विशाल सागर ने संबंधित अधिकारियों व आश्रम के संचालक को निदेशित किया कि वृद्धा आश्रम में रहे बुजुर्गों के देखाभाल के साथ-साथ उनकी नियमित स्वास्थ्य जांच कराते रहें एवं यह कोशिश है कि यहां रहने वाले सभी बुजुर्गों व बच्चों को सभी आवश्यक मुलभूत सुविधाएं ससमय उपलब्ध हों एवं उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। आगे उपायुक्त ने ठंड को देखते हुए आश्रम में रह रहे बुजूर्गों के बीच गर्म कपड़े, शॉल, ठंड से बचाव हेतु दवाई, चप्पल व फल का वितरण कर भोजन कराया गया एवं आश्रम संचालक को निर्देशित किया गया कि जिन सामग्रियों की आवश्यकता हो उसकी सूची उपलब्ध कराया जाय, ताकि आश्रम को हर संभव मदद की जा सके।

सात से अधिक गाँवों में कुल 49 एकड़ अफीम फसल रौंदा गया

खूँटी(बिभा)। जिले में लगायी जा रही अवैध अफीम खेती के विरुद्ध पुलिस प्रशासन द्वारा विनष्टिकरण अभियान चलाने के क्रम में रविवार को विभिन्न थाना क्षेत्रों में विनष्टीकरण किया गया । जिसमें मारंगहादा थाना क्षेत्र के बेलगरा, बुरुडीह, बाड़ेडीह आदि गाँव में करीब 10 एकड़ भूमि पर लगे अफीम फसल नष्ट किया गया। जबकि अड़की थाना क्षेत्र के ग्राम उलिहातु एवं आसपास के क्षेत्र में लगभग 10 एकड़, सयको थाना के ग्राम-हितडीह में 14 एकड़ के लगभग, मुरहू थाना क्षेत्र के ग्राम तोनेर में लगभग 10 एकड़, खूँटी थाना क्षेत्र के ग्राम चितरामु में 05 एकड़ लगभग भूमि पर विनष्टीकरण किया गया। इस प्रकार जिले में रविवार को लगभग 49 एकड़ में लगे अवैध अफीम के खेती को विनष्ट किया गया।

महाकुंभ के दौरान यात्रियों की सुविधाओं पर पूरा फोकसः अश्विनी वैष्णव

5 लेवल पर सीसीटीवी कैमरा के माध्यम से मॉनिटरिंग, रेलवे बोर्ड में वार रूम : अश्विनी वैष्णव

12 भारतीय भाषाओं में भी होगा अनाउंसमेंट

नई दिल्ली : केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने महाकुंभ 2025 के परिप्रेक्ष्य में प्रयागराज क्षेत्र के 9 रेलवे स्टेशनों पर सीसीटीवी कैमरा के माध्यम से रेलवे बोर्ड द्वारा की जाने वाली मॉनिटरिंग व्यवस्था की शुरूआत की। उन्होंने 22 भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में यात्रियों को सूचना देने के लिए तैयार की गई बुकलेट को भी जारी किया। साथ ही प्रयागराज एवं उसके आसपास के सभी स्टेशनों पर 12 भारतीय भाषाओं में होने वाली उद्घोषणा के शुरू होने की घोषणा की । इस मौके पर पत्रकारों से बातचीत करते हुए अश्विनी वैष्णव ने कहा कि महाकुंभ भारतीय संस्कृति का महा आयोजन है। संगम में स्नान के लिए प्रयागराज जाने वाले यात्रियों के लिए प्रयागराज क्षेत्र के सभी 9 स्टेशनों पर व्यापक व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि पूरे महाकुंभ अवधि में भारतीय रेल द्वारा 10000 नियमित गाड़ियों के अलावा 3100 से अधिक विशेष गाड़ियों का परिचालन किया जाएगा। स्पेशल गाड़ियों की संख्या पिछले कुंभ की तुलना में साढ़े चार गुना होगी। उन्होंने कहा कि 1186 सीसीटीवी कैमरा के माध्यम से सभी स्टेशनों पर नजर रखी जाएगी। सभी स्टेशनों पर विशेष नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है और इसकी निगरानी रेलवे बोर्ड स्तर पर वार रूप से की जाएगी जहां राउंड द क्लॉक सीनियर अधिकारियों की ड्यूटी लगाई गई है। उन्होंने कहा कि महाकुंभ के लिए आने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए भारतीय रेल द्वारा श्री गंगा जी पुल के निर्माण के साथ-साथ बनारस प्रयागराज लाइन की डबलिंग और फाफामऊ जंघई लाइन की डबलिंग की गई है। यात्रियों के लिए डायरेक्शन वाइस कलर कोडेड होल्डिंग एरिया बनाया गया है और अलग-अलग दिशा के लिए अलग-अलग रंग के टिकट जारी करने की भी व्यवस्था की गई है। उन्होंने कहा कि डिजिटल महाकुंभ के लिए बार कोडेड यूटीएस प्रणाली भी लॉन्च की गई है।

प्रयागराज मेला क्षेत्र के सभी 9 स्टेशनों पर भारतीय रेल द्वारा लगभग 1200 सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं जिसे प्राप्त फीड की मॉनिटरिंग और विश्लेषण की पांच स्तरीय व्यवस्था भारतीय रेल द्वारा की गई है। हर प्लेटफार्म की गतिविधि की मॉनिटरिंग मेला परिसर में स्थापित कंट्रोल रूम से किया जाएगा। स्टेशन पर स्थापित कंट्रोल रूम से स्टेशन के सभी प्लेटफार्म और सकुर्लेटिंग एरिया की मॉनिटरिंग की जाएगी। मंडल स्तर पर भी राउंड द क्लॉक मॉनिटरिंग हेतु अधिकारियों की टीम रहेगी ऐसे ही व्यवस्था जोनल स्तर पर भी की गई है। रेलवे बोर्ड में स्थापित वार रूम में ऑपरेटिंग, कमर्शियल, सिग्नल एवं टेलीकम्युनिकेशन, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और रेल सुरक्षा बल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के तैनाती रहेगी जो महाकुंभ के लिए संचालित सभी गाड़ियों और प्रयाग क्षेत्र के स्टेशनों की मॉनिटरिंग करेगी। स्टेशनों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर यात्री सुविधाओं के सुचारू संचालन और आवश्यकतानुसार विस्तार के संबंध में निर्णय लिया जा सकेगा।

विदित हो कि प्रयागराज में गंगा, यमुना एवं सरस्वती नदी के संगम पर 13 जनवरी से 26 फरवरी तक आयोजित हो रहा महाकुम्भ-2025 अपनी दिव्यता एवं भव्यता से सबको आकर्षित कर रहा है। 12 वर्ष के समय-अंतराल पर आयोजित होने वाले प्रयाग महाकुम्भ में इस वर्ष 40 करोड़ से अधिक लोगों के संगम में स्नान करने की उम्मीद है जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप के देशों के लोग तो शामिल होंगे ही, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान, मलेशिया, इंडोनेशिया, कनाडा, मेक्सिको सहित 100 से अधिक देशों के श्रद्धालुओं की भी भागीदारी रहेगी।

महाकुम्भ 2025 को सफल तरीके से आयोजित करने में भारतीय रेल की महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

यात्रियों की सेवा एवं सुविधा के लिए प्रयाग क्षेत्र के 9 रेलवे स्टेशनों को विशेष तौर पर तैयार किया गया है। इन स्टेशनों में प्रयागराज जंक्शन, नैनी जंक्शन, प्रयागराज छिवकी, सूबेदारगंज, प्रयागराज संगम, प्रयाग जंक्शन, फाफामऊ जंक्शन, प्रयागराज रामबाग स्टेशन और झूंसी स्टेशन शामिल हैं।यात्रियों की सुविधा के लिए प्रयागराज जंक्शन एवं दूसरे स्टेशनों पर 12 भाषाओं में यात्री सूचनाओं की उद्घोषणा की व्यवस्था की गई है। इस अवसर पर उत्तर मध्य रेल द्वारा 22 भारतीय भाषाओं और अंग्रेजी में बुकलेट तैयार किए गए हैं, जिसमें यात्रियों से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं प्रकाशित की गई हैं। अनरिजर्व्ड क्लास के यात्रियों के वेटिंग एरिया की कलर कोडिंग की गई है, जिसमें यात्रियों को दिशावार बैठने की व्यवस्था रहेगी। प्रयागराज जंक्शन पर लाल कलर कोडिंग वाले होल्डिंग एरिया में लखनऊ और वाराणसी दिशा के यात्री रहेंगे। नीला रंग के कलर कोडिंग वाले होल्डिंग एरिया में दीनदयाल उपाध्याय एवं मिजार्पुर की ओर जाने वाले यात्री रहेंगे। पीले रंग की कलर कोडिंग वाले होल्डिंग एरिया में मानिकपुर सतना और झांसी दिशा की ओर जाने वाले यात्री रहेंगे। हरे रंग की कलर कोडिंग वाले एरिया में कानपुर दिशा की ओर जाने वाले यात्री रहेंगे।

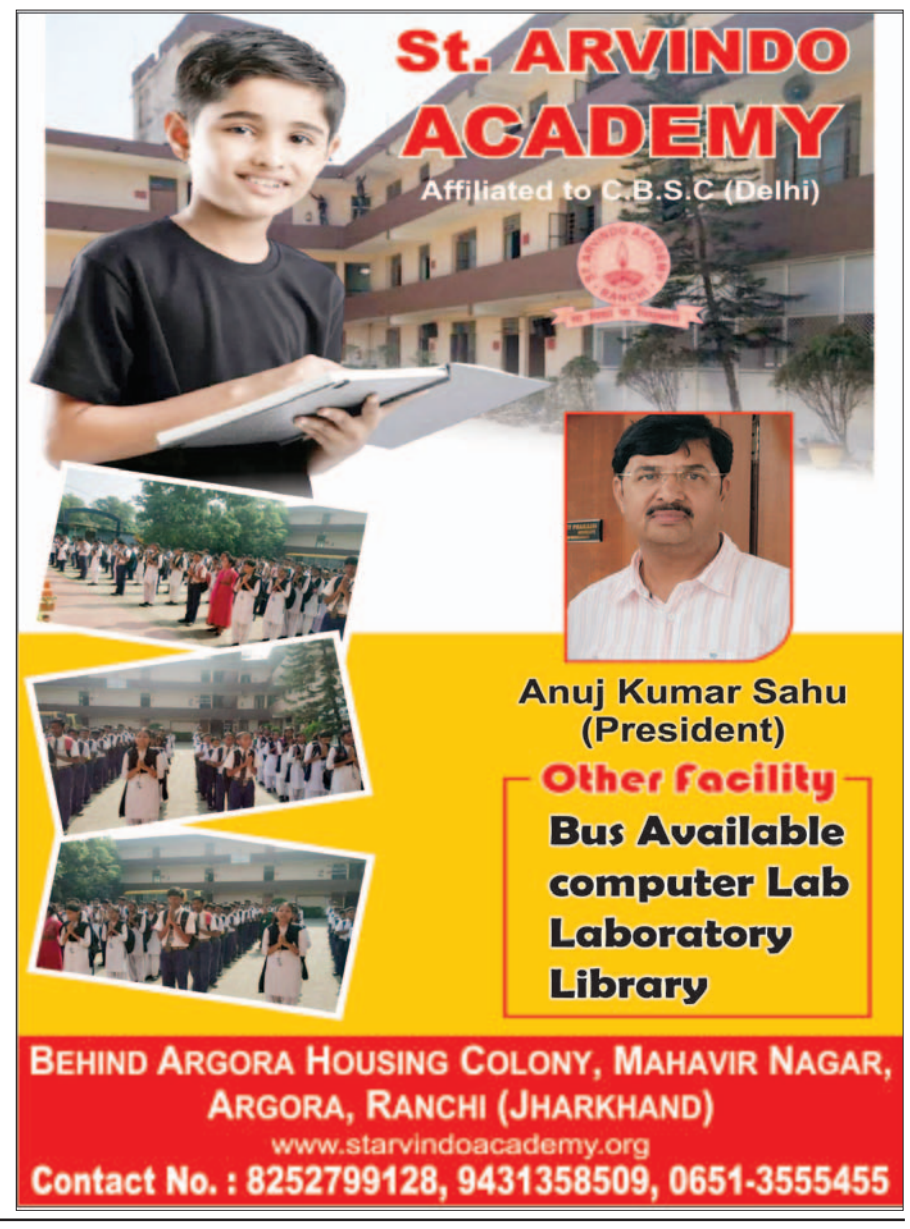

बिहान भारत की ओर से स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक संजय कुमार के लिए वाटिका अपार्टमेंट,भोसले गली,हरिहर सिंह रोड,बरियातू,रांची-834009(झारखंड) दूरभाषः 7761060594, 7004767601 से प्रकाशित तथा शिवा साई पब्लिकेशन प्रा.लि., काठीटांड रातु, नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप, रातु, रांची - 835222 झारखंड से मुद्रित। समस्त दीवानी विवाद, न्यायोचित कार्रवाई एवं दंडित परिवादो के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। संपादक कविता साहू *पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार । Email-bihanbharat@gmail.com, bihanbharatranchinews@gmail.com